

साहित्यिक पुष्प

कक्षा
10

साहित्यिक पुष्प



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

कक्षा 10

साहित्यिक पुष्प

दर्जों 10

(टीं भाषा सिन्धी)



माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

दरसी किताबु तैयार कंडड कमेटी

किताबु : ‘साहित्यिक पुष्ट’ दर्जो डुहों (टीं भाषा सिन्धी)

संयोजक : डाक्टर हासो दादलाणी, विभागाध्यक्ष- सिन्धी विभाग
सप्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

सम्पादक मंडल :

डाक्टर मीना आसवाणी, व्याख्याता- सिन्धी
सप्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

डाक्टर परमेश्वरी पमनाणी, व्याख्याता- सिन्धी
सप्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

श्रीमती शान्ता भिरियाणी, प्रधानाचार्या-
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, आदर्श नगर, अजमेर

श्रीमती कान्ता मथुराणी, प्रधानाचार्या-
राजकीय सिन्धी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारी कुई, अजमेर

श्रीमती भगवन्ती चोटराणी, व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, डूमाड़ा, अजमेर

सम्पादक मंडल किताब में खंयल नसुर ऐं नज्म जूं रचनाऊं गडु करण में कापीराइट जो पूरो-पूरो ध्यान रखियो आहे, जेकडुहिं उन्हनि रचनाउनि में का फेर-बदल वारी ग्राल्हि थी हुजे त उन लाई समूरो सम्पादक मंडल माफी तलबगार आहे।

ब अखर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर पारा 2017 में 10 दर्जे लाइ “साहित्यिक पुष्ट” उनवान सां किताब छपायो वियो आहे।

हिन किताब में जिनि लेखकनि ऐं कवियुनि जूं रचनाऊं शामिल कयूं वेयूं आहिनि, संपादक मंडल उन्हनि जो थोराइतो आहे।

ही किताबु शागिर्दनि लाइ फ़ाइदेमंद साबित थींदो। किताब में बारनि जे तइलीमी क़द अनुसार कहाणियूं, मज़मून, एकांकी, बैत, नई कविता, ग़ज़ल वगैरह सिन्फुनि खे जाइ डिनी वेर्इ आहे।

संपादक मंडल पारा किताब खे सुहिणे नमूने संपादित करे ठाहिण जी कोशिश कई वेर्इ आहे।

मां, सम्पादक मंडल- डाक्टर मीना आसवाणी, डाक्टर परमेश्वरी पमनाणी, श्रीमती शान्ता भिरियाणी, श्रीमती कान्ता मथुराणी ऐं श्रीमती भगवन्ती चोटराणी जो निहायत शुक्रगुज़ार आहियां, जिनि हिन किताब खे संपादित करण में पूरी महिनत ऐं लगन सां सहिकारु ऐं साथ डिनो।

डाक्टर हासो दादलाणी

संयोजक

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

बी-32

सिन्धी पाठ्यक्रम समिति

(5.12.2016)

क्र.सं.	नाम	संस्था का नाम
1.	डॉ. कमला गोकलानी	सेवानिवृत्
2.	डॉ. परमेश्वरी पमनानी	व्याख्याता सम्प्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर-305001
3.	श्री आतु टहिलयानी	व्याख्याता शहीद अमित भारद्वाज राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, माणक चौक, जयपुर-302001
4.	डॉ. सविता खुराना	व्याख्याता राजकीय सिन्धी उच्च माध्यमिक विद्यालय, खारी कुई, अजमेर-305001
5.	श्रीमती लता ठारवानी	वरिष्ठ अध्यापक हरी सुंदर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, आशा गंज, अजमेर-305001

कक्षा - 10

सिन्धी (तृतीय भाषा)

समय- 3:15 घण्टे

अंक- 80

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	05
रचना	20
व्याकरण	15
पाठ्य पुस्तक	40

अपठित बोध

अपठित गद्यांश (150-200 शब्दों में) तीन प्रश्न-	<u>05</u>
1. शीर्षक	01
2. गद्यांश से एक प्रश्न	02
3. सारांश	02

रचना

1. निबन्ध (200 शब्दों में)	10
2. प्रार्थना पत्र, पत्र	05
3. रिपोर्टज	05

व्याकरण

1. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण	05
2. वचन, लिंग	05
3. मुहावरे / लोकोक्ति (कोई पांच) अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग करना	05

पाठ्य पुस्तक

पुस्तक का नाम- **साहित्यिक पुष्प**

(सिन्धी नसुर एं नज्म)

संदर्भ पुस्तक-

सिन्धी व्याकरण- लेखक : गंगाराम ईसराणी

राजस्थान सिन्धी अकादमी जयपुर द्वारा प्रकाशित

गद्य खण्ड- 15 अध्याय : कहानी, निबंध, जीवनी, एकांकी

20

अंक विभाजन-

- | | |
|---|------------------|
| 1. गद्य में से ससंदर्भ व्याख्या (दो में से एक) | $1 \times 4 = 4$ |
| 2. गद्य में से लघुत्तरात्मक प्रश्न (चार में से कोई तीन) | $3 \times 2 = 6$ |
| 3. गद्य में से निबन्धात्मक प्रश्न (दो में से कोई एक) | $1 \times 6 = 6$ |
| 4. लेखक परिचय (दो में से एक) | $1 \times 4 = 4$ |

पद्य खण्ड- 15 कविताएं

अंक विभाजन- 20

- | | |
|---|------------------|
| 1. पद्य में से ससंदर्भ व्याख्या (दो में से एक) | $1 \times 4 = 4$ |
| 2. पद्य में से लघुत्तरात्मक प्रश्न (चार में से कोई तीन) | $3 \times 2 = 6$ |
| 3. पद्य में से निबन्धात्मक प्रश्न (दो में से एक) | $1 \times 6 = 6$ |
| 4. कवि परिचय / कविता का सारांश (दो में से एक) | $1 \times 4 = 4$ |

नोट- पाठ्य पुस्तक निर्मित करते समय यह बात ध्यान रखनी आवश्यक है कि वर्तमान प्रचलित पाठ्यक्रम का लगभग 50% भाग पाठ्यक्रम में समाहित हो। लगभग 25% जानकारी राजस्थान के संदर्भ में एवं लगभग 25% जानकारी भारत के संदर्भ में होनी चाहिये।

पाठ्यक्रम को पूर्णतः परिवर्तित नहीं किया जाये। आवश्यकतानुसार राजस्थान और भारत के बीर एवं महापुरुषों की जीवनियां एवं उनके योगदान का उल्लेख भी पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए।



फहिरस्त - नसुर

नं. विषय	सिन्फ़	लेखक	सुफ़रो
1. पढ़िजे कीअं	मज़मून	परमानन्द मेवाराम	01
2. टी पार्टी	एकांकी	मंघाराम मलकाणी	05
3. पराए मास में काती	कहाणी	नारायणदास मेवाराम भग्भाणी	15
4. आलमी शख्स्यत : गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर	जीवनी	डाक्टर दयाल 'आशा'	20
5. उमरु मारुई	नैदिङ्गो नाटक्	गोवर्धन महबूबाणी 'भारती'	
			24
6. मुल्हु	कहाणी	हरी हिमथाणी	31
7. श्रीमती सुंदरी उत्तमचंदाणी	जीवनी	सम्पादक मंडल	38
8. यादगिरियुनि जा काफ़िला	मज़मून	मोती 'प्रकाश'	44
9. बुढा आश्रम	कहाणी	कला 'प्रकाश'	47
10. सफ़र जो साथी	सफ़रनामो	जेठो लालवाणी	53
11. सफ़रु	कहाणी	ईश्वर चन्द्र	58
12. सिंधी रीतियूं रस्मूं	मज़मून	सम्पादक मंडल	66
13. सिंधी शूरवीरनि जो इतिहासु	मज़मून	ईसरसिंह बेदी	70
14. सफ़ेद हंस	लोक कहाणी	मनोहर निहालाणी	73
15. जहिङ्गो अन्नु, तहिङ्गो मनु	कहाणी	कन्हैया अगनाणी	76



फहिरिस्त - नज़्म

नं. विषय	कवि	सुपहो
1. शाह जा बैत	शाहु अब्दुल लतीफ़	80
2. जो ई आहियां, सो ई आहियां	सचल 'सरमस्तु'	82
3. मानुख देहि	चैनराइ बचोमल 'सामी'	84
4. शाइरी	मिर्ज़ा कलीचु बेग	87
5. कुदरत वारा	किशनचंद तीर्थदासु खत्री 'बेवसि'	90
6. अझ्ट जो आवाज़	हूंदराज 'दुखायल'	92
7. सभ जाइ सज्जु	पदमश्री प्रोफ़ेसर राम पंजवाणी	94
8. महिनत	खीअलदास 'फ़गनी'	96
9. गुलनि जी टोकरी	हरी 'दिलगीर'	98
10. सूर त साणु इअं जीअं हाणे	नारायण 'श्याम'	100
11. गीतनि जा मोती	गोवर्धन 'भारती'	102
12. गृजल	श्री अर्जुन 'शाद'	104
13. माण्हू मुहिंजे मुल्क जा	कृष्ण 'राही'	106
14. ए दाता	दोलण 'राही'	109
15. पैसे एं रुपए जी गुफ्तगू	शालिनी 'सागर'	111



ਪਦਿੜੇ ਕੀਅਂ?

— ਪਰਮਾਨਨਦ ਮੇਵਾਰਾਮ

(1856 ਈ. — 1938 ਈ.)

ਲੇਖਕ ਪਰਿਚਿਤ-

ਸ਼੍ਰੀ ਪਰਮਾਨਨਦ ਮੇਵਾਰਾਮ ਜੋ ਜਨਮੁ ਹੈਂਦਰਾਬਾਦ ਸਿੰਧੁ ਮੈਂ ਥਿਯੋ ਹੋ। ਹੂ ਸਿੰਧੀ ਭੋਲੀਅ ਮੈਂ ਮਾਹਿਰੁ ਹੋ ਏਂ ਸਿੰਧੀ ਭੋਲੀਅ ਜੀ ਖੂਬ ਸ਼ੋਵਾ ਕਈ ਅਥਸਿ। “ਜੋਤਿ” ਅਖੜਾਰ ਜ਼ਰੀਏ ਬਿ ਸਿੰਧੀ ਭੋਲੀਅ ਜੀ ਖਾਸੁ ਸ਼ੋਵਾ ਕਈ ਅਥਸਿ। ਸਾਂਦਸਿ ਇਕਾਰਤ ਬਿਲਕੁਲੁ ਸਲੀਸੁ, ਵਣਾਂਡੁ ਏਂ ਜੇਬਦਾਰ ਆਹੇ। ਹਿਨਜਾ ਲਿਖਿਯਲ ਕਿਤਾਬ ਆਹਿਨਿ- “ਗੁਲ ਫੁਲ”, “ਦਿਲ ਬਹਾਰੁ”, “ਕ੍ਰਿਸ਼ ਜੀ ਪੈਰਵੀ” ਕਾਗੈਰਾਹ। ਹਿਨ ਸਿੰਧੀ ਅੰਗੇਜ਼ੀ, ਅੰਗੇਜ਼ੀ ਸਿੰਧੀ ਡਿਕਾਸਾਨਰਿਧੁ ਕਫਿਧ੍ਯੁ ਆਹਿਨਿ।

ਹਿਨ ਲੇਖ ਮੈਂ ਇਹਾ ਜਾਣ ਡਿੱਨੀ ਕੇਈ ਆਹੇ ਤ ਪਢਣ ਵਕਿਤ ਕਿਨਿ ਕਿਨਿ ਗੁਲਿਹਿਯੁਨਿ ਜੋ ਧਾਨੁ ਕਰਣੁ ਘੁਰਿਜੇ।

ਬੇਕਨਿ ਅੰਗੇਜ਼ੀ ਮੁਨਸਿਬ ਜੋ ਚਵਣੁ ਆਹੇ ਤ “ਇਨ੍ਹੀਅ ਸੁਰਾਦ ਸਾਂ ਨ ਪਢੋ ਤ ਕਹਿੰਜੋ ਖੰਡਨੁ ਕਿਖਿਆਂ ਯਾ ਰਦੁਕਦੁ ਡਿਯਾਂਸਿ ਯਾ ਜੇਕੀ ਪਢੋ, ਸੋ ਹਫ਼਼ਤੇ ਵਿਸਹੀ ਵਜੇ ਤ ਪੂਰੇ ਆਹੇ ਯਾ ਇਨ੍ਹੀਅ ਲਾਇ ਨ ਡਿੱਸਾਂ ਤ ਮੰਜ਼ਿਸਿ ਕਹਿੰਡੀ ਤਮ੍ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਏਂ ਤਕਰੀਰ ਡਿੱਨਲ ਆਹੇ, ਪਰ ਪਢਣ ਸਾਂ ਤੋਰਣੁ ਤਕਣੁ ਏਂ ਕੀਚਾਰੁ ਕਰਣੁ ਸਿਖੁ। ਕਿਨਿ ਕਿਤਾਬਨਿ ਜੋ ਚਸ਼ਕੋ ਵਠਿਜੇ, ਕੇ ਗੀਹਿਜਨਿ ਏਂ ਕੇ ਥੋਰਾ ਚੁਕਾਡੇ ਹਜ਼ਮੁ ਕਜਨਿ; ਧਾਨੇ ਤ ਕਿਨਿ ਕਿਤਾਬਨਿ ਜਾ ਟੁਕਰ ਟੁਕਰ ਪਦਿੜਨਿ, ਪਰ ਮਹਿਨਤ, ਕਸ਼ਾਲੇ ਏਂ ਧਾਨ ਸਾਂ।” ਹਾਣੇ ਇਨ੍ਹੀਅ ਖਾਂ ਮਥੇ ਕਿਥੀਂ ਛਾ ਚਇਜੇ? ਜੇਕੀ ਚਕਿਣੋ ਆਹੇ, ਸੋ ਸਭੁ ਹਿਨ ਆਲਿਮ ਚੰਡੀ ਡਿੱਨੋ ਆਹੇ।

ਧਾਨ ਸਾਂ ਪਢੁ। ਪਦਿੜਣੋ ਹੁਜੇ, ਅਭਿਆਸੁ ਕਰਿਣੋ ਹੁਜੇ, ਮਤਿਲਬੁ ਤ ਕਹਿੰਡੋ ਬਿ ਕਮੁ ਪੂਰੀਅ ਤਰਹ ਕਰਿਣੀ ਆਹੇ ਤ ਅਵਾਲਿ ਜੁਝੂਰੀ ਆਹੇ ਤ ਚਿਤੁ ਲਾਇਜੇ। ਹਿਕ ਗੁਲਿਹਿ ਤੇ ਹਿਕ ਮਨੋ ਥੀ ਧਾਨ ਧਰਣੁ। ਇਹਾ ਹਿਕ ਆਦਤ ਆਹੇ ਏਂ ਜੀਅਂ ਕਿਥੁੰ ਆਦਤੁਂ, ਤੀਅਂ ਹੀਅ ਆਦਤ ਬਿ ਜਫ਼ਾਕਸ਼ੀਅ ਏਂ ਤਦਮ ਸਾਂ ਪਿਰਾਇਣੀ ਆਹੇ ਯਾ ਥਿਕੋ ਏਕਾਗਰੁ ਯਾ ਕਿ ਚਿਤੋ। ਪੂਰੇ ਪੂਰੇ ਧਾਨ ਲਾਇਣ ਜੀ ਆਦਤ ਇਨ੍ਹੀਅ ਖੇ ਚਇਜੇ, ਜੋ ਬਾਫਰਹਤ ਹਿਕ ਗੁਲਿਹਿ ਤਾਂ ਧਾਨ ਲਾਹੇ, ਬੀਅ ਭੁਅਂਹੁਂ ਫੇਰਣ ਏਂ ਵਰੀ ਬਿ ਜੇਕੋ ਪਦਿੜਧੋ ਯਾ ਕੀਚਾਰਿਯਾਸੀਂ ਪਿਏ, ਤੱਹਿਂ ਭੁਅਂਹੁਂ ਝਾਟਿ ਮੁਤਵਜੁ ਥਿਧਣੁ।

हाणे अहिडीअ परि ध्यानु लाइणु कीअं सिखिजे? जिते मज़मून दिलपसंद ऐं वणंडड हूंदो, उते त डुखियाई थींदी कान, अज़खुदि उन में ध्यानु लगी वेंदो; पर जेकडुहिं अग्निलो पढ़ण ते हिरियलु न हूंदो या मज़मून अहिडो दिलचस्प्य या मज़ेवारु न हूंदो त पोइ ख्याल खे पहिंजे वसि रखण में मुश्किलाति आडो ईदी।

तंहिं लाइ ही टिप यादि रखणु खपनि : रोजु पढ़ण लाइ को वक्तु ठाहे छडिजे। अलिबति साग्रिए वक्ति साग्री ग्रालिह पढ़िबी त विचाईदी पर जल्दु हेर पइजी वेंदी ऐं पोइ मज़ो पियो ईदो। इहा टेक भजिजे न, हलाईदी अचिजे। इन्हीअ में फ़ाइदो आहे। सृष्टीअ में जेडुहं निहारि, ओडुहं ओट-मोट जो कान्नु डिसण में ईदो। वठो मुंदू। डिसो उहे कीअं न फेरो खाई मुकररु वक्तनि ते थियूं अचनि। गाह उभिरनि था, पचनि था, सुकी वजनि था, वरी पहिंजे मियाद ते मोटी ज़मनि था। बैत जेके पूरे वज़न ऐं काफ़िये ते बीठल आहिनि, कडो कडे में मिलियलु आहे, तिनि जा सुर वरी वरी जे कन ते पवनि था त दिलि ते ज़मियो कंठि थियो वजनि। रोशनीअ जे लहरुनि जे लर्जिश जी जा वज़नाइती ओट मोट आहे, सा ई गुलनि खे रडु थी डिए ऐं धरतीअ तोडे हवा तोडे तारनि भरिए उभ जी सूंहं सोभिया ज़ाहिरु थी करे। आबशारु जो सिज जे किरणनि जो झलिको थो डिए, तंहिं में बि इहो ई हिसाबु रखियलु आहे। उते वज़नाइती लहरी लर्जिश आहे, जा रैनक थी डिएसि। चडा ख़वाहि बुरा कम, से बि अज़ीन किस्म, उन्हनि जे बारि बारि करण सां रूहु सुहिणो या बदिजेबो थो थिए। कीअं जो नेकी तोडे बदी इहे बि आदतूं ई आहिनि; तहिडीअ रीति रोजु ब रोजु वरी वरी ध्यानु लगाए पढ़ण सां ई दिमागी महिनत फलदायकु थींदी।

पढ़ण महिल ध्यान खे अहिडीअ परि हिक हैंधि खुपाइ जो जेको पढ़ीं वेठो, तंहिं में समूरो महू थी वजीं, ब कलाक पिनिकियूं खाई तीर तकिले जे पढ़ण खां रोजु फ़कति अधु कलाकु हिक धडे ख्याल सां पढ़णु सदिबार वधीक आहे।

पढ़िजे त तरतीब सां। तरतीब बिना पढ़ण करे वडो मूँझारो थो जागे। पढ़ण महिल इहो समाउ रखंदो करि त दिलि ते कहिडा कहिडा असर वेठा। इहा निर्ख पर्ख पिणु रखिजे त कहिडियूं ग्रालियूं शकी, कहिडियूं कियासी ऐं कहिडियूं फ़र्जी या अनूमानी आहिनि। अहिडीअ रीति ध्यानु लगाइण में वडी मदद थी मिले।

एतिरे जतन खां पोइ बि डिसिजे त ख्यालु हिक हैंधि नथो टिके त फ़िलहालु उहो किताबु खणी बंदि कजे ऐं अहिडो मज़मून खणिजे, जीहिं डे चितु वरे। बियो ही दस्तूर आहे त पढ़दे टिप वठिजनि। कलमु या पौसल हथ में हूंदी त वीचार शक्तीअ खे तरगीब मिलंदी। पढ़णु सजायो उहो जाणणु खपे, जीहिं मां दिमागी तरकी थिए ऐं दिमागी तरकी थींदी ई तडुहिं, जडुहिं पढ़ण मां गैर करण लाइ कुम्हु

लाभु मिलंदो एं पढण जो इहो ई भाडो कारिगरु ज्ञाणणु खपे, जो दिलि सां हंडायलु एं ध्यानु लाए पॅहिंजो कयलु हूंदो।

डिक्षनरी बि साणु हुअणु खपे। इएं न जो को डुखियो हर्फु आयो त छडे डिजे। पढण जी मुराद आहे त असांजो दिमागु खुले त पोइ सुस्तीअ या गेवारीअ विचां डुखियनि हर्फनि समुद्दान बिना लाभु पिराए न सधिबो। कहिंडो बि आलिमु हूंदो त डिक्षनरीअ बिना कीन सरंदसि। अहिंडो रफीकु जो मूँझारे महिल मुश्किलु आसानु करे, सो हरिदमु हकियो हुअणु खपे।

पढिजे कर्हिं मुराद सां। मुराद अगियां रखी पढण खे लगी वजिजे, जेसीं उहा सरअंजामु थिए। पोइ उहो मतालअ कयलु मज़मून कियाम विसारण जो न आहे। पर जेको किताबु हथि चद्धियो या मुंहं आडो आयो, सो झाटि पढी पूरो कयो, सो जहिंडो पढियो, तहिंडो न। ज्ञाणु का गुलिह हिक कन खां आई एं ब्रिए मां हली वर्दी। अकुलु, वीचार शक्ती एं ब्रियूं दिमागी ताकतूं मिलियल आहिनि इन्हीअ लाइ। उन्हनि खे इस्तैमाल में आणे जेतिरे कदुरि वधण लाइ गुंजाइश हुजेनि, ओतिरो वधणु डिजेनि। जो इन्हनि ताकतुनि खे कतवि नथो लाए, सो उन्हीअ मिसलि चहबो, जंहिंखे का वडी रकम मिले खाकिशोरी करण लाइ, सो माठि करे उहो वजी धूडि में द्वेष रखो। ब्रियो त मुराद सां पढण मां इहो बि फ़ाइदो आहे, जो वक्त तोडे दिमागी पोरहिं जी शिकायत नथी थिए। झाटि सुधि पझियो वजे त किताब में के अहिंडा मज़मून बि आहिनि, जे फ़िजूल आहिनि, से छडे, मतिलब जे गुलिह खे हथि कजे। इन्हीअ तरह हुनरु अचियो वजे त छा पढिजे एं छा न।

नवां लफ़्ज़ :

मुनसिब = लेखकु	मुराद = इच्छा, चाहिना	रदुकदु = रंडक	विश्वासु
तोरणु तकणु = सवली जांच करणु	आलिम = विद्वान	चितु लाइजे = ध्यान कजे	
जफ़ाकशी = घणी महिनत	पिराइणु = हासिलु करणु	एकागरु = हिक चितो	
बा फ़रहत = आराम सां	मुतवजु = ध्यानु डियणु	टिप = खासु गुलिह, नोट्स	
मुकररु = सागिए, निश्चित	मझ्याद = पूरे टाईम ते आबशारु = झरणो, मर्थाईअ तां पाणी किरणु		
बदिजेबो = खराबु	पिनिकियूं = उबासियूं	तीर तकले = बेवजह	सदिबार = कारिगरु
समाउ = ख्यालु	तीर तकले = बेवजह	हंडायलु = दिल सां लग्नु	
गेवारीअ = लापरवाहीअ	रफीकु = दोस्त, हमराही, मित्र	हकियो = गडु	
मुतालअ = पढी यादि करिणो	कियाम = कडहिं बि	खाकिशोरी = फ़िजूल खऱ्ची	

❖ અભ્યાસ ❖

સુવાલુ 1. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ ડિયો :-

- (1) પદ્ધણ જે તરીકે બાબતિ બેકનિ જા કહિડા વીચાર આહિનિ?
- (2) પદ્ધણ વક્તુ છા છા કરણુ ખપે?
- (3) તરતીબ સાં પદ્ધણ સાં કહિડા સુઠા ફાઇદા આહિનિ?
- (4) ડિક્ષાનરી ગડુ રખી પદ્ધણ મેં કહિડા ઇજાફો થીંદો?
- (5) પદ્ધણ જી કા મુરાદ હુઅણ જરૂરી આહે, સમુજ્ઞાયો।

સુવાલુ 2. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ હિક સિટ મેં ડિયો :-

- (1) અંગ્રેજી મુનસિફ જો નાલો છા હો?
- (2) પદ્ધણ કીઅં ઘુરિજે?
- (3) ડુખિયનિ લફ્જનિ જી માના લાઇ છા ડિસિબો આહે?
- (4) જેકર ખ્યાલુ હિક હેંથિ નથો ટિકે ત પોઇ છા કરણુ ઘુરિજે?

સુવાલુ 3. હેઠિયનિ લફ્જનિ ખે જુમિલનિ મેં કમુ આણિયો :-

બદિજેબો, આબશારુ, તરગીબ, મુતવિજુ, મુસનિફ

સુવાલુ 4. હેઠિયનિ લફ્જનિ જા જિદ લિખો :-

રદુકદુ, જફાકશી, એકાગરુ, દિલિપસંદ, બદિજેબો

સુવાલુ 5. હેઠિયનિ હવાલનિ જો મતિલબુ સમુજ્ઞાયો :-

- (1) “કિનિ કિતાબનિ જો ચશકો વઠિજે, કે ગીહિજનિ એં કે થોરો ચબાડે હજ્મુ કજનિ।”
- (2) “સૃષ્ટીઅ મેં જેડુંહં નિહારિ, ઓડુંહં ઓટ મોટ જો કાનૂન ડિસણ મેં ઈંદો।”



टी पार्टी

– मंधाराम मलकाणी

(1896 ई. – 1980 ई.)

लेखक परिचय-

मंधाराम उथाराम मलकाणी सिंधीअ में नाटक नवीस, अदाकार एं हिदायतकार जे हैंसियत सां मशहूर आहे। हिन सज्जन सिंधीअ में नंदनि नाटकनि जो बुनियादु विधो। हू पूरा पंज डुहाका सिंधी रंगमंच सां जुडियलु रहियो। हू सिंधी नाटकनि में हकीकृत निगारीअ जो बानी लेखियो वजे थो। संदसि पंगती नाटक सिंधी जगृत में काफी पसंद पिया आहिनि। हुन सिंधीअ में नंदा नाटक लिखण एं पेशी करण खे डाढो हिमथायो। विरहाडे बैदि हिन्दुस्तान में अदबी क्लास शुरू करे सिंधी लेखकनि खे हिमथाइण जो पिणि बेजोडु कमु कयाई। हुन जा अटिकल ब्रु डज़न किताब छपिजी चुका आहिनि। संदसि मुख्यु नाटकनि जा मजमूआ आहिनि : पंज नंदा नाटक (1937), पंगती पर्दा (1938), जीवन चहचिटा (1957), पापु कीन पुजु (1962) एं खुडऱ्खबीता पिया टिमकनि (1963) वगैरह। संदनि ब्रियूं मुख्यु रचनाऊ आहिनि : अदबी उसूल (1957), पछिमी यात्रा (1963), सिंधी नसुर जी तारीख (1968), साहित्यकारनि जूं स्मृतियूं (1979) वगैरह। सिंधी नसुर जी तारीख ते खेसि साहित्य अकादमी अवार्ड (1969) मिली चुको आहे। हिक तर्जुमान जे रूप में पिणि मलकाणी साहिबु काम्याबु रहियो आहे। टैगोर जे गार्डनर जो तर्जुमो, प्रीति जा गीत (1940) एं गीतांजली (1942) इन जा सुहिणा मिसाल आहिनि।

हिन नंदे नाटक में लेखक मज़ाकी नूअ में डेखारियो आहे त अज्ञोका शहिरी माणहू कीअं पहिंजो कूडो शानु बरिकरारु रखण लाइ हिक ब्रिए खे दोखो डियनि था। पाण खे पहिंजी औक़ात खां वधीक वडो माणहू कोठाइण में पहिंजो शानु समुझनि था। पर कूडु त कूडु आहे। सचु त साम्हू ईदो ई। इन करे कूडी वडाई डेखारण मां कुळ्हु बि कीन वरंदो।

किरदार

रुक्मणी : वडी भेण, इंदिरा : विचीं भेण, लछिमी : नंदी भेण
दीना : पाडेसिरियाणी, शीरीं : इंदिरा जी साहेडी

(बंबईअ जे कोलाबा क्वाटर में हिक सस्ती मसुवाड़ी जाइ में जहिड़ो तहिड़ो कोचु, ऐं टिपायूं पेयूं आहिनि ऐं हिक पासे झूनो बाजो रखियो आहे। विच में हिक पुराणी मैज़ ते रुक्मणी पकोड़ा, मुर्मिला खोले पेर्ई चीनीअ जे थाल्हियुनि में विझे ऐं भुणिके।)

रुक्मणी : तोबह, साहेड़ियूं घुराए पाण, बारु पवे मूं ते। (ओचितो यादगीरीअ सां) लछिमी ओ लछिमी! (अंदिरां लछिमी, संदसि नंदी भेणु अचे थी।) वजी सट पाए सिंधी पकोड़ाइअ खां चई आने जी नुख़ती त वठी आउ। मुर्मिलनि सां चडो कंदी।

लछिमी : दादी, इहो खाधो वरी टी पार्टीअ ते इंदिरा खे वणंदो छा? हुन घुराई आहे जनता कालेज वारी पारसियाणी साहेड़ी, सो उन्हीअ लाइ वर्वई आहे पाण केक पेस्ट्री आणण।

रुक्मणी : इहो टी पार्टीयुनि जो कहिड़ो फैशनु आहे, जिनि लाइ बंबईअ जे घुटनि में बि चांहिं थी तयारु थिए ऐं केक बिस्कूट था घुराइजनि। हैदराबाद में त ज़ेरदार सध ईदी हुई त पकोड़नि पुडो घुराए, पापडु खाई, मथां थधो ग्लासु पी छडिबो हो भला इहा नई साहेड़ी वरी इंदिरा कहिड़ी कई आहे?

लछिमी : दादी, नालो अथसि शीर्ंस। हिक पारसी कलेक्टर जी धीअ आहे। ताजो अची जनता कालेज जाइन कयो अथसि।

रुक्मणी : तड्हिं त असां पूरनि सारनि शारनार्थियुनि ते अची ठठोली कंदी। असां जूं वरी छोकिरियूं कहिड़ियूं आहिनि? हठ में पेयूं छिज्जनि भला दादे खां बि बियो धंधो कोन लधो, अची वाशिंग कम्पनी खोलियाई पर हाणे त पंज लगुंदा हूंदा, इझो आई की आई। तो हथु मुंहुं धोतो आहे, कीन रुगो नओं फ़िराकु पाए वेठी आहीं। हथ त कहिड़ा मेरा थिया पिया थेई! मुंहुं त डिसु कहिड़ो गंदो अथेई!

लछिमी : मुंहुं वरी पंहिंजो कीअं डिसां? का टेडी आहियां छा?

रुक्मणी : बूथु त डिसु। नेरनि वारी कोकीअ जो भोरु अजा लगो पियो अथेई।

लछिमी : न दादी, अजु त नेरनि कई ई कोन्हे। इहो काल्होकीअ कोकीअ जो भोरु हूंदो।

रुक्मणी : हीउ कनु त डिसु, मिटीअ सां भरियो पियो आहे।

लछिमी : त इहो कनु खणी शीर्ंस खां बिए पासे करे विहंदियसि इंदिरा जी साहेड़ी छा थी अचे, मूरिगो मां अची फाथी आहियां।

रुक्मणी : तड्हिं छोकिरी, शाहूकार महिमान अगियां घर जी लाहिणी लाहिबी छा?

लछिमी : पर मुंहुं हिकिड़ो भेरो धोतो अथमि, अजा छा करियां? ऐतिबारु न अथेई त टुवाल आणे डुखारियाई त कहिड़ो मेरो थियो पियो आहे?

रुक्मणी : न न, इहो नर्गु वरी हिते कंहिं खे थो खपे? (दरवाजे ते खडिको थिए थो) अई, शीरी अची वेर्ई छा? इंदिरा पाण पेर्ई अजा चकर मारे, मूँखे खणी फासायो अथसि। लछिमी, दरवाजो वजी खोले डिसु त केरु आहे?

(लछिमी दरवाजो खोले हिक पारसियाणी पाडेसिरियाणी दीना खे अंदरि वठी अचे थी, जाहिं खे हिकु जिलेबियुनि जो पुडो हथ में आहे)

रुक्मणी : भेण दीना आहीं? मुहिंजो त साहु सुकाए छडियुइ।

दीना : छो भेण, खैरु त आहे न? (मैज ड्रांहु निहारे) कंहिं साहेडीअ जी महिमानी कई अथेर्ई छा, जो तयारियूं थी वेयूं आहिनि?

रुक्मणी : नको मूँ में एडी पुजंदी किथे आहे जो साहेडियूं घुरायां। इन्हीअ इंदिरा खे कालेज में पढी पार्टियुनि जो पडिको लग्नो आहे।

दीना : तडुहिं त हीउ जिलेबियुनि जो पुडो पूरे वक्त ते आंदो अथमि। मुहिंजे दादे खे आहे मिठाईअ जो दुकानु, सो अजु ताजियूं जिलेबियूं तराए मुकाई, मिठियूं जहिडियूं माखी।

रुक्मणी : (मूँझारे में) पर इंदिरा जे साहेडीअ खे त तो एडी तकलीफ छो कई?

दीना : तकलीफ कहिडी आहे? दादे एतिरियूं त जिलेबियूं मोकिलियूं जो असां त मंझांदि जो मानी बि कान रधी, मूरिगो ई केतिरियूं बची पेयूं तडुहिं तो लाइ खणी आयसि।

रुक्मणी : पर असां बियो बि घणो ई मालु घुरायो आहे। इंदिरा पाण बि वेर्ई आहे केक पेस्ट्री वठण।

दीना : पर ही बि खणी चांहिं सां खाइजो। गरमागरमु अथव; असुलु चाश पेर्ई गुडे, खाधे मुख्यबर थिजो।

रुक्मणी : चडो वडी महिरबानी लछिमी, दीना खां जिलेबियूं वठी रखिजांड। (लछिमी वठी हिक टिपाईअ ते रखे थी।)

दीना : चडो भला, मां वजा थी। घर जो कमु कारि रहियो पियो अथमि।

रुक्मणी : वेहु त सहीं, तकडि छा पेर्ई अथेर्ई?

दीना : नको, पर कंहिं शइ शिकिलि जी घुरिज पवर्ई त हिजाबु न कजांड। साग्रीअ जाइ में रहिया पिया आहियूं, पाडेसिरी थी हिक बिए जी वक्त सिरि मदद करण में अहमु कोह्ने। (वजे थी।)

लछिमी : तोबह, ज़ाल आहे जुठि आहे। असुलु गले पइजी वजो। हाणे पुछीसि त इंदिरा जी वड-घराणी साहेडी खाईंदी चांहिं सां जिलेबियूं, मिठियूं जहिडियूं माखी, जिनि मां चाश पेर्ई वहे! (ठठोलीअ तरह खिले थी त मथां इंदिरा बुधंदी अचे थी, हथनि में केक बिस्कूटनि जा पुडा अथसि।)

रुक्मणी : इहा दीना तुंहिंजे टी पार्टीअ लाइ जिलेबियुनि जो पुढो ड्रॅई वेई आहे।

इंदिरा : (किराहत सां) जिलेबियूं थी शीरीं खाए! मां संदसि लाइ मांजनीअ वटां उचा केक पेस्ट्री वठी आई आहियां पर हीअ मेज़ छा जी विच में विधी अथव? का डिनर पार्टी आहे छा, जो मेज़ ते वेही खाइबो? टी पार्टी कुर्सियुनि ते कबी आहे। मैज़ रेढे था पासे खां रखूं। (रेढिनि थियूं) खाइण जूं शयूं पिलेटुनि में विझी मैज़ ते रखी छडियो। (इंग कनि थियूं) हाणे कोच, कुर्सियूं गोलाईअ में ठाहे विच में रखो त अगियां ही टिपायूं रखी उन्हनि ते खाईदासूं। (फर्नीचरु ठाहे रखनि थियूं)

लछिमी : पर कोचनि टिपायुनि ते वेही खाइण लाइ को त बेअरो खपे जो सर्वि करे। असां वटि त को छोकिरो बि कोन्हे। पाणेही त कोन खाधो मैज़ तां उडामी अची टिपायुनि ते पवंदो।

इंदिरा : त तूं ई खणी बेअरो थी। गांधी टोपीअ में खणी वार लिकाइ ऐं खाधीअ जो चोलो सुथण पातइ त देसी बेअरो थी पवंदीअं। ड्राही थीउ, भेण जी लज्ज रखु।

लछिमी : न न, तव्हीं वेही माल खाओ, मां वेठी सिकां। का हितां हुतां आई आहियां छा?

इंदिरा : अडी, रंधणे मां चांहिं आणण वत्रीं त उते वत्री टोलनि जा फक भरिजांइ। पछाडीअ में घणोई माल बचंदो, उन मां खूब जावा कजांइ।

लछिमी : (अखियूं टिमकाए) हां? तडुहिं मां वजी थी कपिडा बदिलायां। पर जेकी बचियो सो सभु मुंहिंजो, मतां इन्हीअ मां बि हिसो छिकीनीमि। (निकिरी अंदरि वजे थी।)

इंदिरा : हा हा, सभु तुंहिंजो, जेकडुहिं बचियो। (रुक्मणीअ खे) कोप के सागे सेट जा अथेई कीन जुदा जुदा रंगनि जा पिया आहिनि? इहा त मुंहिंजी ड्राढी घटिताई थोंदी।

रुक्मणी : तडुहिं तुंहिंजे साहेडीअ लाइ वेही नवां सेट घुरायां छा? अहिडियूं पाण खां मथे साहेडियूं रखीं छो जो पहिंजी घटिताई समुझीं?

इंदिरा : ठहियो भला इहो ई ठहियो पर खोर ऐं खंडु लाइ के जुदा जगु आहिनि, कीन चांहिं समूरी चांहिंदान में तयार थी ईंदी?

रुक्मणी : हा हा, के झूना पिया हुआ जे कढी रखी आई आहियां तोबह, छोकिरीअ टी पार्टी कान कई आहे, पर घर में मांधाणी विझी डिनी अथसि। अहिडो पाण खां मथे उडुमो छो?

इंदिरा : (निमाणाईअ सां) दादी, अजा पंज अठ ड्रीहं मस कालेज जाइन कए थिया अथसि। सो पहिरिं ड्रीहं खां वठी मूं सां रस्तो रखियाई ऐं मूंखे बि ड्राढी वणी वेई आहे। पर सचु बुधायाई, पाण जो बुधायाई त कलेक्टर जी धीअ आहियां सो मूंखां बि निकिरी

वियो त दादो बि हारनि जो वापारी आहे। पर्हिंजूं जायूं जगुहियूं अथऊं। हाणे शल ख़बर न पइजी वजेसि त दादे खे वाशिंग कंपनी आहे ऐं मसुवाडी जाइ में रहिया पिया आहियूं। भगुवान करे हिन भेरे पति रहिजी अचे त (दर ते ठकाड थिए थो) इझा अची वेर्ई इहो जिलेबियुनि वारो पुडो त टिपाईअ तां खणी किथे लिकाए रखु त मां अंदरि वठी अचांसि। इहा दीना त कान वरी मध्ये अची बियो संकटु विझंदी?

(रुकमणी जिलेबियुनि जो पुडो टिपाईअ तां खणी मैजू ते परंअ कुंड में पासीरो करे रखे थी। इंदिरा दरु खोले शीरींअ खे वठी अचे थी, जीहं खे उची साढी पेर्ई आहे।)

इंदिरा : शीरीं, अचु त दादी रुकमणीअ सां इंट्रोडियूस करायां। (रुकमणीअ खे) दादी, मुंहिंजी साहेडी शीरीं हीअ अर्थेई। हाणे वेही वजो। (कोच ते विहारेनि थी, पाण भरिसां कुर्सी सेरे विहे थी।) वेल् शीरीं, खुशी चडी भली आहीं?

शीरीं : थैंक यू इंदिरा तो अजाई खणी पार्टीअ जी तकलीफ कई।

इंदिरा : तकलीफ कहिडी आहे। नौकर हिरिया पिया आहिनि। पर हेडी महिल बिया त विया हूंदा घरि मानी खाइण (रुकमणीअ खे) दादी, नंदे छोकिरे खे तरिसायो अर्थेई न?

रुकमणी : हाओ, कोठियासि त तब्हां खे चाहिं आणे डु। छोकिरा!

(लछिमी अंदिरां जवाबु डिए थी : 'जी हुजूर' ऐं छोकिराणा कपिडा पायो अदब सां अची थी बीहे।)

इंदिरा : छोकिरा, मैजू तां खाधे जूं थालिह्यूं खणी अची टिपायुनि ते रखु।

(लछिमी खाधो भरियल टे चारि थालिह्यूं हिक बिए मथां रखी बिन्हीं हथनि में खणी अचे थी।)

इंदिरा : ही छा थो करीं? केक पेस्ट्री सभु चिपे फिसाए छडियइ। वजी ट्रे में रखी खणी आउ।

लछिमी : (अजब में) ट्रे! इहा वरी छा थींदी आहे?

इंदिरा : छोकिरा, तूं त को जुटु आहीं। दादी, ट्रे बि का घर में कान बची आहे छा?

रुकमणी : (मुंझी) ट्रे त असां वटि ओ, ट्रे त अजु सुबूह जो मुए नौकर भजी छडी।

शीरीं : ट्रे में केडी न सहूलियत आहे। केतिरियूं शयूं गडु थियूं खणी सधिजनि। (बुटाक सां) असांजा नौकर ट्रे खां सवाइ मुंझी पवनि। पर ठहियो, हाणे त टिपाईअ ते रखी छडी। (लछिमी खाधे जूं थालिह्यूं टिपाईअ ते रखे थी।)

इंदिरा : हाणे वजी चाहिं चडीअ तरह ठाहे खणी आउ। ट्रे त भजी पेर्ई। हाणे हथनि में ई सफाईअ सां खणी अचिजां। (लछिमी वजे थी।) शीरीं, खाउ, लजू न करि। पकोड़ा मुर्मिला अलाए तोखे वणंदा कीन न, पर मूं त अंगेजी तोडे देसी मालु घुरायो आहे।

(केक जी थाल्ही खणी शीरींअ खे आछे थी त रुकमणी अग्रै पेस्ट्रीअ जे थाल्हीअ मां हिकु वडो टुकरु चूंडे खाइण लगी वजे थी।) दादी, करीं छा थी! पर तोखे बि बुख लगी हूंदी। अजु चांहिं खे देरि थी वेर्ड आहे। (पेस्ट्रीअ जी थाल्ही खणी शीरींअ खे आछे थी त रुकमणी केक जो वडो कतिरो खणी खाईदी थी वजे ऐं इंदिरा थी निहारेसि।) हीअ कहिड़ी फ़ज़ीलत आहे?

(लछिमी चांहिं जा टे तयारु थियल प्याला निरालनि रंगनि वारनि कोपनि में खणी अचे थी।)

इंदिरा : छोकिरा, तूं त को बेवकूफु आहीं। अजु अकुलु केड़ाहुं हवा खाइण वियो अर्थेई? दादी, जुदा जग कोन कढी डिनाथर्डीसि छा?

रुकमणी : मुआ, ताकीअ ते कीन रखिया अर्थेई। वजी चांहिं, खीरु ऐं खंडु जुदा खणी आउ। इहा ठहियल चांहिं फिटी करे कोप मोटाए खणी अचु ऐं चमिचा बि मंझिनि विझी अचु।

लछिमी : हाजुरु माई। (भुणि भुणि कंदी वजे थी।) रोजु बि जुदा जगुनि में चांहिं पीअंदा आहियो।

इंदिरा : दादी, हूअ पकोड़नि वारी प्लेट खणी शीरींअ खे खाराइ, कीन पर्हिंजे खाइण में ई पूरी आहीं।

रुकमणी : इहे तव्हां छोकिरियुनि जा नाजू नखिरा मूंखे अचनि ई कोन। सभु कुझु अगियां रखियो आहे। हरिको पाणेही खणी खाए। को बार आहियो छा, जो ग्रिटियूं करे खारायांव।

इंदिरा : दादी, इहे नएं ज़माने जा मैनर्स आहिनि।

(लछिमी जुदा जुदा सूरतुनि वारा चांहिदान, खंडुदान ऐं खीरदान ऐं खाली कोप खणी अची थी टिपायुनि ते रखे। कोपनि में के नंदा के वडा चमिचा पिया आहिनि।)

इंदिरा : (खिखी विखी थी) शीरीं, अंदर में खिलिजाई न। नौकर अहिड़ा ज़ियानखोर थी पिया आहिनि जो काल्ह पछाडीअ वारो ही सेट भजी छेहूं करे छडियाऊं। तडुहिं रहिया खुहिया जगु पिया हुआ त खणी कढियासूं। चांहिं जा चमिचा बि गुमु करे छडिया अथनि।

लछिमी : (कुझु केक पेस्ट्री थाल्हियुनि मां खिसिकाए) मां त वजी रंधिणे में के हपा हणां। (हली वजे थी।)

शीरीं : दादे जो हिकिड़े नंगु भजी पवे त यकिदमु नओं सेटु वठी अचे। (नखिरे सां) सागिए सेट मां नंदिड़नि चमिचनि सां चांहिं पीइबी आहे त मजो ई और पियो ईदो आहे पर ठहियो, फ़िकिरु कोन्हे।

इंदिरा : भला कोपु ठाहे डियाई? घणा चमिचा खंडु?

- शीरीं :** थैंक यू। मूँखे चई बजे चांहिं न मिले त वातु पियो ब्रितिब्रिति करे बसि हिकिड़ो चमिचो मूँखे खंडु घणी वणे ई कान। खीर जो बि फुड़ो विज्ञिजांइ न त चांहिं जी खुशबूझ मारिजी वजे। (इंदिरा कोपु ठाहे डिएसि थी।)
- रुक्मणी :** छोकिरी, ही खीर जो नालो थी करीं छा? खीरु सर्सुरो विज्ञो त खीर में ताक़त बि थिए; कीन तव्हां खे खपे चांहिं जो नशो। चांहिं जी एतिरी इलत थियूं विज्ञो त सरकारि चांहिं ते बि न बंदिश विज्ञी छडे।
- इंदिरा :** दादी, तोखे कहिड़ी ख़बर। तूं खणी पाण लाइ अधो अधु खीरु विज्ञी पीउ।
- रुक्मणी :** हा, मां पंहिंजी चांहिं पाणेही थी ठाहे पीआं।
(पंहिंजो कोपु ठाहे थी, जंहिं में खीरु ऐं चारि चमिचा खंडु जा विज्ञे थी ऐं पोइ सासरि में चांहिं ओते सुरिका भरे पीअणु शुरू करे थी।)
- इंदिरा :** करीं छा थी? ही कहिड़ो चांहिं पीअण जो झंगिली नमूनो आहे? शीरीं चवंदी छा?
(पंहिंजो कोपु ठाहे थी।)
- रुक्मणी :** तव्हां कुञ्जु पेयूं चओ। मां पंहिंजो वातु साड़ीदियसि छा हहिड़ी बाहि जहिड़ी चांहिं ठारण खां सवाइ कीअं पीइबी?
- शीरीं :** मां कीअं वेठी पीआं? चप कने सां छुहाए ज़रो ज़रो करे पी डिसु त कहिड़ो न मज़े थो अचैई। चांहिं बाहि जहिड़ी गरमु न हुजे ऐं कोपु गुचु वक्तु न हले त तंहिं खां थधो पाणी छोन पीइजे?
- रुक्मणी :** छोकिरियूं, तव्हां जी मति ई औरि आहे। हिकिड़ो चांहिं जो कोपु पीअणो आहे, तंहिं लाइ केतिरो खणी आडंबरु कयो अथव, केड़ा खणी काइदा कढिया अथवा वजी खूहे पवे तव्हांजी चांहिं, मां वजां थी हली अंदरि।
- इंदिरा :** ठहियो दादी, हाणे त चांहिं पूरी कई अथऊं। वेहु त शीरीं बाजे ते हिकिड़ो रागु बुर्डी। कीअं शीरीं, मर्जीदीअं?.... पर ब्रियो कोपु पीअंदीअं?
- शीरीं :** न, मां हिकिड़े खां वधीक पीआं ई कीन निड़ी त अजु घुटी पेई अथमि पर तोखे नाउमेदु कीअं करियां? (बाजो खोले हिकु रागु गाए थी, जंहिंजे पूरे थियण ते इंदिरा ताडियूं वजाए थी। जिअं शीरीं बाजे तां उथे थी, तिअं नज़र वजी थी जिलेबियुनि जे पुडे ते पवेसि।)
- शीरीं :** इंदिरा, डुडा घणा टोल घुराया अथेई। ही वरी कहिड़ो पुड़ो पियो आहे, जो अजा खोलियो ई कीन अथेई?

- इंदिरा** : (हाखिकी) इहो त पराओ चुक मां अची वियो आहे ... तुंहिंजे खाइण लाइकु कोन्हे। (वधी पुडो खणे थी।)
- शीरीं** : पर बि डिसां त सहीं आहे छा? (खसेसि थी ऐं खोले डिसे थी।) जिलेबियूं! ही घुरायो छा अर्थेई? मिठि मिठि, गिंग पेर्ई गुडे!
- इंदिरा** : पर मूं तोखे खारायूं ई कान। इन्हीअ करे त पासीरियूं करे रखियमि।
- शीरीं** : अहिडी गंदी शाइ घर में आणणु ई घटिताई आहे। हिते आंदियूं कंहिं?
- इंदिरा** : कंहिं नौकर आंदियूं हूंदियूं भला हाणे
(ओचितो पाडेसिरियाणी दीना धूकांदी अचे थी। हथ में हिक नुख्तीअ जे लडूनि जी थाल्ही अथसि।)
- दीना** : रुक्मणी, दादे मथां वरी ही नुख्तीअ जा लडूं मोकिलियमि, तडुंहिं तो लाइ ब्रु चारि खणी आवसि। हू जिलेबियूं खाधियव? इंदिरा, तुंहिंजीअ साहेडीअ खे त ज़रुर वणियूं (अखि वजी थी शीरींअ ते पवेसि, जंहिं खे उमालक वजी थी भाकुरु पाए।) अडी शीरीं! खुशी आहीं, चडी भली? तूं हिते कीअं आईअं?
- इंदिरा** : (विस्मे में) दीना, तूं शीरींअ खे सुजाणीं छा?
- दीना** : डिसु त पुछे छा थी? चे सगी भाइटीअ खे सुजाणीं छा? अडे, हीअ त उन भाणमि जी धीअ आहे, जंहिंजे दुकान वारियूं जिलेबियूं ऐं लडूं आंदाथीमांव।
- इंदिरा** : हां! न न, शीरीं मुंहिंजी नई साहेडी, कलेक्टर जी धीअ
- शीरीं** : (फ़करु फाटंदो डिसी, दिलि ब्रधी) इंदिरा माफु कजांइ, मूं तोसां यटु हयो। अलाएजे कहिडी वडुंव अची मथे ते वेठियमि जो तो सां कडु ग्राल्हायुमि। मां बराबरि आंटी दीना जी भाइटी आहियां। डैडीअ जो मिठाईअ जो दुकानु
- रुक्मणी** : अई, छोकिरियूं कहिडियूं आहिनि, जहिडियूं दहिलीअ जूं ठगिणियूं !
- शीरीं** : आंटी रुक्मणी, तूं बि माफु कजांमि। मूं भुल कई पर आंटी दीना, असीं पूरा सारा, तूं हिननि वडुनि माण्हुनि खे कीअं सुजाणीं?
- दीना** : सागीअ मसुवाडी जाइ में ब्रई पाडेसिरि थिया वेठा आहियूं, सो सुजाणांदासूं कीअं न?
- शीरीं** : मसुवाडी जाइ ! पर इंदिरा त चयो त असीं जायुनि जग्हियुनि, मोटरुनि गाडियुनि वारा वापारी, पॅहिंजे बंगुले में रहंदा
- इंदिरा** : (फ़करु फाटंदो डिसी, दिलि ब्रधी) शीरीं, तूं बि मूंखे माफु कजांइ, तुंहिंजे वातां ब्रधी मूंखे बि मथे में वाउ अची वेठो जो मूं बि खणी तोसां यटु हयो। सिंध में बराबरि दादा वापारु कंदो हो, पर बंबईअ में अची वाशिंग कंपनी

शीरीं : मारि ! तड़हिं ब्रिन्ही हिक ब्रिए खे बुलिगारी बोता ब्रुधा। पर सबकु बि चडो सिखियूं आहियूं त पाण खां मथे कडुहिं बि न उडामिजे। इएं समुझणु खपे त असांजो ईमानदारु धंधो आबरूदारु आहे।

इंदिरा : सचु शीरीं पर सुधि अथेई त जंहिं बेअरे असांखे चांहिं आणे पीआरी, सा केरु आहे? बुधायांइ? (सडु करे) छोकिरा! (लछिमी छोकिराणनि कपिडनि में अचे थी त इंदिरा गांधी टोपी लाहे थी छडेसि ऐं संदसि वार लटिकी था पवनि।) मुहिंजी नंदिडी भेण लछिमी आहे।

लछिमी : लछिमी आहियां की लछिमणु। मूँखे बि त कुद्दु खाइणु डियो। अजा हिते ई था बक बक करियो। वजो त मां बि बचति मां की जावा करियां। (केकु, बिस्कूट गिरिकाए थी।)

शीरीं : भाई, मूँखे त अजा बुख आहे। पेस्ट्री त मैनर्स विचां लजु करे न खाधियमि। कूडी वडाई फिटी करे अचो त पेटु भरे डैडीअ वारियूं जिलेबियूं ऐं लडूं खाऊं। आंटी दीना, हेडांहुं त वराइजांइ त के वारा करियूं।
 (सभु जिलेबियुनि ऐं लडुनि खे लगी वजनि था।)

नवां लफ्ज़ :

हिजाबु = लजु, शरमु
 किराहत = घृणा, बुछां
 पति = मानु, इज़त
 बुटाक = यटु, कूडो वधाउ
 गिटी = खाधे जो नंदो गिरहु
 इलत = लत, बुरी आदत
 आबरूदार = इज़त वारो

ठठोली करणु = मज़ाक उडाइणु
 हठ में छिजणु = डाळो घमंडु करणु
 जावा करणु = मौज करणु
 खिखो विखो थियणु = लजी थियणु, शर्मिंदो थियणु
 फ़करु फाटणु = पोल खुलणु, गुलिह ज़ाहिरु थियणु
 बुलिगारी बोता ब्रधणु = अजायूं वडियूं गुलिहयूं करणु

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हवाला ड्रैंग समझायो :-

- (1) हिकिड़ो चांहिं जो कोपु पीयणो, तर्हि लाइ केतिरो खणी आडबंरु कयो अथव, केड़े
खणी क़ाइदा कढिया अथव।
- (2) तुंहिंजे पुठियां मूँखे बि मथे में वाउ अची वेठो हो जो मूँ खणी तोसां यटु हयो।

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो :-

- (1) ईरिंग एं शीरिंअ हिक ब्रिए सां कूडु छो गाल्हायो?
- (2) रुक्मणीअ खे नएं ज़माने जा कहिड़ा क़ाइदा नथा वणनि?
- (3) शीरिंअ जो कूडु कीअं ज़ाहिरु थियो?

सुवालु 3. हेठियनि किरदारनि बाबति थोरे में लिखो :-

दीना, ईरिंग

सुवालु 4. हेठियनि लफ़्ज़नि लाइ सागी माना वारा लफ़्ज़ लिखो :-

हिजाबु, पति, यटु, उमालक

सुवालु 5. माना ड्रैंग जुमिलनि में इस्तेमालु करियो :-

हठ में छिज्णु, जावा करणु, खिखो विखो थियणु

करण जोग्ना कम :-

- (1) 'टी पार्टी' नाटकु तयारु कराए स्टेज ते पेशि करायो।
- (2) जुदा जुदा विषयनि ते नंदा सिंधी नाटक तयारु कराए सांस्कृतिक प्रोग्रामनि में पेशि
करायो।



पराए मास में काती

— नारायणदास मेवाराम भभाणी

लेखक परिचय-

(1915 ई. - 1994 ई.)

श्री नारायणदास मेवाराम भभाणी अजमेर जे राजकीय महाविद्यालय में अंग्रेज़ीअ ऐं सिंधीअ जो प्रोफ़ेसर हो। ही साहिब धार्मिक वीचारनि वारो, बिल्कुल सादो सूदो, निमाणो ऐं निहठो हो। हिननि जे लिखण जो ढंगु दिलचस्प आहे। सिंध में “पाप ऐं पाकीज़गी”, “विधवा”, “गरीबनि जो वरिसो” वगैरह नाविल लिखिया हुआई।

ही साहिब ऊच पदवीअ ते रहंदे बि सादगी, सच्चाई, नप्रता ऐं धार्मिक मनवृतीअ वारो हो।

हिन आखाणीअ में हुन समाज में फहिलियल डाइण डेती लेतीअ जो जिक्र कयो आहे, जाहिं में नौजवानु डेती लेतीअ ते फिटलानत विझंदे उनजो बहिष्कार करण जो संदेश थो डिए।

आखाड़ जी पछाड़ी हुई। बिनि पहिरनि जो वक्तु हो। ककर आसमान खे ढके बीठा हुआ ऐं रखी रखी बरसात जे बूदुनि ततल ज़मीन ते वसी ठारु पिए कयो।

साए रंग वारीअ जाइ जे विरांडे में अजीत आराम कुर्सीअ ते लेटी ब्राह्मि बरसाति डे पिए निहारियो ऐं माणसि भरिसां पियल खट ते टांगु हेठि करे साणुसि गुल्हाए रही हुई। गोमीअ चयो त “अजीत, मुंहिंजी मर्जी आहे त मां तोखे मडायां। सुठनि घरनि जूं माइटियूं पेयूं अचनि, डेती लेती बि चडी थी मिले, तूं फ़कति हा करि।”

अजीत पर्हिंजे मुर्कन्दड मुंह में गंभीरता आणे वरंदी डिनी, “मूं अजा मडिज्जण जो ख़्यालु कोन कयो आहे।” अजीत अजा बि कुझु चवणु थे चाहियो त माणसि अध में रोके चयो, “पुटिडा, माड ते बि कियासु करि! सारो डींहुं थी घर ऐं बारनि जे कम में गुहां। तुंहिंजी कुंवारि ईदी त ब्रुजुणियूं थींदियूंसीं, मूंखे केडी न हथी ईदी।”

“पर डेती लेती वठण जो ख़्यालु सफा लाहे छडिजांइ।”

“सभुको थो वठे, मां को नओं रवाजु कोन थी कढां।”

“बियनि सां असांजो कहिडो वास्तो? जेकडहिं तूं समुझीं थी त मुंहिंजी शादीअ करण सां तोखे आरामु मिलंदो त मां तयारु आहियां।”

“डेती लेती वठण में तोखे कहिड़ो थो आरु थिए?”

“डेती लेतीअ मां हमेशह ख़राबु नतीजा था निकिरनि।”

“सजो दुनिया तूं समुझीं थो त तो जहिड़ी आहे छा?”

“ब भेनरूं वेठियूं अथेर्ई, इहे बि बिना नाणे कोन अघार्मदियूं।”

“इन्हनि खे डींदासूं।”

“बाकी वठणु आहे डोहु। तो वटि टका मिडिया रखिया आहिनि जो भेनरुनि खे डीन्दें?”

“इन किनी रस्म केतिरनि खे ख़राबु कयो आहे, कंहिं बि सूरत में बंदि थियणु घुरिजो।”

“वात जा फटाका मारणु सवला आहिनि, पर हज़ार हथां छडणु डाढो डुखियो आहे। माझटनि जे चोलीअ ते आहीं, तडहिं थो बुयकूं हणीं।”

“पैसो कमाए डिसु त ख़बर पवेर्ई, जडहिं रत कटोरो डिजे थो, तडहिं भत कटोरो मिले थो। आए रिज़क खे तूं थो मोटाई, इहो पैसो बि तोखे कमु ईदो। तुंहिंजी डाडी चवंदी हुई त “उथे बि नाणो, विहे बि नाणो, नाणे बिना नरु वेगाणो।”

“पिण्हें वटि हज़ार कोन आहिनि, जंहिं मां तुंहिंजी शादीअ ते गुरा ख़र्च कंदो।”

“सभुको पुजांदीअ आहरु कंदो, बियनि सां रीस त कान आहे ऐं हरिका बुकिरी पर्हिंजे फाहे टंगिबी।”

“हेतिरनि जो खाई पी पोइ माठि करे कोन वेहिबो। मुंहिंजी माउ चवंदी हुई त वातु खाए अखिलजाए।”

“बियनि खे फुरे माणहुनि जो पेटु भरींदासूं छा?”

“हरिको चवंदो त पहिरियों पुटु परिणायो सो बि सुस्त दिलि सां।”

“मूंखे माणहुनि जे नुक्तचीनीअ जी परवाह कान आहे।”

“तूं खणी परवाह न कंदें पर पिण्हें नंग नामूस जो बुखियो आहे, माणहू असांजी गिला कंदा। तोखे छा आहे? तो में इहे ख्याल क़हिं विधा आहिनि? बाहिरि अलाइजे कहिड़नि माणहुनि जी सुहिबत थो करीं?”

“जेके बाहिरां वडा प्रचार था कनि, से ई गुझा खाट था हणनि।” कोडी हराम ऐं बुजको हलाल।” तो जहिड़ो पैसे तां मोह खंयो आहे, तहिड़ो शल केरु न खणो।”

अजीत जवाबु कोन डिनो। घडी खनु बई खामोशु रहिया।

वरी गोमीअ चयो, “कुंवारि जा घर में ईदी, तंहिं लाइ ज़ेवर बि ज़रूरु ठाहिबा। गुच्छीअ लाइ लुकिडी खपंदी, ब्रांहं लाइ चूडा घुरिबा, कननि में दुर पाईदी। इहे खऱ्च बि करिणा पवंदा। सोनारनि घडाईअ जा अघ बि चाढे छडिया आहिनि, डुसीं वेठो सभ शाइ जो डुकरु लग्यो पियो आहे।”

“ज़ेवरनि पाइण जी कहिडी ज़रूरत आहे?” अजीत शोखीअ सां वरिजायो।

“मणियनि बिना कुंवारि कीअं सुहिणी लगंदी?”

“औरत जी सूहं सादिगीअ में आहे, न कि सोन में। मणिया ज़ाल खे मन लुभाईदड़ नथा बणाइनि पर हुनजा लछण। औरत जो इखळाकु ई हुनजो बे-बहा गुहिणो आहे।”

“बिना ज़ेवरनि कुंवारि घर में आणण बदि-सोण आहे, मूँखे संसो थो पवे।”

“ब्रिए जे मास में काती विझणु डुढी सवली आहे।”

“माइट डेती लेती पंहिंजी धीअ खे था डियनि, असां ते थोरो कोन था थाफीनि। माइटनि ते जेतिरो पुटनि जो हक्कु आहे, ओतिरो धीउ जो बि हुअणु घुरिजे, नियाणीअ जो केरु रखी छडींदो?”

“इहा शादी न चइबी, जीहं में पैसे ज़ेरीए छोकिरा विकिया वजनि था।”

“कंहिं माइट खे झज्जो धनु हुजे ऐं उन मां कुझु पंहिंजी नियाणीअ खे डियणु चाहे त उन में कहिडो गुनाहु आहे? पुट ज़डहिं माइटनि जो पैसो लुटीनि था, तडहिं त को उन्हनि खे झलण वारो कोह्ने। नियाणीअ लाइ आई वेल वास्ते तोशो करणु हर कंहिं माइट जो फ़र्जु आहे।”

“मगर दानु ज़ेरीअ न कराइबो आहे, इहो दानु कंदड जी मर्जीअ ते छडियलु आहे त जेको हू खुशीअ सां चाहे, सो छड्हे। उन में छिकताण नथी थिए। इहो कुदरती कानून आहे त जो इंसानु ब्रियनि खे पीडे पाण शाहूकार बणिजे थो, जो आदमी ब्रियनि जे गुनर ते लत डियण खां नथो गुसे, उनखे कुदरत जी ज़रूरु लपाट लगंदी।”

“पराओ पैसो घर में टिकिणो न आहे। बरकत पवंदी पघर जे पोरहिये में वाधारो थींदो आहे ईमानदारीअ जे कम में ऐं न मुफ़्त जी मूळी हथि करण में। असीं खुदिमतिलबी थी पिया आहियू ऐं पंहिंजीअ तरकीअ खां सवाइ ब्रियो वीचारु असांजे दिलि में नथो अचे। असीं घुरूं था त सिर्फ़ असांखे रसे पोइ “नगरी भले नाम थिए।”

पुट जा इहे ख्याल बुधी गोमीअ जा कपाट ई खुली विया। हिन महसूसि कयो त अजीत सां मथो हणणु आहे ठरियल खीर खे फूकूं डियणु, हिनखे बाज़ आणण जी कोशिश हुई पाणी विलोडणु। ना उम्मेदीअ जे विचां गोमीअ जो चेहरो मायूसु नजर अचण लग्यो। खट तां उथंदे चयाई, “पिण्हें अचे त गुल्हि थी करियांसि, पोइ जीअं वणेव, तीअं करियो।”

अजीत जोश में अची चयो, “कन्याउनि जी असांजे समाज में जो हहिड़ी बेइज़ती थी रही आहे, तर्हिंजो खासु कारणु डेती लेती आहे। क़हिं बि घर में जड्हिं छोकिरी जनमु वठे थी, तड्हिं सजे घर मथां अज़ग़इबी का मुसीबत अची थी कड़िको।”

चौतरफ़ डुख जी लहर छाइंजी वेंदी आहे। न रुग्ने छोकिरीअ जा माझ भागर ब्रिया अजीज़ पिण सर्द आहे भरे दिलदारीअ जा ब्रु लफ़्ज़ ग्राल्हाईदा आहिनि। पुट ज़मनि त वडा जशन कया वेंदा आहिनि। छठी बि डुढी धामधूम सां मल्हाई वजे। मगर धीउ ज़मे त तड़तकड़ि में छठी करे कम जो पूराओ कयो वजे थो।

इन्हीअ जो सबबु डे वठु जी रस्म आहे, जीहिं मुल्क में हज़रें बुख विघे मरंदा रहनि था, जिते बे-अंदाज़ बेवा स्त्रियू इज़त ऐं धर्म जी परवाह न करे पेट पालीनि पेयू, जीहिं देश में मिस्कीन हिकू वेलो खाईनि ब्रिए वेले लाइ वाझाईदा रहनि था, उते हीअ डेती लेती असांखे तबाहीअ डांहुं तकिडो तकिडो गिहिलींदी वजे थी।

नवां लफ़्ज़ :

ततल = गर्मु	ठार = थधाणि	आरु = तक्लीफ़, एतराजु
नुक्तचीनी = चउपचउ, गिला	नामूस = साराह, प्रशंसा	
अखिलाक = चरित्र, सीरत	बेबहा = अमूल्य	
लपाट = चमाट, थफड़	मिस्कीन = ग्रीब	

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) गोमीअ पॅहिंजे पुट खे डेती लेतीअ वठण लाइ छो ज़ोरु भरियो?
- (2) अजीतु डेती लेतीअ जो खिलाफु छो आहे?
- (3) समाज में धीउ ज़मण ते छो मायूसी थींदी आहे?
- (4) गोमीअ डाजो वठण लाइ कहिड़ा दलील डिना?

सुवालु 2. हेठियनि इस्तलाहनि जी माना बुधायो ऐं जुमिले में कमु आणियो :-

- (1) वात जा फटाका मारणु।
- (2) ब्रटाकूं हणणु।

- (3) रत कटोरो डिजे थो तड़हिं भत कटोरो मिले थो ।
- (4) हरिका बुकिरी पैहिंजे फाहे टंगिबी ।
- (5) वातु खाए अखियूं लज्जाए ।
- (6) कोडी हरामु बुजको हलाल ।
- (7) बिए जे मास में काती हणणु ।
- (8) ठरियल खीर खे फूकूं डियणु ।
- (9) पाणी विलोडणु ।
- (10) नगरी भले नाम थिए ।

सुवालु 3. हेठियां हवाला समुझायो :-

- (1) “औरत जो सूंहं सादिगीअ में आहे, न कि सोन में, मणिया ज़ाल खे मन लुभाईदड़ नथा बणाइनि पर हुनजा लछण । औरत जो इखळाकु ई हुनजो बे-बहा ग्रुहिणो आहे।”
- (2) “कन्याउनि जी असांजे समाज में जो हहिडी बेइज्जती थी रही आहे, तांहिंजो खासु कारणु डेती लेती आहे।”



आलमी शख्सियत : गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर

— डाक्टर दयाल ‘आशा’

लेखक परिचय-

डाक्टर दयाल ‘आशा’ जो जनमु 1936 ई. में खैरपूर मीरस सिंधु में थियल आहे। हिन साहिब पर्हिंजे कलम सां सिंधी ऐं हिंदीअ जा केतिरा ई किताब लिखिया अर्थाई। खास करे सिन्धी संतनि, दरवेशानि, भगुतनि जे शख्सियतुनि ऐं जीवन ते रोशनी विधी अर्थाई। ही साहिब प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर में ऐं वासवाणी मिशन पूना में समाज सेवा जा कार्य करे रहियो आहे। संदसि साहित्यक शेवाउनि जो कळुरु कंदे केतिरनि ई सरकारी ऐं गैर सरकारी इदारनि खेसि इनामनि सां नवाजियो आहे। ही साहिब साहित्य सां गडुगडु तइलीम सां पिणु जुडियल आहे। उल्हासनगर जे चांदी ब्राल कॉलेज मां प्रिंसीपाल जे पद तां रिटायर कयो अर्थाई। वडे में वडी डिग्री डी-च्टि हासिल करण जो शाफ्ट सिंधी साहित्य में अकेले हिन शाखा खे ई हासिल कयल आहे।

भारत जी तपोभूमीअ वक्ति बि वक्ति अहिडनि महान आत्माउनि खे जनमु डिनो आहे, जिनि जी सुरहणि न सिर्फ भारत मगर सारे संसार खे सुर्गाधित कयो आहे। गुरुदेव रविन्द्रनाथ भारतीय साहित्य गगन जो ध्रुव तारो हो। ब्रापूजी श्रद्धा विचां खेसि ‘गुरुदेव’ सङ्गींदो हो ऐं हू सच्ची माना में गुरुदेव हो। हू न सिर्फ महान कवी हो मगर केतिरनि ई कलाउनि जो मरकळ हो। हू श्रेष्ठ साहित्यकारु, फेलसूफु, चित्रकारु, संगीतकारु, महान विद्वान, समाज सुधारकु, राष्ट्रभक्त, विश्व शांतीअ जो कांखी, मतलब त हू हिक अनोखी अन्तर्राष्ट्रीय शख्सियत हो।

ब्राल जीवन ऐं अभ्यासु

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर जो जनमु 7 मई 1861 ई. में बंगाल प्रांत में देवेंदरनाथ ठाकुर जे घरि थियो। संदसि घर में धार्मिक वायुमंडल हो। हू भारतीय संस्कृति ऐं सभ्यता जे शुद्ध वातावरण में पलियो हो। खेसि स्कूल जूं चौदीवारियूं जबल भासण लगियूं, इनकरे संदसि पढाईअ जो प्रबुंधु घर में कयो वियो। 1877 ई. में संदसि पिता हिनखे डिग्री हासिलु करण लाइ इंग्लैंड रवानो कयो। अभ्यास जे दौर में हिन साहिब न सिर्फ बंगाली साहित्य जो अभ्यासु कयो, मगर अंग्रेजी शाइरनि, लेखकनि ऐं हिंदी संत कवियुनि जे साहित्य जो पिणि काफी अभ्यासु कयो।

22 वर्द्धियनि जी उम्र में गुरुदेव, गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कयो। संदसि पिता खे काफ़ी ज़मीनूं हुयूं। तंहिंकरे हिन पर्हिंजे सुपुत्र रविन्द्र खे पदनामीअ जे किनारे वारे ग्रोठ जी ज़मीन संभालण लाइ मांकिलियो। उतां जे एकांत ऐं आज़ाद वायुमण्डल में ही पर्हिंजे कला साधना में लीन थी वियो। उते हिन ‘साधना’ नाले मैग़ज़न पिणु शायइ कई। हू साहित्य सेवा सां गडोगडु ज़मीनूं पिणु संभालण लगो। ग्रोठ में रहंदे हिन कुड़मियुनि, कासायुनि ऐं अब्लाउनि जे जीवन ते गहिरो अभ्यासु कयो। साहित्य जे क्षेत्र में हिन जी साधना सफल थी।

श्रेष्ठ साहित्यकार

गुरुदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर न सिर्फ कवि हो पर हिन युग जो श्रेष्ठ साहित्यकारु पिणि हो। संदसि रचनाऊं अमर आहिनि, छाकाणि त इन्हनि में आल्मी दिलचस्पी मौजूद आहे। संदसि साहित्य सर्वदेशी, सर्वकाली ऐं सर्वभाषी आहे। रुसी शाइरनि पिणु रविन्द्रनाथ बाबूअ जे साहित्य लाइ साराह जूं सुरकियूं भरियूं आहिनि। हिन इंसानी जज़्बात ऐं भावनाउनि जो ऊहों अभ्यासु कयो ऐं पर्हिंजे जीवन जी अनुभूति तख़्लीकी कुवत ऐं कल्पना शक्तीअ द्वारा उहे किरदार पैदा कया, जे सदैव साहित्यकारनि जे लाइ प्रेरणा जो स्नोत थी रहंदा।

रवि बाबूअ खे ईश्वर वटां कविता जी ड्राति अता थियल हुई। नंदे हूंदे ई हिन कलम आज़माई कई। 15-20 सालनि जी ज़मार में हिन 7 हज़ार सिटूं नज़्म जूं लिखियूं। नसुर में रचनाऊं रचियूं बंगाली चाहे अंग्रेजीअ में साहित्य साधना कई। गुरुदेव बंगाली साहित्य में श्रेष्ठ सफल साहित्यकार जो पदु प्राप्त कयो। 1912 ई. में गीतांजली ते खेसि इनाम अता थियो। नोबेल पुरस्कार मिलण सबवि संदसि सुरहाण सारे संसार में परिदिनी वर्ई। दुनिया जे जुदा जुदा मुल्कनि मां खेसि नींदूं अचण लगियूं ऐं संदसि गीतांजलीअ सां गडोगडु बियूं रचनाऊं पिणि केतिरियुनि ई देसी ऐं विदेशी भाषाउनि में तर्जुमो थियण लगियूं।

गुरुदेव जे साहित्य में सत्यम, शिवम ऐं सुन्दरम, इहे टई वसफूं मौजूद आहिनि। संदसि रचनाउनि में विन्दुर बि आहे त सिख्या बि आहे। यथार्थवाद ऐं आदर्शवाद जो सुंदर समन्वय आहे। रवि बाबू हिक रहस्यवादी कवि हो पर साणु साणु हिन पर्हिंजे युग जी बि पर्हिंजे साहित्य में तर्जुमानी कई आहे। आज़ादीअ जे आंदोलन वक्ति हिन कौमी जाग्रता जा जेके गीत लिखिया, से काबिले दाद आहिनि। असांजो राष्ट्रीय गीत ‘जन गण मन अधिनायक....’ गुरुदेव जी ई देन आहे। हुन पर्हिंजे काव्य में रुहानी राज फिणि सलिया आहिनि। प्रकृतीअ सां गुलिह्यूं कंदे केतिरियूं ई रहस्यमय वार्ताऊं वर्णन कयूं आहिनि। गुरुदेव आशावादी साहित्यकारु हो। हुन संसार खे प्रेम ऐं शांतीअ जो संदेशु डिनो। हिन अनाथनि ऐं ग्रीबनि जी झूपिडीअ में मालिक खे पसियो। कवि बेदार कंदे चवे थो-

खोलि अखियूँ ऐं जांच त करि, आहे किथे तुँहिंजो भगुवानु,
हू त वजी इन जाइ रसियो, जिति हारी धरती खेडे थो,
पहण मजूर जिते पियो फोडे, फोडे थो गडु मेडे थो,
ततोअ थधीअ में वस्तर डुतिडियल, कम पियो सभिनी साणु करे,
वेसि तजे हिन वांगुरु तूं थी, आउ मिट्टीअ में पेर भरे ।

(तर्जमानु : प्रोफेसर मंघाराम मलकाणी)

राष्ट्र भगुत

गुरुदेव गांधीजीअ वांगुरु सियासत में भागु कोन वरितो, मगर पर्हिंजे कलम ज़रीए जनता में कौमी जाग्रता ऐं राष्ट्रीयता जो बिजु पोखियो। जड्हिं अंग्रेज़ सरकार बंगाल जो विरहाडो कयो, तड्हिं बि हिन महान आत्मा उन विरहाडे जो विरोध कयो। 1919 ई. में जलियांवाला कोस थियो, तर्हिं गुरुदेव जी दिल खे बडी चोट रसाई ऐं हिन खुलिए आम अंग्रेज़नि जी इन्हींअ बेहयाईअ ऐं बेशर्माईअ वारी हलति जी कडी आलोचना कई। अंग्रेज़ सरकार जो खेसि ‘सर’ जो खिताब अता कयो वियो। हुन देश भगुत ‘सर’ जो खिताब हिकदमि अंग्रेज़ सरकार खे वापसि कयो। संदसि केतिरनि ई गीतनि में राष्ट्रभक्ति कोटां कोट भरियल आहे।

गुरुदेव प्राचीन भारतीय ऋषियुनि मुनियुनि जी परम्परा अपनाई, शांति-निकेतन में विश्व भारतीअ जी स्थापना कई, जिते अजु देश विदेश जा विद्यार्थी पर्हिंजी दिलचस्पीअ अनुसार कला जे हर क्षेत्र में प्रब्रीणता प्राप्त करे डिग्रियूं हासिल कनि था।

विश्व शांतीअ जो कांखी

गुरुदेव विश्व शांतीअ जो कांखी हो। हिन लाइ सारो संसारु पर्हिंजो परिवार हो। जड्हिं जड्हिं हू विदेश में वियो, तड्हिं हिन उते भारतीय संस्कृति ऐं सभ्यता जो संदेशु सुणायो। अजु भारत खे गुरुदेव जहिडनि साहित्यकारनि ऐं राष्ट्र भगुतनि जी ज़रुरत आहे, जे पर्हिंजी वीणा जी तार सां जातिअ जे हिरदे खे आनंद डेर्ई, सत्य मार्ग बुधाए, सत्यम शिवम सुंदरम जो संदेशु डियनि, राष्ट्रीय भक्ति ऐं राष्ट्रीय एकता जो संचार कनि।

गुरुदेव टैगोर 7 अगस्त सन् 1941 ई. ते संसारी सफरु समाप्त कयो। संदसि बर्पा कयल शांती निकेतन ऐं साहित्य संदसि अमर यादगार थी रहंदा।

नवां लफ़्ज़ :

तपोभूमि = कर्मभूमि

कांखी = चाहत रखन्डु

वरिह्य = साल

अबिला = कमज़ोर

कुड़िमी = हारी (किसान)

डाति = वरदान

सुरहाणि = सुर्गधि

वसफूं = गुण

रसियो = पहुतो

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब हिक सिट में डियो :-

- (1) ब्रापूजीअ रविन्द्रनाथ खे श्रद्धा विचां कहिडो नालो डिनो?
- (2) टैगोर कंहिं कंहिं जे जीवन जो अभ्यासु कयो?
- (3) संदसि साहित्य जे रचनाउनि जूं वसफूं (नाला) लिखो।
- (4) खेनि अंग्रेज़ सरकार कहिडो खिताबु डिनो?

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) रविन्द्रनाथ टैगोर जी शख्सियत ते मज़मून लिखो।
- (2) संदनि ब्राल जीवन कीअं गुजिरियो?
- (3) टैगोर हिकु श्रेष्ठ साहित्यकारु हो, कीअं?

सुवालु 3. ज़िद लिखो :-

गगन, शुद्ध, आज़ाद, गहिरो, सुरहाणि।



उमरु मारुई

— गोवर्धन महबूबाणी ‘भारती’

(1929 ई. - 2010 ई.)

लेखक परिचय-

गोवर्धन ‘भारती’ न फ़कति हिकु शाइर आहे, मगर मक़बूल लेखकु, गाइकु, संगीतकारु, अदाकारु, हिदायतकारु ऐं चित्रकारु पिणि आहे। संदसि पूरो नालो श्री गोवर्धन आसूमल महबूबाणी ऐं तख़्लुस ‘भारती’ आहे। हिनजो जनमु नंडिडे गोठ आराजी, तइलको सेवहण, ज़िलो दादू (सिंधु) में 13 जनवरी 1929 ई. में हिक ग्रीब मास्तर जे घर में थियो। ‘भारती’ साहिब पहिरीं रचना 1946 ई. धारे लिखी, जेका ‘गुलफुल’ ब्रानि जे रसाले में छपी। हकीकत में ‘भारती’ साहिब 1948 ई. में साहित्यक क्षेत्र में क़दम रखियो। तर्हं वक्त मुल्क जो विरहाडे थियो ऐं सिंधु पाकिस्तान में हली वेई। ब्रियनि साहित्यकारनि वांगुरु हिन साहिब ते बि वतन खां विछिड़ण जो गहिरो असरु पियो। दर्द भरी दिल जा उधमा लफ़्ज़नि जो रूप वठण लगा ऐं हिन हिक लम्बी कविता जोडे वरिती “अप्सोस तुंहिंजो सिंधुडी, तुंहिंजो हीउ हालु कंहिं कयो?”

‘भारती’ जे शाइर में संगीत जी लइ आहे। हालांकि हिन साहिब नसुर ऐं नज़म बिन्हीं ते कलम आज़माई आहे पर त बि ही बुनियादी तोर शाइर आहे। संदसि मुख्तलफ़ शाइरीअ जा किताब हिन रीत आहिनि-

गुल ऐं मुखिड़ियूं (1956), लातियूं (1958), उठा मींहं मलीर (1966), कथा उड़ेरेलाल जी (1967), पेके हली वेंदीसांइ (1968), काणो बि अघाणो (1970), उड़र पखी अलबेला (1983), तन्हाई ऐं कौड़ो दूळों (1980), शीशो जा घर (1988)। शीशो जा घर किताब ते मर्कजी साहित्य अकादमी पारां खेसि इनाम अता कयो वियो।

(उमरकोट में उमर सूमरे जे महल जे हिक सुहिणे कमरे में मारुई पट ते वेही पर्हिंजे मारुनि जे यादि में गोढ़ा ग्राडे रही आहे। लया लीडूं लीडूं, डुख ऐं बुख सबबां बदनु लहिकारियलु। उमरु अचे थो)

उमरु- मारुई! रोउ न मारुई! पर्हिंजे चंड जहिडे चहिरे ऐं गुलाब जहिडे जोभन खे हीअं गर्मु आंसुनि सां जलाए ख़ाकिन करि। हिति तोखे कहिडो कप्टु, जाहिं लाइ तूं हीअं हंजूं हारे रही आहीं?

मारुई! मां तोखे पर्हिंजी पट-राणी बणाइणु थो चाहियां, मुंहिंजी ग्रालिह मजु। मां तुंहिंजीअ हर खळाहिश, हर तमत्रा जी पूराई कंदुसि। मूं वटि भला छा नाहे? आसमान सां ग्रालिहयूं कंदड़ ऊचा आलीशान महल, गुलाब जे गुलनि खां वधीक नफीसु पट-पटीहर ऐं सिज चंड खे शर्माइण वारा हीरनि जवाहरनि सां जडियल जेवर मूं वटि हकिया तकिया हाजुरु आहिनि। हुति बरपट में छा आहे?

मारुई- ए सूमरा सरदार! मां मिस्कीनि अब्हांजे महल माडियुनि मां छा ज्ञाणां? मुंहिंजो जिस्मु जेतोपीकि हिति कैद में काबू आहे, पर मनु त मलीरि पियो वसे। मूंखे हिननि महलनि खां वधीक पर्हिंजी रुखाई द्यूपिडी प्यारी आहे। खुलियल मैदाननि ऐं झांगल में मस्तु हवा में उडामंडड बुलबुल खे भला सोने पिचिरे में कीअं आरामु ईदो?

उमरु- मारुई! मगरि सुहिणा गुल शाही बागऱ्यानि में ई जेबु डंडा आहिनि। बननि ऐं बयाबाननि में इन्हनि जो कहिडो कदुरु?

मारुई- मगरि दीपकु त सिर्फु अंधेरे में चिमिकंदो आहे। डुंहं जे उजाले में उनजी सुंदरु जोती फिकी पेई भासंदी आहे।

उमरु- ओह! तूं जेतिरी सुहिणी ऐं सबुज्जी आहीं, ओतिरी ई अकुलमंदु पिणि। पर मारुई! ज़रा वीचारु त करि, हिकु जवहारु बादशाह जे गले में ई पर्हिंजो जल्वो डेखारांदो आहे। मिटीअ जे ढेर में भला अनमोलु रतन जो कहिडो मुल्हु?

मारुई- मिटीअ में मिलण करे जवाहरु पाण मिटी कोन थी पवंदो आहे। जवाहर त मिटीअ में बि जवाहरु ई रहंदो आहे?

उमरु- तुंहिंजीअ दिलि जी सचाई ऐं ख्यालनि जी ऊंचाई मूंखे हेकारी मोहे रही आहे। मुंहिंजो चवणु मजु। मारुई! मुंहिंजी राणी थियणु कबूलु करि। मां तुंहिंजे हिननि गोरियुनि ब्रांहुनि खे सोन सां मढे छडीदुसि।

मारुई- सोनु? सोनु चिमिकंदु थींदो आहे, मगरि निहायत कठोरु। ए सखी साई! मुंहिंजूं ब्रांहूं कोमलु आहिनि, कोमलु करायुनि खे सोन जी न, पर नाजुकु गुलनि जे गुजिरियुनि जी घुरिज आहे।

उमरु- सचु थी चवीं मारुई! मां तुंहिंजे हर नाजुकु अंग खे रेशम जे नरमु वस्त्रनि सां सींगारांदुसि।

मारुई- ए सूमरा! नाजुकु अंगनि जे रख्या लाइ मुलायमु वस्त्रनि जी न पर मज़बूत मोटनि कपिडनि जी ज़रूरत आहे। गुलाब जे कोमलु गुल जी रख्या बि त कठोरु कंडा कंदा आहिनि। इनकरे अब्हां जे उन एलाचियुनि ऐं बखिमल बाफितनि खां मां पर्हिंजे मारुनि जी खहुरी खथी ऐं लाख रती लोई सखरि थी समुझां।

उमरु- (खऱे थी) उफ! आखऱि मां तोखे कीअं समुझायां? केतिरा डॉंहं गुजिरी विया आहिनि मारुई? पर तो अन्न जो हिकू दाणो बि कीन चाखियो आहे! जऱा पर्हिंजीअ जिंदगीअ ते क्यासु करि। डिसु मूं तो लाइ सत-रछी ताम तैयारु कराया आहिनि। हीअं बुखियो रही जानि डियणु मां कहिड़े फाइदो?

मारुई- पर जऱहर खाइण सां जिंदह रहणु मुशिकलु आहे!

उमरु- छा मतिलबु?

मारुई- मां हिक हिन्दू स्त्री आहियां, बादशाह सलामत! धारिए जे हथ जो अन्नु जलु मूं लाइ जऱहु आहे। मूं बुकिरार खे तव्हांजे रसीलनि तामनि जी तमअ कान्हे। मां मिस्कीनि पर्हिंजे झांगियुनि जे डुथ ऐं डॉंरनि लाइ आसाइती आहियां।

उमरु- ओह! तूं कहिडी न हठीली आहीं मारुई! जऱा पर्हिंजी हालति त डिसु।

मारुई- मुहिंजी हालति अव्हां जे अन्याय जो आईनो आहे। अव्हीं हाकिम आहियो, हाकिमनि जो फऱ्जु आहे पर्हिंजे गरीबु रईयत जी संभाल लहणु। छा हिक बेबसि औरत खे जऱबदस्तीअ भजाए, पर्हिंजे महल में कैदि कंदे, अव्हांखे शर्म न आयो?

उमरु- मगरि मारुई! जेकी थियणो हो, सो थी चुको। हाणे छा थी सघंदो?

मारुई- छो? अजा वेल वेर्ई कान्हे। मूं बंदियाणीअ खे बंद मां कढो त वजी सांगियुनि सां सरही थियां।

उमरु- पर छा हींअर हिन हाल में तुंहिंजा माइट तोखे वरी कबूलु कंदा?

मारुई- छो कोन? मूं को पापु कोन कयो आहे। कमिज़ोरु स्त्रीअ ते जेकडुहिं को अत्याचारु थो करे त इन में उन अबिला जो कहिडो कसूरु? मगरि मां सती आहियां। सतीअ जो प्रतापु महानु थोंदो आहे। पर्हिंजे सचाईअ जे बुल सां मां मारुनि जा समूरा संदेह मिटाईदियसि, पर जेकडुहिं अजा बि मूं विश्वासु न कंदा त सतीअ सीता वांगुरु अनी परीख्या डियण लाइ बि तैयारु थोंदियसि।

उमरु- मगरि मां तोखे हरिगिजि न छडींदुसि। आह! मूंखे खऱर कान हुई त तुंहिंजे कोमलु जिस्म में बि का पथर जी दिलि आहे। डिसु, मारुई! तुंहिंजे प्रेम लाइ तुंहिंजे अगियां हिन मुल्क जो हाकिमु आजी नीजऱी करे रहियो आहे। (गोडुनि भर झुकी) जऱा उन ते रहमु करि, मारुई!

मारुई- (नफिरत विचां) रहमु? हिन जऱलिम ते रहमु? बादशाह सलामत! किथे अव्हीं मुल्क जा वाली ऐं किथे आऊं अकेली अबिला! रहमु त उल्यो मूं ते अव्हां खे करणु घुरिजे।

उमरु- (जोश मां उथी) मूं समुझियो। तूं हिन रीति बाजि न ईदीअं। (धमिकाए) मारुई! मां तोखे आखरीनि मोकओ थो डियां। जऱा सोचि, समुझु ऐं वीचार करि। हिक तरफ टुटल फिटल झूपिडी ऐं मिस्कीनि आहे, पर खिए तरफ मानु शानु ऐं बादशाही। बुधाइ, तुंहिंजो छा इरादो आहे?

मारुई- मुंहिंजो इरादो अटलु आहे ए सूमरा! समुंड में रहंदे बि सिप सदाई बादल जे बूंद लाइ प्यासी रहंदी आहे ऐं भुलिजी बि समुंड जो खारो पाणी कोन चखंदी आहे। मां अज़ल खां खेत जी आहियां ऐं खेत जी थी रहेंदियसि।

उमरु- (गुस्से विचां) बसि बसि! बंदि करि पर्हिंजी बेलगाम ज़बान। यादि रखु मारुई! मां हिन मुल्क जो मालिकु आहियां, इनकरे जेकी चाहियां, सो करे थो सघां।

मारुई- (डिजी) छा मतिलबु?

उमरु- जो कमु नर्मीअ सां न थी सघे, उहो सख्तीअ सां पूरो करे सधिजे थो। (उमरु मारुईअ डु वधे थो)

मारुई- (पुठियां हटी) दूरि हटु! पापी!! शेतान!!!

उमरु- खामोशु।

मारुई- (हथ जोडे, आकास डु निहारे) आह! द्रोपदीअ खे बचाइण वारा प्रभू, मदद करि! मूं अबिला जो सहाइ थीड। आह! परमात्मा!! परमात्मा!!! (बेहोशु थी किरे थी)

उमरु- (अलिबति घबिराइजी) मारुई! मारुई!! छा बेहोशु थी वेई? (यकायकि कमरे में ऊंदहि छांइजी वजे थी ऐं उन सां गडोगडु तूफान जा भयानक घूटाट ऐं बादलनि जी दिलि डुरांदड गजगोड़ बुधण में अचे थी। ओचितो हिकु भारी धकाउ थिए थो ऐं कमिरे जे हिक कुंड में न्याय जी रुद्याली तस्वीर नज़रि अचे थी, जंहिंजे हथ वारी साहिमी लुडी रही आहे।

उमरु- (छिर्की) या खुदा! या खुदा!! हीड कहिडो इसरारु। (न्याय खे डिसी) तूं केरु?

न्याउ- न्याउ आहियां, इंसाफु आहियां....

उमरु- इंसाफु? मगरि हिति अचण जो सबबु?

न्याउ- उमर! तोखे डुखारणु थो चाहियां त तुंहिंजीअ हुकूमत में इंसाफ जे ताराज़ीअ में केडी न काणि पड्जी चुकी आहे। ए सूमरा! हाकिमु रइयत जो एविजी आहे ऐं संदसि सभ खां वडो फ़र्जु आहे रइयत जो पूरो पूरो इंसाफु करणु। पर तो त मूंखे ठुकिराए छडियो आहे।

उमरु- (अलिबति घमंड विचां) त छा थी पियो? तोखे बणाईदड ऐं हलाईदड बादशाह ई थींदा आहिनि। तूं त मुंहिंजे हथनि जो रांदीको आहीं इंसाफ! वणेमि त तोखे ठाहे रखां, वणेमि त तोखे डाहे छडियां।

न्याउ- अफ्सोसु! निहायत वडी भुल थो करीं उमर। इंसाफु हाकिमनि जे हथनि जो रांदीको न पर ईश्वरी अमानत आहे। यादि रखु त बादशाहनि जे इंसाफ खां वधि कुदरत जो इंसाफु आहे। ए सूमरा! परमात्मा जे न्याअ जी चक्की आहिस्ते हली रही आहे, पर कोबि अत्याचारी उन में पीसिजण खां बची न सधियो आहे।

उमरु- (मगिरुरीअ विचां) बसि बसि, ज़बान बंदि रख्या। वजु मुहिंजीअ नजर खां दूरि थी।

न्याउ- वजां थो मगरि ए मूर्ख! कल अथेई त मुहिंजे वजण खां पोइ छा थींदो?

उमरु- छा थींदो?

न्याउ- तुहिंजीअ हुकूमत में अन्याउ अची पर्हिंजो देरो दमाईदो ऐं पोइ सारे देश में अशांती ऐं बग़ावत फहिलिजी वेंदी। (धकाड थिए थो, न्याअ जी ख़्याली तस्वीर अंधेरे में ग़ाइबु थी वजे थी, पर साग्रिए वक्ति कमिरे जे ब्रीअ कुंड में शांतीअ जी ख़्याली तस्वीर ज़ाहिरु थिए थी।

उमरु- (सोच विचां) छा अशांती ईंदी? बग़ावत थींदी? (शांतीअ खे डिसी) तूं केर?

शांती- मां शांती आहियां।

उमरु- मगरि तूं उदासु ऐं परेशानु छो आहीं?

शांती- उमर! तुहिंजे राजु में जो अन्याउ ऐं अत्याचारु फहिलिजी रहियो आहे, मां उन खां घबिराइजी रही आहियां। ए सूमरा! छा तोखे कल कान्हे त अन्याउ ऐं अत्याचारु फहिलिजण सां छा थींदो?

उमरु- छा थींदो?

शांती- मां हितां हली वेंदियसि ऐं अशांती तुहिंजे मुल्क जे हर कुंड कुडिछे में रिणु ब्रारे डींदी।

उमरु- (घमंड मां) अशांती? अशांतीअ ऐं बग़ावत खे मां पर्हिंजीअ ताकत सां दबाए छडींदुसि।

शांती- कहिडो न गुहेलो आहीं, उमर! दबाअ ऐं ज़ेरीअ सां त बग़ावत जी बाहि हेकारी भडिका खाई उथंदी ऐं उनसां गडोगडु ईंदो विनाशु... बर्बादी।

उमरु- विनाशु?... बर्बादी? (धकाअ थियण सां शांतीअ जी ख़्याली तस्वीर गुमु थी वजे थी ऐं कमिरे जे टीअं कुंड मां विनाश जी कारी हैबतनाकु सूरत ज़ाहिरु थिए थी)।

विनाशु- (भयानकु ठहकु डेई) हा हा हा हा! मां ईंदुसि, मां आहियां विनाशु। हर चीज़ जे हस्तीअ खे मिटाईदो मां अग्रिते वधंदो आहियां। मुहिंजे अचण सां हर तरफ़ हाहाकारु मची वेंदो आहे। (गोड़ घमसान जो आवाजु थिए थो) मुहिंजे हिक ई हुंकार सां कहिरी तूफान उभिरी उथंदा आहिनि। (तूफान जो शोरु बुधण में अचे थो)। मुहिंजे क्रोध सबबु सृष्टीअ जे कण कण मां आगि जा शुइला भडिकी उथंदा आहिनि ऐं चौतर्फ़ि आगि जा उला नज़रि अचनि था) ऐं मुहिंजे कदमनि जे भारी बोजे खां डिजी ज़मीन ख़्याहि आसमानु थर-थर कंबणु शुरू कंदा आहिनि। हा हा हा हा।

(गजगोड़ जहिडो भयानकु ठहकु डेई विनाशु ग़ाइबु थी वजे थो)।

उमरु- (खौफ विचां वाको करे) या खुदा! या खुदा!! मदद! मदद! उफ! मुहिंजो सिरु चकर खाई रहियो आहे! मां छा करियां? छा करियां?... (कमिरे जे चोथींअ कुंड मां तेजु तजिले सां गडु उमर खे बुद्धीअ जी ख्याली सूरत नज़रि अचे थी)।

बुद्धी- घबिराइ न उमर! मुहिंजो सहारे वटु। मां आहियां बुद्धी या अकुलु। जडुहिं इंसानु मुहिंजो साथु छडे डिए थो, तडुहिं ई विनाशु अचे थो। मुहिंजी सलाह मजु सूमरा! जॉहिं अबिला ते तो अत्याचारु कयो आहे, हाणे उन सां पूरो पूरो इंसाफु करे, पहिंजे अखियुनि तां अज्ञान जो पदो हटाए छडिं। (बुद्धीअ जी ख्याली सूरत गुमु थियण सां सारो कमिरो वरी रोशनीअ सां ब्रह्मिकी थो उथे)।

उमरु- (अजब विचां अखियूं महिटे) आह! हीउ सभु छा हो? ख्वाबु हो या मुहिंजे नापाकु दिलि जो ख्याली जुनून? (पिशेमानीअ विचां सिरु झुकाए) अफ्सोसु! मूं केडो न भारी गुनाहु कयो आहे। हाकिमु थी हिन गरीब औरत ते जुल्मु! हेडो सितमु!! या खुदा! मूंखे माफु करि। (गोडुनि भरि झुकी सजदो करे थो। आह! गुनाह जी सज़ा त मूंखे मिली चुकी आहे, हाणे बाकी छा करियां? (थोरो सोचे) हा! वेचारीअ मारुईअ खे आजादु करियां ऐं...

मारुई- (सुजागु थींदे) हाय! ज़ालिम मुहिंजा बंद टोडिं! मूंखे आजादु करि।

उमरु- (नरमाईअ विचां) मारुई! मारुई!! होशु संभालि मारुई! अखियूं खोलि मारुई!

मारुई- (अखियूं खोले) केरु तूं? (डप विचां) न न मां तुहिंजी राणी न थींदियसि। मां मरी वेंदियसि, पर मारुनि खां मुंहुं न मर्टींदियसि।

उमरु- सबुरु करि। सबुरु करि। मां तोखे पहिंजी राणी न मगरि...

मारुई- मगरि छा?

उमरु- मां तोखे पहिंजी भेणु बणाइणु थो चाहियां!

मारुई- (हैरत मां) छा भेण?

उमरु- हा, मारुई! पहिंजे नफ्सानी ख्वाहिशुनि जे वसि थी, मूं तोते वडो जुल्मु कयो आहे! (गोडा खोडे ऐं हथ जोडे) हाणे मूंखे माफु करि मारुई!

मारुई- (वाइडुनि जियां) ही मां छा थी बुधां! छा पेई डिसां!

उमरु- छा चवां मारुई! मुहिंजे अखियुनि तां अंध जा पर्दा हटी चुका आहिनि! मुहिंजे गुनाहनि जी सज़ा मूंखे मिली चुकी आहे। उथु मारुई! मूंसां गडु हलु।

मारुई- केडुहं?

उमरु- मलीर। हलु, मां तोखे पाण सां गडु वठी मलीर हलंदुसि। उते तुहिंजे मारुनि खां हिन गुनाह जी माफी घुरंदुसि ऐं पहिंजे हथनि सां तुहिंजी शादी खेतसेन सां कराईदुसि।

मार्झ- (सरही थी) सचु!
 उमरु- बिल्कुलु सचु!
 मार्झ- (खुशि थी) उमर! मुहिंजा भाड़!
 उमरु- मार्झ! मुहिंजी भेण!

नवां लफ़्ज़ :

मढे = भरणु	मिस्कीन = गरीब
रईयत = प्रजा	अबिला = वेचारी
दिलि डुरींदड़ = दिलि दहिकाईदड़	डुथ ऐं डुंगरा = जंगली खाधा
बग़ावत = ख़िलाफ़त	नापाक = अपवित्र
जुनून = कंहिं कम जो नशो या लगन	

❖ अभ्यास ❖

- सुवालु 1. उमर मार्झअ खे छो कैद कयो?
 सुवालु 2. मार्झअ उमर जे कोट में कीअं गुज़ारियो?
 सुवालु 3. उमर मार्झअ खे कहिडे कारण आज़ाद कयो?
 सुवालु 4. मार्झअ जी सीरतनिगारीअ ते मुख्तसर रोशिनी विज्ञो।
 सुवालु 5. हिन एकांकीअ में कहिडे संदेश डिनल आहे?



मुल्हु

- हरी हिमथाणी

लेखक परिचय-

हरी हिमथाणीअ जो जनमु नवाबशाह जिले में 1933 ई. में थियो आहे। हिन वक्त ही साहिब अजमेर राजस्थान में रहंदो आहे। सिन्धी अदब में नसुर जे खेतर में हिन साहिब केतिरियूं ई कहाणियूं ऐं नॉविल लिखिया अथसि। साहित्य अकादमी इनाम बि हासिल करण जो शार्फु अथसि।

हूअ अक्सरि सुबूह ऐं शाम पहिंजे घर जे बाहिरिएं दर ते चाउंठ वटि वेठी नज़रि ईदी हुई। झुरियल डुबुरी डील ते मेरांजिडो सन्हिडो चोलो ऐं उन खां बि वधीक मेरो पडो। मुफ़्लिसी रुगो कपिडनि मां ई न पर मुंहं मां बि पेई बखांदी हुई। घिटीअ जे मोड़ वटि मकान हो, जितां अजयनगर खां स्टेशन तरफ वेंदड़ रस्तो दरियाह वांगुरु नज़रि ईसो हो। कडुहिं त आमदरफ़त जे लहरुनि में काफी उथल ईदी हुई। मोटरूं, बसियूं, साईकिलूं ऐं टांगा वहंदा वेंदा हुआ ऐं माण्हुनि जे मथनि जो त को अतो पतो ई न हूंदो हो। सुबूह, शाम अहिडो लकाउ पसंद पहिंजे जीउ बहिलाइण जो शायद संदसि इहो हिकु ई वाहिदु हो। या वक्ते घिटीअ मां लंघंदड़ पाड़ेसिरियुनि डांहुं निहारे खेसि पहिंजे जिंदह हुअण जो अहसासु थंदो हो। पर अजबु त इहो, संदसि दर वटां लंघंदे ई डांहुंसि निहारींदे कडुहिं कंहिं भुलिजी बि साणुसि ब्रू बोल न ग्राल्हाया हुआ। हूअ कंहिं जे ग्राल्हाइण लाइ डाढो सिकंदी हुई। रुगो खांउसि एतिरो ई को पुछे, अमड़ि कीअं आहीं? या हरी ओम ई चवे। पर न, साणुसि जुणु कंहिंजो बि वास्तो न हो। हूअ धारी हुई कॉलोनीअ वारनि लाइ। कॉलोनीअ खां बिनह अलगि थलगि। हा कोई साणुसि ग्राल्हाईदो हो त उहो खीर वारो ई हो।

खेसि इहो डुदु हो त हू भेरो कीन भजंदो। सालनि खां थेत हुई। वेचारो निभाईदो थे आयो। न त कमर टोड़ महंगाईअ में पाउलीअ या आधिये जी कहिडी विथ? पर मिस्कीन कडुहिं बिड़क बि न ब्रोली हुई अजु ताई। ब्रियो ई हूअ रुंग ते रिंज किञ्च कंदी हुअसि। इहा संदसि रोज़ जी आदत हुई। “मुआ मारिया कुशादी दिल रखु, माउ खे डिने खुटी कोन वेंदे, हमेशह भरियो रहंदे। चांहि पीअदे तोखे डिगु दुआऊं कंदी आहियां। तूं ई त आहीं जो सार लहीं थो, न त जेकर चांहि पीअण खां बि सिकां।” इएं चवंदे हूअ उन वक्ति बि आसीसुनि सां संदसि झोली भरे छडींदी हुई।

“अमड़ि, भग्वान अलाइ कंहिंजे भागिए थो डिए।” हिक लडा चयाईसि, “अमड़ि, तूं हीउ अठ आना बि भली न डेवा।”

“छा थो चवीं! तोखे ही अठ आना बि न डियां?” पोढ़ीअ जो अजब मां वातु फाटी वियो हो।

“हा अमडि, तूं समुझीं थी त मां तोखे अठे आने जो खीरु थो डियां? तूं मूं लाइ नानीअ समान आहीं। अमडि जी बि अमडि!”

“तुंहिंजी अमडि जी बि अमडि आहियां!” पोढ़ीअ ठहकु डेर्ड खिली डिनो हो, “हाणे त चवीं थो पर पोइ चाहि पीअण खां बि सिकाईदे। न बाबा न, तूं अठ आना बदिरां रुपयो वटु। छातीअ ते पथरु रखी तोखे रुपयो बि डर्दसि पर तूं मूं वटि रोज़ ईदो करि। चांहि मूं लाइ जियापो आहे। जेहिं डर्दुं न पीअंदसि, उन डर्दुं खट वठी पइजी रहंदसि।”

पोढी वक्ते पाण मथां फटकार बि विझंदी हुई त खसीसु रुंग काण हूअ कींअं न पाण खे असहाय ऐं अधीन बणाए थी छडे। अगुलो छा समुझंदो त मंझिसि रुपये डियण जी बि तोफीक कान्हे!

उते ई वरी अहिडो ख्यालु बि ईदो होसि, भली केरु कुझु बि समुझे, इन तरह अगर हूअ थोरे की बचाए सघे थी त उन में कहिडी अरबा खता।

थधि जी शुरुआति वारनि डर्दंहनि में पोढी बीमार थी पेर्ई। कापारी बुखार खेसि इन तरह निसतो निब्रुलु बणाए छडियो जो उथण विहण खां लाचारु। पेशाब जा चादर ते दण्ण ज़ाहिरु पिए डिठा। खेसि पतो न पियो हो। काकूसु बि सुथण अंदरि सुकी वियो हो।

संदसि भाइटियो अशोकु टिएं चोर्थे महीने जयपुर मां अची संदसि सार संभाल लही वेंदो हो। हिन डाढो जोरु भरियो होसि त हूअ साणुसि गडु हली रहे। उते संदसि टहिल टकोर में का कमी कान रहंदी, बल्कि बारनि विच में विंदुरी पेर्ई हूंदी। पर न, पर्हिंजो घरु छडे बिए हंधि रहण लाइ खेसि पसर्दि न हो। छाजी विंदुर? धणी खेसि पर्हिंजे पेरं सेरे हलाए बाकी हूअ कंहिंजे बि मथां बोझु बणिजी रहण लाइ तैयार न हुई। हूअ ज़माने जे हवा खां बखूबी वाकुफु हुई ऐं हित खेसि कहिडी गालिह जी कमी हुई। बिए कंहिं खे कहिडी कल त कंहिंजो कहिडीअ गालिह में साहु हूंदो आहे? घर जी कुंड कुंड में संदसि यादिगीरियूं पखिडियल हुयूं। उन्हनि अमुल्ह माणिकनि जो हेडो सरमायो छडे किथे धिका खाईरी! पर्हिंजो घरु गुरुअ जो दरु। जीअं संदसि पतीअ जो मडु हिन चाउंठ खां ब्राहिरि निकितो हो, तीअं संदसि बि निकिरंदो। बाकी रही बुढापे जी पीढ़ा, सो इहो सिरापु त हर प्राणीअ खे वर्से में मिलियलु आहे।

“न बाबा, न बुचिडा, मां हिते हर तरह खुशि आहियां। माणहू आहिनि जो अलाए किथे किथे रहिया पिया आहिनि। मां त पर्हिंजे घर में आहियां, जेको हुननि बडनि अरमाननि सां जोडियो हो। मुंहिंजा बि त के अरमान हूंदा न पुटा!” इएं चई खेसि लाजवाब बणाए छडींदी हुई। पर कडुहिं कडुहिं खेसि असहाय, अब्राली हालत में डिसी अशोक चवण खां सवाइ रही न सघंदो हो। लेकिन मोट में

खेसि उहो ई बुधिणो पवंदो हो। हिक दफे अशोक मुर्की चयो, “बुई, मां तो वटि अची रहां?”

पोढ़ीअ टहकु डेर्इ खिली डिनो हो। हिक खिण लाइ संदसि अखियुनि में चमक अची वेर्इ ऐं इहो जाताई थे त अशोकु चर्चो करे रहियो हो। बिए पल गंभीर थी चयो हुआई, “न पुट, तूं मुहंजे करे सज्जो कारोबारु समेटे मूं वटि अची रहंदें? इहा अणथियणी आहे!”

“पोइ तूं हलीं छो नथी!”

“सो त बराबर, पर जो सचु आहे तंहिंखे त मिटाए नथो सघिजे न पुट! तूं जेतिरी जीअरे सार लहीं थो, चाहियां थी त तुंहंजो कुल्हो नसीबु थिएमि... ऐं नसीब में अलाए छा लिखियलु आहे पुट!” इएं चवंदे पोढ़ीअ जे गले में जणु कुद्धु अटिकी पवंदो हो। हिन नथे चाहियो त अशोकु संदसि गोढ़ो बि डिसी सघे। न त चवंदुसि, “तूं रोई थी बुई?” हिन पंहिंजे अखियुनि में आंसूं सुकाए छडिया हुआ। केरु भली पंहिंजा आसूं सुकाए छडे पर उन सां दुखु त नथो लिकी सघे।

अशोक पंहिंजे दोस्त मोहन ते इहो कमु रखियो हो त महीने जी पहिरीं तारीख सीधो सामानु वठी खेसि पहुचाए ऐं इएं बि हफ्ते अध संदसि सार लहंदो रहे।

मोहनु कुद्धु डींहर्नि लाइ हैदराबाद दखन वजी रहियो हो जो उन शाम जो हूं पोढ़ीअ वटि आयो हो। पोढ़ीअ जी हीअ दुर्दशा डिसी विस्मय में पइजी वियो। काल्ह खां जीअं ब्राह्मियों दरु खुलियो पियो हो त खुलियो ई पियो हो। हवा जे तेज़ झांके ते खुली वरी कंहिं खिन ब्रेकिंडिजी थे वियो। खीर वारो आयो हो, विरांडे में संदल ते रखियल लोटे में खीर ओते पुछियाई, “छो अमां चाकु त आहीं न?”

“अबा डुबिरे शरीर जा कहिडा हाल? सीउ तपु थी पियो अथमि। सिजु चढे त को शरीर में सघ पवे। पुट पैसा सुभाणे डींदींसाइं।”

“अमां, तोखां घुरे केरु थो?”

“अबा, पंहिंजनि जा इहे त फर्ज आहिनि!” पोइ भुणिकी चयाई, “पाई पाई चुकाए डींदींसाइं।”

मोहन पोढ़ीअ जे पेशानीअ ते हथु रखियो त छिर्की वियो, “तोखे त मच बुखारु आहे!”

“पुट आहे त मां छा करियां, लही वेंदो।”

“तूं छा करीं?” मोहन ते वातां इएं निकिरी वियो पर पोइ बिए पल खेसि झोब्रो आयो, बराबर हीअ बेवसि कंदी बि छा? रात वारीअ गाडीअ में खेसि वजिणो हो। हेडांहुं पोढ़ीअ खे अहिडी हालत में अकेलो छड्णु बि ठीकु न हो। बियो न त कडहिं पाणी ई घुरंदी, चाहि चुकडीअ जी तलब थींदसि। दवा बि खेसि केरु पीआरींदो? डाक्टर खे त हूं वठी ई ईदो। पाण ब्राह्मि न वेंदो हुजे हा त... उते ई मन में हुरयुसि, वजण जे करे ई त हूं हित आयो हो। पोढ़ीअ जो हालु डिसी हिकवार सज्जो घरु

ਸੰਦਸਿ ਅਗਿਆਂ ਘੁਸੀ ਕਿਧੋ ਹੋ। ਹਿਨ ਡਿਠੋ ਤ ਚਾਦਰ ਤੇ ਚਿਟਾ ਚਿਟਾ ਹੁਆ। ਸਵਾਡਿ ਹਟਾਯਾਈ ਤ ਧਪ ਜੀ ਅਹਿਡੀ ਤਕੁ ਤਥੀ ਜੋ ਤਤੇ ਬੀਹਣੁ ਦੁਸ਼ਵਾਰੁ ਹੋ। ਜਾਤਾਈ ਤ ਪਾਫ਼ੀਅ ਜਾ ਕਪਡਾ ਕਿਨਾ ਥੀ ਚੁਕਾ ਹੁਆ, ਪਰ ਤਹੇ ਕੀਅਂ ਮਟਿਬਾ, ਕੀਅਂ ਹਿਨਜਾ ਲਿਡ ਉਥਿਭਾ? ਖੇਂਸਿ ਸਾਫ਼ ਸੁਥਿਰੇ ਕਰਣ ਖਾਂ ਪਾਇ ਈ ਤ ਹੂ ਡਾਕਟਰ ਖੇ ਆਣੇ, ਹਾ ਹਿਨ ਲਾਇ ਕੀ ਮਾਜਰਾ ਹੁੰਈ।

ਪੱਹਿੰਜੀਅ ਜਾਲ ਖੇ ਸੰਭਤ ਵਾਰਿਯੁਨਿ ਖੁਸ਼ਨੁਮਾ ਘਡਿਧੁਨਿ ਮੌਨ, ਨਕਾ ਮੌਨ ਗਿਹਲਣ ਲਾਇ ਤੈਧਾਰੁ ਨ ਹੋ। ਅਗਰ ਹੂਅ ਮਜੀ ਬਿ ਕਰੇ ਤ ਜਿੰਦਗੀਅ ਭਰ ਜੋ ਭੋਗਣੋ? ਤੋਬਹ ਤੋਬਹ! ਹੀਡ ਤ ਹਥੁ ਵਠੀ ਜਾਲ ਖੇ ਡੁਭੁ ਡਿਧਣੋ ਹੋ। ਖੇਂਸਿ ਬਾਲੀਸ਼ਾਹਣ ਜੋ ਧਾਨੁ ਆਓ। ਫਿਲਹਾਲੁ ਤ ਖੇਂਸਿ ਸਾਡੇ, ਸਾਫ਼ ਸਫ਼ਾਈ ਕਰਾਏ ਛਡੇ। ਵਕਤੁ ਥੋਰੇ ਹੋ ਏਂ ਕਮੁ ਝਲਾਹੀ। ਮੋਹਨ ਖੇ ਭਰੇਸੋ ਹੋ ਬਾਲੀਸ਼ਾਹਣ ਖੇ ਰਾਤ ਰਹਣ ਲਾਇ ਚਵਾਂਦੇ ਤ ਬਿ ਹੂਅ ਇੰਕਾਰੁ ਕੋਨ ਕੰਦੀ। ਓਖੀਅ ਸੌਖੀਅ ਹੂਅ ਮੋਹਨ ਅਗਿਆਂ ਮਦਦ ਲਾਇ ਹਥੁ ਡਿਘੇਰੀਂਦੀ ਹੁੰਈ ਏਂ ਹੰਅਰ ਬਿ ਜੇ ਖੇਂਸਿ ਸੌ ਅਧੁ ਡੁੱਈ ਛਡੀਂਦੇ ਤ ਹੂਅ ਬੁਫ਼ੀਅ ਖੇ ਦੁਆਊਂ ਬਿ ਕੰਦੀ।

ਬਾਲੀਸ਼ਾਹਣ ਬੁਫ਼ੀਅ ਜੀ ਸਫ਼ਾਈ ਕਰੇ, ਗਰਮ ਪਾਣੀਅ ਸਾਂ ਸੰਦਸਿ ਲਿੰਡ ਤਥੀ, ਕਾਗੇ ਮਟਾਏ, ਸਾਫ਼ ਸੁਥਿਰੇ ਹੱਧ ਤੇ ਲੇਟਾਏ, ਮਥਾਂ ਸਵਾਡਿ ਵਿਧੀ ਤ ਬੁਫ਼ੀਅ ਜੇ ਸਾਹ ਮੌਨ ਜੁਣੁ ਸਾਹੁ ਪਿਧੀ ਹੋ।

ਕਾਗੇ ਕਢਣ ਕਾਣ ਮੋਹਨ ਜੀਅਂ ਤੀਅਂ ਬੁਫ਼ੀਅ ਖਾਂ ਕੁੰਜੀ ਵਠੀ ਕਬੂਟੁ ਖੁਲਿਯੋ ਤ ਸੰਦਸਿ ਹੈਰਤ ਜੀ ਹਦ ਨ ਰਹੀ। ਛਾ ਤ ਤਨਮੌਨ ਚਾਦੁਰੁਨਿ ਜਾ ਸੇਟ, ਟੁਵਾਲ ਏਂ ਕੀਮਤੀ ਕਾਗੇ ਹੁਆ, ਜਿਨ੍ਹੇ ਬੁਫ਼ੀ ਰੁਗੇ ਡਿਸੰਦੀ ਈ ਹੂਂਦੀ। ਕਬੂਟ ਜੋ ਹੇਠਿਧੀ ਹਿਸੋ ਕਾਂਚ ਏਂ ਚੀਨੀਅ ਜੇ ਬੰਤਨਨਿ ਸਾਂ ਸਥਿਤਲੁ ਹੋ। ਸ਼ਾਯਦ ਤਹੇ ਸਿੰਧੁ ਮਾਂ ਆਂਦਲ ਥੇ ਡਿਠਾ, ਕਰਨ੍ ਚਿਟਸਾਲੀਅ ਜੀ ਅਜੁਕਲਹ ਰੁਗੇ ਕਲਪਨਾ ਈ ਕਰੇ ਥੀ ਸਥਿਰੀ।

ਜਿੰਦਗੀਅ ਜੀ ਇਹਾ ਕੇਡੀ ਨ ਵਿਡਮਿਨਾ ਆਹੇ ਜੋ ਕੇਰੁ ਕੀਅਂ ਸ਼ਾਯੁਨਿ ਖੇ ਸਾਹ ਮੌਨ ਥੋ ਸਾਂਡੇ। ਖੁੱਦਿ ਈ ਨਥੀ ਵਾਪਿਰਾਏ ਪਰ ਤਨਨਿ ਤੇ ਮਾਲਿਕਪਣੇ ਜੋ ਹਕੂ ਕਿਨਿ ਬਿਧੁਨਿ ਜੋ ਤਕਿਰਿਧੁ ਆਹੇ। ਬਾਲੀਸ਼ਾਹਣ ਜੇ ਅਖਿਧੁਨਿ ਅਗਿਆਂ ਖੁਲਿਯਲ ਕਬੂਟ ਜੋ ਮੰਜ਼ਰੁ ਪਿਏ ਘੁਸਿਯੋ। ਕਬੂਟ ਜਾ ਬੰਦ ਤਾਕ ਬਿ ਬਾਲੀਸ਼ਾਹਣ ਜੇ ਅਖਿਧੁਨਿ ਅਗਿਆਂ ਜੁਣੁ ਖੁਲਿਯਲ ਰਹਿਜੀ ਕਿਧੀ।

ਮੋਹਨੁ ਡਾਕਟਰ ਖੇ ਵਠੀ ਆਓ। ਡਾਕਟਰ ਇੰਜੇਕਸ਼ਨ ਹਣੀ, ਹਿਦਾਯਤ ਕਰੇ ਕਿਧੀ ਹੋ, ਵਕਤ-ਸਿਰ ਦਵਾ ਏਂ ਗੋਰੀ ਡਿਧਣੀ ਹੁੰਈ। ਬਾਲੀਸ਼ਾਹਣ, ਮੋਹਨ ਜੇ ਅਧ ਚਾਏ ਤੇ ਬੁਫ਼ੀਅ ਵਟਿ ਰਾਤ ਰਹਣ ਲਾਇ ਕਬੂਲ ਕਿਧੀ, ਨ ਰੁਗੇ ਰਹਣ ਪਰ ਜੇਸਤਾਈ ਠੀਕੂ ਨਥੀ ਥਿਏ, ਸ਼ੇਵਾ ਟਹਲ ਕਰਣੁ ਪਿਣੁ ਕਬੂਲਿਯੋ। ਬੁਫ਼ੀ ਧਾਰੀ ਨ ਪਰ ਸੰਦਸਿ ਮਾਤ ਸਮਾਨ ਆਹੇ, ਅਹਿਡੀ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹਿਨ ਮੋਹਨ ਖੇ ਡਿਧਾਰਿਯੋ ਹੋ ਤ ਹੂ ਪੁਠਿ ਜੋ ਕੋ ਫਿਕੁਰੁ ਨ ਕਰੇ। ਮੋਹਨ ਕਰਣ ਖਾਂ ਅਮੁ ਅਸ਼ੋਕ ਸਾਂ ਫੋਨ ਤੇ ਬਿ ਗੁਲਵਾਹੀ ਹੋ ਪਰ ਇਹੋ ਗੁਲਵਾਹਿਣੁ ਸਿਰਫ਼ ਖੇਂਸਿ ਇਤਲਾਉ ਡਿਧਣ ਤਾਈ ਮਹਦੂਦੁ ਹੋ। ਅਹਿਡੀ ਤ ਹਿਨ ਬਿ ਨ ਲਖੀ ਹੁੰਈ ਤ ਰਾਤ ਕਿਚ ਮੌਨ ਕੁਝੁ ਬਿਧੀ ਈ ਥੀ ਗੁਜ਼ਰਿੰਦੇ।

ਸੁਭੂਹ ਤਾਈ ਬੁਫ਼ੀਅ ਜੋ ਸਰੀਰ ਥਥੀ ਥੀ ਕਿਧੀ। ਕੇਡੀ ਮਹਿਲ ਥਥੀ ਥਿਧੀ, ਕੇਡੀ ਮਹਲ ਪਖੇਡੂ ਤਡਾਮੀ ਕਿਧੀ, ਇਹੋ ਤ ਬਾਲੀਸ਼ਾਹਣ ਖੇ ਬਿ ਪਤੋ ਨ ਪਿਧੀ। ਹੂ ਬੁਫ਼ੀਅ ਜੇ ਵੇਡੀ ਵੇਈ ਈ ਕਿਥੇ ਹੁੰਈ? ਹਾ ਅਲਵਤ ਰਾਤ ਕਿਚ ਮੌਨ ਪੱਂਜ ਛਹ ਦਫ਼ਾ ਪੱਹਿੰਜੇ ਘਰ ਮੌਨ ਜੁਝੁ ਵੇਈ ਹੁੰਈ। ਬੁਫ਼ੀ ਸਾਂਸੇ ਸੁਖਾਲੀ ਵਠੀ ਥੀ ਹੁੰਈ, ਇਹਾ ਖੱਬਰ

ब्रालीशाहण वातां सज्जी कॉलोनीअ में परिषिड्जी वेर्इ। बस सभिनी रुग्गो बुधो। केरु डीओ ब्रारिंदो? केरु कानो, कफ्नु आणीदो या ब्राए ब्रांभण खे अचण लाइ चवंदो? कंहिंखे बि फ़िकुरु ओनो कोन हो। पोढ़ीअ जो मढु अंदरि कमरे में पियो हो ऐं ब्रालीशाहण ब्राहिरि विरांडे में भिति खे टेक डेर्इ ब्रीड़ी पिए छिकी। कड़हिं कड़हिं छठ छमाहीअ दूर जे रिश्ते जी का माई बुढ़ीअ वटि ईंदी हुई, पाढे मां किनि खे सुधि हुई। जाण मिलण ते हूअ बि अची पहुती हुई। दरवाजे वटि बीही हिन अंदरि लीओ पातो ऐं पोइ ब्रालीशाहण जे भर में वेही पाण बि सूटा भरण लगी। वात मां दूंहां कढण जी जणु ब्रालीशाहण सां शर्त थे पुजायाई।

“केडी महल गुजारे वेर्इ?”

ब्रालीशाहण जवाबु डिनो, “रात जो ब्रारहें बजे।”

“तोबह तोबह! केडी न भयानक हूंदी उहा घडी?... त उन वक्ति तूं संदसि भरिसां वेठी हुईअ?”

“तड़हिं बियो।”

“डाढी का हिमथ वारी थी डिसिजीं। मुहिंजो त जेकर...” इए चई बिए पल हूअ हुन डाहुं इए निहारण लगी, गोया हूअ हिन घर जो सभु कुझु लुटे वेर्इ हुजे।

“ही छा?” ओचितो हुन खां रडि निकिरी वेर्इ।

ब्रालीशाहण छिर्कु भरे पुछियो, “वरी छा थियो?”

“पाढे मां हिन महल ताई केरु बि न आयो आहे?”

“के आया हुआ, पर अजु आरतवार जे करे टीवीअ ते रामायण जो सीरियलु आहे, इनकरे ई को नजरि नथो अचे।” खिन रखी चयाई, “रात जो ब्रारहें वगे बि अहिडो ई सत्राटो हुयो, जीअं हींअर थी डिसीं।”

“तोबह! घोरु कलजुगु अची वियो आहे। मढे खे मागि त रसायो। न डीओ ब्रारियो आहे, न काठ कफ्नु आयो आहे। भला डिसां त घर में अन्न चपिटी आहे?” इए चई हूअ जणु सज्जे घर जी तलाशी वठी आई।

भुणु भुणु कंदे ब्राहिरिएं दर डांहुं वधी वेर्इ, “घिटीअ में कोई बि नजरि नथो अचे।”

“रामायण हलंदे केरु नजरि ईदो?” ब्रालीशाहण वराणियो, ऐं पोइ जणु हिन मथां जख खाईदे चयाई, “सभु कुझु थी वेंदो, तूं अची ब्रीड़ी छिकि।”

“पर मूँखे त उज लगी आहे।”

“पाणीअ जो मटिको भरियो पियो अथेर्ई।”

“माई खैरु घुरु, सूतकु लग्नु पाणी करे पीअंदो?”

ब्रालीशाहण चपनि में भुणुकियो, “त मरु उजा!” खेसि अलाए छो संदसि शिकिलि सूरत खाँ ई नफ़रत थी रही हुई।

टीवीअ ते रामायण सीरियलु पूरो थींदे ई, थमिजी वियल जिंदगी हरकत में अची वेई हुई। पहिरीं जियां हलचल ऐं कोलाहल बारो वातावरण।

पाडे वारा काई खणण जा सांबाहा कनि, तीहिं खाँ अगु अशोक बि अची पहुतो हो। घर बटि माणहुनि जो मेडाको डिसी डिज्जी वियो हो। घर में घिडियो त मथो चकिराइजी वियुसि, काई ब्रधिजी रही हुई।

हू ओछंगारूं डेर्ई रोए पियो, मोहन टेलीफोन ते खेसि अहिडे कुझ बि न बुधायो हो। पुफी शांत सुम्ही पैर्ई हुई, निर्जीव।

संदसि दिल विसामण लगी, इहो सोचे त अगर थोड़ी बि देर थिए हाँ त बुढीअ जो क्रियाकर्मु पंचायत बारा कराईनि हाँ ऐं जीअं थी रहियो हो, त इहो दुख उमिरि भरि कीन भुलाए हाँ।

कुझ अरिसो अगु बुढिड़ीअ खेसि घुराए मिट्टीअ जहिड़ी मेरी हड़ सौंपी हुआई, “हाणे हीअ मुहिंजे कहिडे कम जी? को धारियो जो खणी वजे, तोखे थी परतो करियां।”

अबलि त हू समुझी कोन सधियो पर जड़हिं हड़ खोले डिठाई त अखियूं चरखु थी वियसि। संदसि सुहागु जी सजी साहि हुई उन में ब्राहिरां केड़ी मेरी ऐं अर्दिरां केड़ी चमकंदड़!

“हेडो सारो सोनु !! समुझीं थी बुई हिनजी कीमत केतिरी आहे?”

“मूँखे कहिड़ी ख़बर? पुट, जेतिरी बि आहे, तुहिंजी आहे। मां हीअ हड़ तोखे थी परती करियां। कुटम्ब में मुंहंजो भला बियो केरु आहे? हिननि खे डाढी खुशी थींदी हुई, जड़हिं मां हीअ साहि पाईंदी हुअसि। मूँखां त तूं इहो पुछु त यादगीरियुनि जो मुल्हु छा थींदो आहे? तोखे कल कान्हे पुट, तोखे कल कान्हे।”

मसाण मां जड़हिं मोटिया त अशोक ओछिगारूं डेर्ई रोई डिनो। वाण जूं छिगुल ब्र खटूं मेरो हंधु, मेरा कपिडा। हरिका चीज़ मेराण डांहुं माइलु।

आसमानु बि मेराँझिडो। जणु सभु कुझु संदसि लाइ मेरो ऐं मिट्टी बणिजी वियो हो।

घर में सताहो पाटु साहिबु रखायो वियो ऐं ब्रारहे जो क्रियाकर्मु वडी श्रद्धा ऐं जुगितीअ सां पूरो थियो। शाम ताई भंडारो पिए हलियो। ब्राह्मण ख़वाहि पाठीअ खे एतिरो की मिलियो, जंहिंजी हुननि कल्पना बि न कई हुई। ब्रालीशाहण जो बि खैरत सां पलांदु भरिजो वियो। अशोक खीर वारे खे बि

ਕੋਨ ਵਿਸਾਰਿਥਾ, ਜੇਕੋ ਈ ਹਕੀ ਮਾਨਾ ਮੌਂ ਬੁਢੀਅ ਜੋ ਘਣਘੁਰੋ ਹੋ।

ਕੱਲੋਨੀਅ ਵਾਰਨਿ ਜੂਂ ਵੇਤਰਿ ਤੁੰਦੇਂ ਆਡੁਰਿਯੁੰ ਲਗੀ ਵੇਧੁਂ, ਜਡੁਹਿੰ ਡਿਠਾਊਂ ਤ ਬੁਢੀਅ ਜੀ ਜਾਇ ਜੇ
ਲਗੋਲਾਗ੍ਨੀ ਭ੍ਰਾਂ ਜਾਇ ਖੁਰੀਵ ਕਈ ਵੇਈ ਏਂ ਤਤੇ ਬੁਢੀਅ ਜੇ ਨਾਲੇ ਧਰਮਸ਼ਾਲਾ ਏਂ ਪਹਿਰਿਏ ਮਾਡੇ ਤੇ ਕਡੋ ਸਤਸੰਗੁ
ਹਾਲੁ ਠਹੀ ਰਹਿਯੋ ਹੋ।

ਨਵਾਂ ਲਫ਼ਜ਼ਾਂ :

ਚਾਉਂਠਿ = ਚੌਖਟ

ਤੁਬਿਰੀ = ਕਮਜ਼ੋਰ

ਘੜੀ = ਵਕਤੁ

ਕਾਕੁਫੁ = ਜਾਣਦੁ

ਦੁਰਦੀਆ = ਖੁਰਾਬੁ ਹਾਲਤਿ

ਵਾਪਰਾਏ = ਇਸ਼ਟੇਮਾਲੁ ਕਰੋ

ਬੁਈ = ਬੁਆ (ਪੁਫੀ)

❖ ਅਭਿਆਸ ❖

ਸੁਵਾਲੁ 1. ਹੇਠਿਧਨਿ ਸੁਵਾਲਨਿ ਜਾ ਜਵਾਬ ਹਿਕ ਸਿਟ ਮੌਂ ਡਿਧੋ :-

- (1) ਅਠ ਆਨਾ ਅਮਾਂ ਕਿਹਿੰ ਖੇ ਤੁੰਈ ਛਾ ਵਠਦੀ ਹੁੈ?
- (2) ਅਮਾਂ ਖੇ ਕਹਿੰਡੀ ਬੀਮਾਰੀ ਲਗੀ, ਛਾ ਇਲਾਜੁ ਕਿਆਈ?
- (3) ਅਮਾਂ ਜੇ ਭਾਇਟਿਏ ਜੋ ਨਾਲੋ ਛਾ ਹੋ ਏਂ ਕਿਥੇ ਰਹਂਦੇ ਹੋ?
- (4) ਅਸ਼ੋਕ ਜੋ ਦੋਸ਼ਤੁ ਕੇਰੁ ਹੋ ਏਂ ਕਿਥੇ ਵਜੀ ਰਹਿਯੋ ਹੋ?

ਸੁਵਾਲੁ 2. ਹੇਠਿਧਨਿ ਸੁਵਾਲਨਿ ਜਾ ਜਵਾਬ ਡਿਧੋ :-

- (1) ਮੁਲਹੁ ਕਹਾਣੀਅ ਮੌਂ ਅਮਾਂ ਬਾਬਤਿ ਪਹਿੰਜਾ ਕੀਚਾਰ ਲਿਖੋ।
- (2) ਅਸ਼ੋਕ ਖੇ ਅਮਾਂ ਸੇਵਾ ਬਦਿਲੇ ਛਾ ਡਿਨੋ, ਅਸ਼ੋਕ ਤਨਜੋ ਛਾ ਕਿਧੋ?
- (3) ਮੋਹਨੁ ਅਮਾਂ ਖੇ ਬ੍ਰਾਲਸ਼ਾਹਣ ਜੇ ਭਰੋਸੇ ਛੋ ਛਡੇ ਵਿਧੋ ਏਂ ਸੰਦਸਿ ਸੇਵਾ ਕੀਅਂ ਥੀ?
- (4) ਕਹਾਣੀਅ ਮਾਂ ਮਿਲਿਯਲੁ ਸਦੇਸ਼ੁ ਲਿਖੋ।

ਸੁਵਾਲੁ 3. ਹੇਠਿਧਾਂ ਹਵਾਲਾ ਲਿਖੋ :-

- (1) “ਅਮਡਿ, ਭਗਵਾਨੁ ਅਲਾਏ ਕਿਹਿੰਜੇ ਭਾਗੇ ਥੋ ਡਿਏ।”
- (2) “ਬੁਈ, ਮਾਂ ਤੋ ਕਟਿ ਅਚੀ ਰਹਾਂ।”
- (3) “ਹੇਡੋ ਸਾਰੇ ਸੋਨੁ!! ਸਮੜੀਂ ਥੀ ਬੁਈ ਹਿਨਜੀ ਕੀਮਤ ਕੇਤਿਰੀ ਆਹੇ?!”



श्रीमती सुंदरी उत्तमचंदाणी

— सम्पादक मंडल

श्रीमती सुंदरी उत्तमचंदाणी सिंधी साहित्य जगत जे चिमकंडड सितारिन मां हिक आहे। संदसि अफ्रिसानवी ऐं कलात्मक साहित्य में असलियत आहे। हिन जूं रचनाऊं निजी जांच पड़ताल ऐं अनुभव जो नतीजो आहिनि, जेके महज अभ्यास करण ऐं छंडछाण करण लाइ ई न पर पढण ऐं माणण लाइ बि आहिनि। हिन समाज जे विचोले तबिके जे जीवन जे पहिलुनि ऐं रंगनि खे छुहण जी कोशिश कर्दे, सरल सलीस ऐं रवानीअ वारीअ सिंधीअ में इज़्हार कयो आहे। हूअ न रुगो नामियारी लेखिका ऐं शाइरा आहे पर रेडियो, टी.वी. ऐं स्टेज आर्टिस्ट पिणु आहे।

संदसि जनमु 28 सितंबर 1924 ई. में हैदराबाद (सिंध) में थियो। संदसि पूरो नालो सुंदरी आसनदास उत्तमचंदाणी आहे। अटिकल 55 सालनि खां हूअ साहित्य जा घडा भरांदी पिए आई आहे। हीअ मशहूर साहित्यकार ए. जे. उत्तम (आसनदास उत्तमचंदाणी) जी पत्ती आहे।

सुंदरीअ प्राईमरी तइलीम शौकीराम चांडूमल म्यूनिसिपल स्कूल मां ऐं स्कूली तइलीम हैदराबाद जे तोलाराम गर्ल्स स्कूल मां हासिल कर्दी। अटिकल 18 वरहियनि जी उप्र में 1942 ई. में मैट्रिक पास कयाई। बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटीअ जे हॉस्टिल में रही उतां इंटर साइंस पास कयाई, पर कराचीअ जे मेडीकल कॉलेज में दाखिला न मिलण जे करे पढाई अध में छडियाई। किनि महीननि बइदि संदसि मालिणो श्री उत्तम सां थियो, जांहं खेसि पढण लाइ हिमथायो। तिनि डुर्हनि में हैदराबाद में को बि मेडीकल कॉलेज कोन हो। तांहं करे लाचार पढाई जारी रखण खातिर साधू वासवाणीअ जे खोलियल “मीरा” कॉलेज जे आर्ट्स फैकलटीअ में दाखिला वरिताई। इन रीति हिन बनारस यूनीवर्सिटीअ मां 1949 ई. में बी.ए. जो इम्तहान पास कयाई। विरहाडे बइदि किनि रसालनि खां पोइ सिंधी ऐं अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. जी डिग्री हासिल कयाई। तइलीमी अभ्यास पूरे थियण खां पोइ पहिंजे पतीअ जो साथ सहकार पाए हिन कुछ वक्त लाइब्रेरियन तौर, कुछ वक्त मास्तिरयाणीअ तौर पिण शेवाऊं डिनियूं। न सिर्फ एतिरो, पर हिन ऑफ़ीस में क्लर्कीअ जो पद बि माणियो ऐं आखिर में मुम्बईअ जे के. जी. खिलनाणी कॉलेज मां लेक्चरर तौर रिटायर कयाई।

सुंदरीअ खे नंदे हूंदे खां ई किताब पढण में डाढी दिलचस्पी हुई। सोरहनि सत्रहनि सालनि जी उप्र ताई ईंदे, संदसि वीचारनि में पुख्तगी आई। मथिसि भारत ऐं यूरोप जे किनि साहित्यकारनि जे

लिखणीअ जो असर पियो आहे। सुंदरीअ जा वडा ज्ञानी, ध्यानी ऐं पढियल हुआ। संदसि पिता ढोलूमल कपडे जो वापारी हो। सुंदरीअ जे डाडे ऐं पिता खे किताब खरीद करे पढण जो डाढो शौंकु हो। इनकरे संदसि कब्रुट किताबनि सां सथिया पिया हूंदा हुआ। सुंदरी वांदिकाईअ वक्त उते किताब पढऱ्यांदी हुई। किताबनि जे अभ्यास मंझिसि लिखण जो शौंक पैदा कयो। कराचीअ मां निकिरंदड़ स्त्रियुनि जी मैग़ज़ीन “साथी” लाइ खेसि जांइट एडीटर चॉडियो वियो। सुंदरीअ उन मैग़ज़ीन लाइ हिक रुसी कहाणी बि उलथो करे छपाई।

भारत जे विरहाडे खां ब्र-टे महीना पोइ सुंदरीअ जी शादी थी। हू कुछ असो पाकिस्तान में ई रहिया, पर जल्दु ई सियासी हालतुनि सबव सिंधु छडे इन्दौर में अची वसिया। शादीअ खां पोइ खेसि साहित्यक माहौल नसीब थियो ऐं हूअ साम्यवादी वीचारनि डांहुं माइल थी। साम्यवाद जे असर हेठि हिन भारत जे ग्रीबनि, मिस्कीननि जे सूरतहाल खे परखियो। ग्रीबनि जी बेवसी डिसी, संदसि दिल तड़पी उथी। हिन कलम खंयो ऐं दिल जे उधमनि खे तहरीकी रूप में इज़ाहरण शुरू कयो। संदसि पहिरीं रचना “मुंहिंजी धीउ” नाले लेख हो, जो 1946-47 धारे “साथी” मैग़ज़ीन में छपियो।

“सिंधी साहित्य मंडल” मुम्बई 1949 में बरपा थियो। तंहिं वक्त जा नामोर तोडे नवां लेखक ऐं शाइर मंडल तरफां हलंदड़ हफ्तेवार अदबी क्लासनि में ईदा हुआ, जिते अण-छपियल रचनाऊं पढियूं वेदियूं हुयूं। उन्हनि ते सिहतमंद तनकीद थींदी हुई। सुंदरी बि पर्हिंजे जीवन साथी उत्तम सां गडु उन्हनि अदबी क्लासनि में वजण लगी, जितां कहाणीअ जे फ़न बाबत घणो कुछ पिरायाई। पहिरीं हिन जुदा जुदा भाषाउनि जे तरकी पसंद लेखकनि जे कहाणियुनि जा तर्जुमा कया ऐं पोइ असुलोकियूं कहाणियूं शुरू कयूं। “नई दुनिया” मैग़ज़ीन खेसि साहित्यक क्षेत्र डांहुं विख वधाइण में काफ़ी मदद कई। “नई दुनिया” खां सवाइ संदसि लेख ऐं कहाणियूं हिंदवासी, मार्स्ट, संगीता, हलचल, अलका ऐं केतिरानि बियनि रसालनि में शाया थींदा रहिया, जिनि खेसि काफ़ी लोकप्रियता डिनी।

श्रीमती सुंदरीअ जे लिखिणियुनि ते केतिरियुनि साहित्यक शख्सियतुनि जो असर आहे। संस्कृत जे कवि कालिदास, बंगला जे टैगोर, शरतचंद्र, हिंदीअ जे प्रेमचंद ऐं यशपाल मग़रबी ब्रेलियुनि जे शेक्सपीअर विक्टर ह्यूगो, गोरकी, थामस हारडी, टालस्टाय ऐं ओ. हैनरी जे साहित्य जो मथिसि गहिरो असर पियो।

साहित्य जे नसुरी सिंफुनि ते सुंदरी उत्तमचंदाणीअ पर्हिंजे कलम डाढो खूबीअ सां हलायो आहे। कहाणियूं, नाविल, मज़मून, नाटक, जीवनी, सफ़रनामो वगैरह ऐं हिन के कविताऊं पिण लिखियूं आहिनि। हेल ताई संदसि अटिकल 20 किताब जुदा जुदा सिंफुनि ते शाया थी चुका आहिनि। कहाणी ऐं नॉविल में हिन लेखिका काफ़ी नामूस कढी आहे।

संदर्शि कहाणियुनि, नॉविलनि ऐं नाटकनि जूं घटनाऊं ऐं वारदातूं बि सिंधी माहौल सां ठहकदङ्ड आहिनि। जिनि जी लफ़्जी तस्वीरकशी कमियाबीअ सां कयल आहे। हिन लेखिका साहित्य खे साधन बणाए मादरी ज़िबान सिंधीअ सां सिक, प्यार ऐं मोह जो इज़हार कयो आहे। संदर्शि सोच जो नज़्रियो शाख्याई, ज़ज़्बाती ऐं रोमानी आहे। हिन लेखिका पंजवंजाहु साल जाखोड़ करे जेके साहित्य जा घड़ा भरिया आहिनि, तिनि में संदर्शि आसपास जा नज़ारा ऐं घटनाऊं कथा वस्तुअ जे सगे में पूतल आहिनि। इंसानियत जे किरणनि ऐं आदर्शनि जे उजाले सां पाठकनि जे दिलियुनि खे ब्रह्मिकाइनि था। पाठक उहो सागियो ई अनुभव महसूस कनि, जेको लिखण वक्त पाण हीअ महसूस कंदी आहे ऐं माणींदी आहे।

सुंदरीअ पर्हिंजनि आज़मूदनि खे ब्रियनि सां वंडण लाइ अहसासनि, उमंगनि ऐं ज़ज़्बातुनि खे चिटो इज़हार डुई पाठकनि ताई पहुचाइण लाइ कलात्मक फारम में लिखियो आहे। हुन जूं रचनाऊं सहज सुभाव उन घुरिबल फारम में ठहिकायल ऐं फहिकायल आहिनि, जो पाठक पर्हिंजे जीवन जे कंहिं घटना, हादसे, वारदात ऐं रिश्तेदारीअ जो अक्सु पसी पाण खे उन रचना जा हिस्सो थो महसूस करे। संदर्शि रचनाउनि में रस ऐं रवानी इएं अथसि, जीअं गुल ऐं खुशबू इन्हीअ में ई संदर्शि कला ऐं कुशलता आहे। संदर्शि कलम सां लिखियल खसीस खळाल बि सोचाईनि था। अजा ताई साहित्य यात्रा जारी अथसि।

सुंदरी तरक्की पसंद दौर जी मकबूल कहाणी नवीस आहे, जेहिं भारत जे विरहाडे खां वठी लग्नातार कहाणियूं लिखिंदे, पर्हिंजे फ़न खे बुलंदीअ ते पहुचायो आहे। हिन ब्र सौ खनु कहाणियूं लिखियूं आहिनि। संदर्शि नव कहाणियुनि जा मजमूआ छपिजी चुका आहिनि-

1. अछा वार, ग्रादा गुल (1965)
2. तो जर्नीं जी तात (1970)
3. भूरी (1979)
4. ब्रधन (1982)
5. विळोडो (1985)
6. युगांतर (1989)
7. खेडियल धरती (1992)
8. मुर्क ते मनिहं (1992)
9. आत्म विश्वास (1999)

कला, कला जे लाइ न पर कला जिंदगीअ जे लाइ हुअणु घुरिजे। इहो नज़्रियो खणी सुंदरीअ कलम द्वारा पर्हिंजे कहाणियुनि में रंग भरियो आहे। आम माणहुनि अगियां सियासी, समाजी ऐं आर्थिक

मसइला, तोंहिं वक्त तमाम घणा हुआ। लेखिका उन्हनि मसइलनि खे पर्हिंजे कहाणियुनि द्वारा दूर करण जी कोशिश कई आहे। मतिलबु त सुंदरी कहाणीअ में नई टेक्नीक खे अपनाए अगुते वधी। कीरत ब्राबाणीअ जे लिखण मूजिबु “सुंदरीअ जा विषय गूनागून आहिनि पर क्षेत्र महदूद आहे याने घणो करे हूअ घरू क्षेत्र जे भिन्न भिन्न पहलुनि ते कहाणियूं लिखंदी नज़र अचे थी।”

कुछ बि हुजे, सुंदरीअ जूं कहाणियूं पेशकश जे लिहाज़ खां ज़ेरदार हुअण करे पाठकनि जे दिलियुनि ते गहरो असर कनि थियूं। विष्णु भाटिया चयो आहे त “सुंदरीअ जूं कहाणियूं सिंधियुनि जे घर, समाज ऐं संघर्ष जूं कहाणियूं आहिनि, जेके पाठकनि जे दिलियुनि ते गहरी अमिट छाप छडीनि थियूं।” संदसि के कहाणियूं दिल खे छुहंडे आहिनि अवाम में पसंद थियल संदसि कहाणियूं आहिनि: “अछा वार, गाढा गुल”, “भूरी”, “बुंधन”, “ममता”, “खोर भरिया हथिडा”, “सतीअ जो चबूतरो”, “विछोडो” वगैरह। इन्हनि कहाणियुनि लाइ वक्त बि वक्त खेसि इनाम बि पिए मिलिया आहिनि। कहाणी चटाभेटी में 1952 में “ममता” कहाणीअ लाइ, 1954 में “कोशा” कहाणीअ लाइ ऐं मुख्य कहाणीकारनि जी चटाभेटीअ में “विछोडो” कहाणीअ लाइ।

“भूरी” कहाणियुनि जे मजमूए ते भारत सरकार जे तइलीमी खाते पारां खेसि 1981 में इनाम अता थियल आहे।

मर्कजी साहित्य अकादमीअ बि संदसि साहित्यक शोवाउनि जो कदुरु करे “विछोडो” किताब ते 1986 जो साहित्य अकादमी इनाम डुह हजार रुपया अता कयो। “विछोडो” किताब जूं कहाणियूं सिंधी जीवन जो आईनो आहिनि। सिंधी समाज में फहिलियल कुरस्मुनि जी इन्हनि कहाणियुनि में ओघडि कयल आहे।

“युगांतर” कहाणियुनि जे किताब में बि लेखिका जुदा जुदा मौजूअ खंया आहिनि। स्त्रीअ जी जज्बात, अंध विश्वास, टुटंडे कुटम्ब करे थींदडे परेशानियूं, विधवा विवाह, शहरी ऐं गोठाणी जीवन में तफ़ावत, धारियो रत घर में अचण सां पैदा थींदडे मसइला वगैरह। लेखिका स्त्री किरदारनि खे पुरुषनि जी भेट में वधीक उभारियो आहे। सुंदरीअ जूं केतिरियूं कहाणियूं हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती, मरहटी, पंजाबी ऐं तेलगू वगैरह बोलियुनि में तर्जुमो थियूं आहिनि। संदसि कुछ कहाणियूं तर्जुमो थी ‘सारिका’ ऐं ‘धर्मयुग’ में छपियूं आहिनि।

नॉविल निगार- सुंदरी न सिफ़ कहाणीकार आहे पर नॉविल निगार पिणु आहे। हिन हेल ताई बु नॉविल लिखिया आहिनि। उन्हनि बिनि नॉविलनि द्वारा अफ़साने अदब में हिन जोगी जाइ वालारी आहे। उहे नॉविल आहिनि-

1. किरंडे दीवारूं (1953)
2. प्रीत पुराणी रीत निराली (1956)

बुनियादी तौर लेखिका हूंदे बि सुंदरी शाइरा पिणु आहे। हिन हेल ताई अटिकल सौ खनु कविताऊं जुदा जुदा मौजूअनि ते लिखियूं आहिनि, जेके अख्खारुनि ऐं मैगऱ्जनुनि में छपिर्जंदियूं रहंदियूं आहिनि। संदसि शझर बहर वजन खां आजो याने आजाद नज्म आहे। “अमन सडे पियो” (1956) संदसि शझरनि जे तर्जुमे वारो मजमूओ आहे, जीहिं में रशिया जे 95 शहरनि जूं नएं नमूने जे मौजूअनि वारियूं 100 कविताऊं डिनल आहिनि। हिननि कविताउनि में इंसानी जज्बनि जी अकासी कयल आहे। हिन किताब ते 1966 में “सोवियत लैण्ड नेहरू इनाम” डुह हजार रुपया हासिल थियो अथसि। संदसि असुलोकियुनि कविताउनि जो मजमूओ “हुणाऊ” (1993) में छपियो आहे। हिन में कुल 75 कविताऊं आहिनि, जिनि में शाइरा जे उमंगनि ऐं अहसासनि जी अकासी कयल आहे।

साहित्य जीवन सां गडु सियासी ऐं सामाजिक जीवन में बि सुंदरीअ पाणु मोखियो। स्कूली जीवन में हिन मुल्क जी आजादीअ वारी हलचल में बहरो वरितो। हूअ केतिरियुनि सामाजिक संस्थाउनि सां सिधे, अण सिधे नमूने जुडियल रही। अनोखी शछिसयत जी मालकियाणी, लेखिका सां गडु सुठी कलाकार पिणु हुई। सिंधी फिल्म “सिंधूअ जे किनारे” में पिणु रोल कयो हुआई।

पंहिंजे कलम जे जादूअ सां हिंद सिंध जे सिंधी जगृत जो मनु सुंदरीअ मोहियो आहे। संदसि साहित्यक जळ्खीरो उसरंदड लेखिकाउनि लाइ रोशन मिनार बणिजी राह डेखारंदो रहंदो। 8 जुलाई 2013 ते हिन फानी दुनिया मां राह रवानी थी।

नवां लफ्ज़ :

ओघडि = खोले पधिरा करणु	अफ्रसाना = दास्तान
बेबाकी = बेडपाई	उलथो = तर्जुमो
सियासी = राजनीतिक	सूरतहाल = जीहिं हाल में हुजे
नामोर = नाले वारो, नामी ग्रामी	तंकीद = समालोचना
तस्वीरकशी = रूबरू तस्वीर जो दृश्य	रोमानी = रोमांटिक
फारम = फन, कला	महदूद = सीमित, घटि
मर्कजी = केन्द्र	

❖ અભ્યાસ ❖

સુવાલુ 1. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ ડિયો :-

- (1) સુંદરી ઉત્તરચંદાળીઅ જો જનમુ કડુહિં એં કિથે થિયો?
- (2) સંદસિ પૂરો નાલો છા હો?
- (3) સુંદરીઅ જી તદ્દીમ જે બારે મેં જ્ઞાણ લિખો।
- (4) સુંદરીઅ જે લિખણીઅ તે કિનિ કિનિ સાહિત્યકારનિ જો અસરુ પિયો?
- (5) શાદીઅ ખાં પોઇ હૂઅ કહિડનિ વીચારનિ ડાંહું માઇલુ થી?
- (6) સાહિત્ય જે કહિડિયુનિ સિન્કુનિ તે હુન પફિંજી કલમ આજ્માઈ કર્ઝ આહે?
- (7) સુંદરીઅ કહિડી ફિલ્મ મેં અદાકારા જો રોલ કયો આહે?

સુવાલુ 2. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ ખોલે લિખો :-

- (1) સુંદરીઅ જા કહિડા કહિડા કહાણિયુનિ જા મજમૂઆ છપિજી ચુકા આહિનિ?
- (2) સુંદરીઅ જું કહાણિયું પાઠકનિ જે દિલિયુનિ તે ગહરો અસર કનિ થિયું, સો કીઅં ?
ખોલે લિખો।
- (3) સુંદરીઅ જે લિખિયલ નોવિલનિ તે રોશની વિજ્ઞો।
- (4) “લેખિકા હૂંડે બિ સુંદરી હિક શાઇરા પિણુ આહે।” હિન જે શાઇરીઅ તે રોશની વિજ્ઞો।

સુવાલુ 3. હવાલો સમુજ્ઞાયો :-

“સુંદરીઅ જું કહાણિયું સિંધિયુનિ જે ઘર, સમાજ એં સંઘર્ષ જું કહાણિયું આહિનિ, જેકે
પાઠકનિ જે દિલિયુનિ તે ગહરી અમિટ છાપ છડીનિ થિયું।”



यादगिरियुनि जा काफिला

— मोती ‘प्रकाश’

लेखक परिचय-

(1931 ई. - 2015 ई.)

डाक्टर मोती ‘प्रकाश’ जो जनमु सन् 15 मई 1931 ई. में ज़िले ठटो सिंधु में थियो। हिन साहिब सिन्धी शाइरी, बुरनि जा गीत, यात्रा वृतांत, सिंधी नाटक, साहित्यक लेख लिखी सिंध वै साहित्य खे मालामाल कयो आहे। मशहूर सिंधी गीत ‘आंधीअ में जोति जगाइण वारा सिंधी’ हिंद सिंध में मशहूर अथवा। खेसि साहित्य अकादमी इनाम सां बि नवाजियो वियो।

उहो कहिडो दर्दु हो, जेहिं मूँखे सतटीह साल घाणे जियां पीढियो हो? उहा कहिडी तार हुई, जेका डुंहं राति पल पल रुह खे ताणींदी रही हुई? उहो कहिडो अहिसासु हो जेको पहिंजनि सां घेरियलु हुंदे बि दिलि खे अकेलाईअ जे बोझे हेठां दबाईदो रहियो हो?

मूँ वडा वडा शहर डिठा आहिनि, आसमान सां गसंदड इमारतुनि जी ऊंचाई पहिंजे नजुरुनि सां मापी आहे, केतिरियुनि कौमुनि जूं केतिरियूं बोलियूं गाल्हाईदड माणहुनि सां गुफ्तगू कई आहे.... पोइ बि दिलि जे कंहिं कुंड में अकेलाईअ जी अहिडी घुघु ऊंदहि आहे जो मां शहरनि में रही बि रहियो आहियां, इमारतुनि जे आसाइश भरियल कमिरनि में रहंदे बि बेआरामु रहियो आहियां, पहिंजनि सां गाल्हाईदे बि धारियो रहियो आहियां, सुख मिलंदे बि बेचैनु रहियो आहियां।

पेजारी वाह जे कंधीअ ते मुंहिंजो नंदिडो गोठु दडो, दुनिया जे नक्षे ते हिक बुडीअ जी हैसियत बि नथो रखे। न उन जे हवा में अतुर जी खुशिबू आहे एं न उन जे खूह एं वाह जे पाणीअ में अमृतु ओतियलु आहे। न उन जूं घिटियूं कुशादियूं एं साफु सुथिरियूं आहिनि एं न उन जे अक या बबुर जे वणनि में रंगारंगी गुल आहिनि। पोइ बि जाणां थो त उहो मुंहिंजो गोठु आहे। उहा मुंहिंजी मिटी आहे, उहा मुंहिंजी हवा आहे एं उहे मुंहिंजा वण आहिनि। मुंहिंजो रुहु बादलु बणिजी उन्हनि मथां छांव कंदो आहे एं बरसाति जूं सन्हियूं बूदूं थी बुनियुनि-बुरनि रस्तनि चारनि ते छिणकारु कंदो आहे। अजु उहो मुंहिंजो गोठु न आहे, इहो न मुंहिंजो मनु थो मजे एं न मुंतक्हु। तूं उते ई पहिंजो पहिरियों साहु खंयो हो एं मूँखे केरु थो रोके सधे त मां इहा चाहिना करियां त मुंहिंजो आखिरी पसाहु बि उते खजे?

मूँ निंद एं जाग में पहिंजे गोठ जा सुपिना डिठा आहिनि। केई घुमिरा यादगीरियुनि जे बोडि मूँखे

सरनि दरियाह कयो आहे ऐं मूँ पौहिंजनि हथनि ऐं ब्राह्मणि जे ताकत सां पाण खे कंधीअ ते पहुचाइण जो कोशिश कई आहे.... पोइ बि सुपिननि जे सैलाब जे घेरे में सदाई रहियो आहियां।

मूँखे यादि आहे....

पेजारी वाह मूँखे समुंद खां बि वडो लगुंदो हो छो जो उन खां अगु में समुंद बाबति फक्तिं जाग्राफीअ जे किताबनि में पढियो हो। पहिरियों भेरो समुंदु में नानाणे गोठ जातीअ जे भरिसां संडी बंदर में डिठो हो। तडुहिं मां पंजनि वरिह्यनि जो मस होसि। दूरि दूरि ताई पाणीअ जो फहिलाउ, जेको भगुल टुटल घरनि ऐं दुकाननि जे वीरानीअ खे अजा बि वधाए रहियो हो। संडी बंदर जो इहो समुंदु बि पेजारीअ खां नंदो लगो हो!

ऊन्हारे में जडुहिं पेजारीअ में पाणी अचण जी खबर गोठ में पहुचंदी हुई त गोठ जा हिंदू ऐं मुसलमान, दुहिलारियुनि ऐं शरनायुनि खे साणु करे, ब्रु टे मैल अगियां वजी पेजारीअ जे पाणीअ जी आजियां कंदा हुआ। डिसंदे डिसंदे पेजारी तारि थी वेंदी हुई ऐं उन जूं छूह भरियूं छोलियूं कखनि, काननि, बुंडनि ऐं टारियुनि खे लोढीदियूं किनारा पाईदियूं वेंदियूं हुयूं। मुहिंजी डाढी मेरा कपिडा खारु में टहिकाए थाळ्हु मथे ते रखी, ज़नाने घाट ते धुअण हलंदी हुई। हूबू कपिडा सटींदी हुई ऐं असीं संदसि अगियां तुडिगी पेजारीअ में विहिजंदा हुआसीं। कडुहिं कडुहिं असां खे मर्दने घाट ते विहिजंजारणु हलंदो हो। बदन ऐं मथे में मेटु विझी या पाण खे तेलु थफे, असीं नंदा मटिका ऐं दिला पाणीअ में विझी तरण जी कोशिश कंदा हुआसीं। इए थाफोडा हणंदे बि, आऊं वडो थी न सधियुसि जो हिक भरि खां तरी ब्रीअ भरि पहुची वजां! आरबु ख़मीसो, रमजानु ऐं उमरु स्कूलु गुसाए पेजारीअ में विहिंजण वेंदा हुआ। आऊं मोकल जो घिंडु लगुण ते, किताबनि जी फोटिडी गिचीअ में लटिकाए घरि वजण बदिरां पेजारीअ जे पुलि ड्रांहुं डुकंदो होसि ऐं कलाकनि जा कलाक किनारे ते बीही हसिरत भरियल निगाहुनि सां खेनि तरंदो, तुडिगुंदो डिसंदो रहंदो होसि।

उन बइदि थोरो वडोरो थियुसि त कडुहिं बाबो मूँखे साणु करे, सीताराम जे हडीअ वटि सनानु करण हलंदो हो। बाबो सनानु कंदे थोरो परभरो वेंदो हो ऐं आऊं किनारे ते बीही ई डुकण लगुंदो होसि। सनानु करण बइदि असीं ब्रई सीताराम जे कखाईअ झुपिडीअ में वेंदा हुआसीं ऐं चवंदा हुआसीं, ‘जय सीतारामु’, ‘जय सीतारामु’, ‘जय सीतारामु’ सफेदु डाढीअ ऐं जटाउनि वारो ब्राओ मोट में खीकार कंदो हो।

बाबो अधु कलाकु खनु ब्राए सीताराम सां रिहाण करे उथंदो हो त मोकिलाइण महिल ब्राओ मुहिंजे हथ जे तिरीअ ते भुगिडनि ऐं कारीअ डाख जो प्रसादु रखंदो हो। पोइ बाबे जी आडुरि पकिडे आऊं घर डांहुं हलंदो होसि।

असां जा इम्तिहान वेज्ञा थींदा हुआ त बाबो पलो तराए, मानियूं पचाराए हलंदो हो दडे ऐं वालीशाह जे विच में पेजारीअ जे रेग्यूलेटरनि वारीअ पुलि ते, असां खे पाढण लाइ। असीं पुलि ते

हेठि वेही रहंदा हुआसां। हेठां पाणी गडिगाट करे वहंदो वेंदो हो एं आऊं हिसाबनि जो हलु गोल्होंदो होसि।

सांवण जो महीनो ईंदो हो त थधिडीअ जे, चांडोकीअ राति में शैल जा कोडिया ब्रेडियूं भराए निकिरंदा हुआ। काको ब्रेडीअ जे आगुंध ते बीही गुईंदो हो, ‘दावण जा नंगपाल, झूलेलाल’ शैल जा साथी संदसि सुर सां सुरु मिलाए झूलेलाल जा पंजिडा गुईंदा हुआ। असां झूटा खाईंदा, रागु रंग, चरिचनि घबुनि जूं उहे महफिलूं माणींदा हुआसां।

नवां लफऱ :

रुहु = आत्मा
कंथी = किनारे, कपु
सैलाबु = ब्रोडि
हसिरत = इच्छा, कामना

आसाइश = सुख सहूलियतूं
मंतकु = दलीलु, तर्कु
आजियां करणु = स्वागतु करणु

धारियो = पराओ
पसाहु = साहु
छोली = लहर

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हवाला डुई समुझायो :-

- (1) उहो कहिडो दर्दु हो, जंहिं मूँखे सतटीअ साल घाणे जियां पीढियो हो?
- (2) उहा मुंहिंजी मिटी आहे, उहा मुंहिंजी हवा आहे एं उहे मुंहिंजा वण आहिनि।

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो :-

- (1) वडनि शाहरनि जे सुखनि एं सहूलियतुनि में बि लेखकु बेचैनु छो रहंदो हो?
- (2) गोठाणा पेजारी वाह में पाणी अचण जी आजियां कीअं कंदा हुआ?
- (3) थधिडीअ जे डिणनि ते शैल जा शौंकीन केड़ाहं वेंदा हुआ?

सुवालु 3. हेठियनि लफऱनि लाइ सागी माना डींदड लफऱ लिखो :-

रुहु, धारियो, सैलाबु, आजियां, छोली।

करण जोगा कम :-

- (1) पंहिंजे वडनि खां सिंधु जा आज़मूदा बुधी लिखो।
- (2) तव्हीं कंहिं आस्थान तां घुमी आया हुजो त उन बाबति पंहिंजा आज़मूदा लिखो।



बुढा आश्रम

— कला ‘प्रकाश’

लेखक परिचय-

कला ‘प्रकाश’ (जनमु 1934 ई.) सिंधीअ जी मशहूर नॉविलनवीसु ऐं कहाणीनवीसु आहे। हूअ सिंधीअ में “ममता” विषय ते लिखांड़ सभिनी खां असरदारु लेखिका आहे। इन खां सवाइ हुन पॅहिंजे रचनाउनि में नारीअ जे कोमल सूख्मु भावनि खे काम्याबीअ सां चिटियो आहे। हुन घरू जिंदगीअ जे हकीकी सचायुनि खे इंसानी मन ऐं रिश्तनि जे कोमल भावानाउनि खे सवलीअ नज्माणी ब्रोलीअ में पेश कयो आहे।

“हिक दिल हजार अरमान” (1957), “शीशो जी दिलि”, “हिकु सुपनो सुखनि जो” (1971), “हयाती होतनि रे” (1974) ऐं “आर्सीअ आडो” संदसि मुख्यु नॉविल आहिनि। “मुर्क ऐं ममता” संदसि कहाणियुनि जो मजमुओ आहे। खेसि “आर्सीअ आडो” ते 1994 ई. में साहित्य अकादमी अवार्डु मिली चुको आहे। “ममता जूं लहरू” नज्माणे नसुर जो ही मजमुओ सिंधी अदब में पॅहिंजी खासि अहमियत रखे थो।

हिन कहाणीअ में अजु जो सामाजिक चिटु चिटियलु आहे त गडियल कुटम्ब में बडुनि जी केरु इज्जत नथो करे।

मोहन गुजिरियल बुधर ते पॅहिंजनि माउ पीड खे बुढा आश्रम में दाखिल कराए आयो हो हिननि जी कॉलोनीअ में इन गुलिह जी शुरुआति वसंदाणी कुटम्ब कई। उन कुटम्ब में चार वडा ऐं बु नंदा ब्रार आहिनि। जाल मुडिस नौकरी कंदा आहिनि, ब्रार स्कूल पढ़ंदा आहिनि। सीनियर वसंदाणी जोडो ऐं वलीराम ऐं संदसि पत्नी सजो वक्तु घर में हूंदा हुआ। हिननि जी नुहं खे अची मन में थियो त ससु सहुरे खे बुढा आश्रम में मोकिले, पाण आजादी माणे। हिननि जी मौजूदगीअ में हूअ पॅहिंजी मर्जी हलाए नथी सघे। पतीअ खे बि पॅहिंजे वस में न करे सधी आहे। हूअ पॅहिंजा ब्रार बि पॅहिंजीअ मर्जीअ सां निपाए नथी सघे। ब्रार खे चडे मठे तां कुझु चउ त डाडो-डाडी विच में टपकियो पवनि।

शाम जो पती ऑफिस मां मोटे त पहिरीं माइटनि जे कमरे में वजे। हिननि वटि डुह पद्रहं मिर्न विहंदो, खांउनि हाल अहिवाल वठी दवा दरमल बाबति पुछी पोइ जाल वटि ईदो। हू जडहिं

खांउसि पुछंदो हो : हाइ डालिंग ! कीअं गुजिरियो डॉंहं, त हूअ चवंदी हुई : बसि गुजिरी वियो डॉंहं हुन खे घोट सां ग्राल्हाइण लाइ उत्साह ई न हूंदो हो। हूअ चाहींदी हुई त घोटसि घर घिड़ण सां पहिरीं साणुसि विहे चांहिं पाणी पिए। हुनखे ससु सहुरे जी मौजूदगी बिलकुल कंडे वांगुरु चुभण लगी आखिर हुन हिकु रस्तो ग्रोल्हियो।

अजुकल्ह बुढा आश्रम छो ठहिया आहिनि? हिननि बुढे बुढीअ खे छोन उते मोकिलियो वजे? हर महीने 15 हजार खनु डियणा पवंदा। उहे डियणु सवला आहिनि। हिन घणा ई हीला वसीला हलाए नेठि मुडिस खे राजी कयो ऐं बुजुर्ण वसंदाणी जोडो वजी बुढा आश्रम भेडो थियो।

कॉलोनीअ में हिन परम्परा जी शुरुआति थी त पोइ घणनि ई कुटम्बनि जे नुहरुनि खे छेडकु लगो। हू पर्हिंजनि मुडिसनि जा कन खणण लगियूं त तूं बि माउ पीउ खे बुढा आश्रम में छडे अचु। मोहन बि उन्हनि मुडिसनि मां हिकु हो।

शुरुआति में हुन घणी आनाकानी कई त न, हू अहिडो कदमु हरगिज़ न खणंदो। हुन घणो ई पत्नीअ खे समुझायो त जडहिं हू असांजे शख्सी जिंदगीअ में को दखल नथा डियनि, पर्हिंजे मुंहं पर्हिंजो जीउ जीआरे रहिया आहिनि; तडहिं जालसि खे कहिडो हकु आहे जो हूअ खेनि घर मां तडे बुढा आश्रम में मोकिले? पर रेशमा जे घणीअ खुंध खुंध खेसि मजबूरु कयो। हुन जे माउ पीउ जी दिल नुंहं जे रुखे वहिंवार मां खटी थी पेई हुननि पुट खे चयो, “असांखे को ऐतराज़ कोन्हे, तूं भले असांखे बुढा आश्रम में छडे अचु!”

मोहन दिल ते पथर रखियो हो। हुन खे गुनाह जो अहसास घेरे रहियो हो। हुन जे मुंहं में पहिरीं वारी रैनक न रही हुई। हू सभु कुझु जणु मथाछिरो करे रहियो हो। हिक डॉंहं नेठि हुनजी ज़बान मां निकिरी पियो, “रेशमा! असांजो गुडो बि जडहिं वडो थींदो, तडहिं ज़ाल जे चवण ते असांखे बुढा आश्रम में छडे ईदो।”

मोहन जी ज़बान मां इहे लफ़्ज़ बुधी रेशमा जी ज़बान मां बेअखिल्यार निकिरी वियो, “न न ! असांजो गुडो अहिडो कोन्हे।”

तडहिं मोहन खे बि ग्राल्हाइण जो वज्ञु मिली वियो। चर्याई, “असांजो गुडो अहिडो कोन्हे, पर मां मोहन अहिडो कमीणो पुट आहियां, जो तुंहिंजे चवण ते पर्हिंजे माउ पीउ खे बुढा आश्रम में छडे आयुसि।”

आरतवार जो डॉंहं हो। रेशमा नेरनि ते दाल पकवान ठाहिया हुआ पर नेरनि खाए केरु? घोटसि हूंअं अख़बार पढ़ंदे डुह दफ़ा चवंदो आहे : रेशमा ! नेरनि जल्दी ठाहि, बुख लगी आहे। पर अजु हू न अख़बार पढी रहियो आहे ऐं न ई नेरनि घुरी रहियो आहे। ऐं बुर त अजा निंद मां उथिया ई कोन आहिनि। आखिर रेशमा नेरनि मेज़ ते रखी घोट खे चयो, “नेरनि मेज़ ते रखी अथवा।”

पोइ हूअ बुरनि खे निंड मां उथारण वेई। पुटनि खे धूंधाडे चयाई, “अडे गुदू ! उथु डुह थी विया आहिनि। तुहिंजी दिल पसंद नेरनि ठाही अथमि” ब चार सडु करण बइदि बि जडुहिं गुदू न उथियो, तडुहिं रेशमा ककि थी चयो, “बजी न उथु, न खाउ नेरनि।” तडुहिं गुदू हंध ते उथी वेही रहियो हुन अखियुनि मां गोडळा गाडींदे चयो, “न खाईदुसि नेरनि। पहिरीं बुधाइ, हुते अमां बाबा खे दाल पकवान करु डुंदो?” रेशमा पुट जे मथे ते हथु रखी चयो, “हुते बि नेरनि मिलंदी आहे। तुहिंजो पपा त आश्रम वारनि खे पैसा डुई आयो आहे हू अमां बाबा खे खाराईदा।”

“पर हू छो खाराईनि? हू केरु थियनि असांजा? ऐं अमां बाबा हुते छो रहनि? हुननि खे पहिंजो घरु कोन्हे छा? घरु आहे त अमां बाबा जो”

ओचितो रेशमा जो ध्यान वियो हुनजी तिडुडी के. जी. क्लास में पढ़ंड धीउ हंध ते उथी वेठी हुई ऐं रोई रही हुई।

गुदू भेण खे रुअंदो डिसी वटिसि वियो। हुनखे गिराटिडी पाए पुछियाई, “छोथी रोई? बुख लगी अर्थे?” हुन कंध सां नाकार करे चयो, “बुख न लगी आहे। रुआं थी, बसि रुआं थी; मूळे अमां खपे।”

रेशमा समुद्रियो हो त ससु सहुरे जी गैर मौजूदगीअ में बार सिफ मुहिंजो ई चयो मजोंदा हूंअं डाडे डाडीअ जे कमरे मां डुह दफा सडु करीनि, तडुहिं मस अचनि। अलाए डाडे डाडीअ में कहिडो सोनु डिठो अथनि!

रेशमा थोडी मुझी पेई। पर पहिंजे अंदिरां आरसीअ में निहारण खां नटाए रही हुई। यारहें बजे धारे कम वारी माई आई शकुंतला। हुन बुहारी पट करण बइदि रेशमा खे अची चयो, “अमां बाबा वारो कमरो थी साफ करियां त दिल भरिजी थी अचो। हू बुई मूसां खूब गालिह्यू कंदा हुआ। तुहिंजी केडी साराह कंदा हुआ। सदाई चवंदा हुआ त नुंहं त असांजी।”

रेशमा खे दिल में हिकु चुहिंदार तीर चुभी वियो उन चुभानि खे बर्दशत कंदे हुन ब्राहिरां पहिंजीअ कम वारी शकुंतला खे चयो, “तूं पहिंजो कमु करि, पहिंजी औकात डिसु। तोखे हकु कोन्हे असांजे घर जे गालिह्युनि में दखल डियण जो।”

शकुंतला वराणियो, “बराबर मां नौकरियाणी आहियां। मुहिंजी औकात कहिडी आहे। पर मालकिण! मूळे पंज साल थी विया आहिनि हिन घर में कमु कंदे। अमां बाबा ऐं तव्हीं सभु मूळे पहिंजा लगंदा आहियो मालकिण! सो बि गुदू वडो थींदो ऐं शादी कंदो, पोइ तोखे ऐं सेठ खे बुढा आश्रम में छडे ईदो त तोखे कीअं लगंदो?”

रेशमा खे मन में आयो त जेकर कम वारीअ खे हिकु सिरोटो ठकाउ करे हणे, पर हुन अहिड़ा कुझु न कयो। हूअ रंधिणे में वजी मंझंदि जे मानीअ जी तैयारी करण लगी। रेशमा रंधिणे में कढ़ी रंधींदे सोचे थी त मूं समुद्धियो त ससु सहुरे खे बुढा आश्रम में मोकिले आजादी माणींदसि। ब्राह्मि अचणु वजणु खरीदारी करणु रध-पचाअ में, हर गालिह में मां खुदमुख्तयारु हूंदसि, मां सही माना में हिन घर जी मालकियाणी थींदसि। रेशमा जो मन मरोटिजी सरोटिजी रहियो आहे। हुन केड़ी महिनत सां मुडिस खे मजायो त अमां बाबा खे बुढा आश्रम में छडे अचु। हुननि जी गैर मौजूदगीअ में कहिड़ी मालिकी मिली आहे मूंखे?

मानी रधींदे खेसि जणु पर्हिंजी ससु जो आवाज़ थो बुधणु अचे। हूअ रंधिणे में अची खेसि चवंदी आहे, कुंवारि! असांजी चांवरनि चपटी खणी अलगि रधिजाइ, पाणीअ ढुकु विज्ञिजाइ। असांखे नरमु चांवर था खपनि, डुंद कमज़ोरु आहिनि न कुंवारि। जवानीअ में असांखे बि छुडियो चावरु वणंदो हो फुलकनि ऐं भाजियुनि लाइ बि का न का हिदायत डींदी हुई। छो त अमां ऐं बाबा बिन्ही खे खाधो चबाडण लाइ नरमु खाधो खपंदो हो। रेशमा खे ख्याल थो अचे त बुढा आश्रम में हूअ कंहिंखे इहे हिदायतूं डींदी ऐं केरु खेसि नरमु चांवर ऐं सन्हडो नरमु फुलिको पचाए डींदो? भाजियूं बि जेके मिलंदियूं, से खाईदा। खेनि खाधो वणे या न, चबाडे सघनि या न, बुधर खां वठी जेकी मिलेनि, सो सत् करे खाधो हूंदाऊं।

रेशमा मंझंदि जो मानी तैयार करे सोचे ई सोचे रही हुई। हुनजो मन रधिण में न हो। केतिरो लूणु मिर्चु विज्ञी रही हुई, खेसि ख़बर ई न पेई पवे। खासि करे इहे लफ़्ज़ त “गुदू बि वडो थींदो, शादी कंदो त मूंखे ऐं मोहन खे बुढा आश्रम में छडे ईदो।” हुन जे हियांव में मांधाणी विज्ञी रहिया हुआ। घोटसि बि इहे लफ़्ज़ चया ऐं नौकरियाणी शकुंतला बि इहे लफ़्ज़ चया इएं थी थो सधे छा? मतां थिए त! मोहन बि त हिकु आदर्शी पुट आहे पर मुहिंजे चवण ते अमां बाबा खे बुढा आश्रम में छडे आयो। अमां बाबा हुते पोटे पोटीअ खां सवाइ केड़ा उबाणिका थिया हूंदा। शायद हिक ब्रिए खां लिकाए गोड़हा गाडींदा हुजनि।

रेशमा मानी रधिण खां पोइ पर्हिंजे कमरे में वजी हंथ ते लेटी पेई। मंझंदि जा ब्रु वजण ते हुआ पर हुन जा हथ न हलनि जो मानी पाए मेज़ ते रखे। हूअ भिति पासे मुंहुं करे लेटी पेई हुई। हिन जे अखियुनि मां गोड़हा गुड़ी रहिया हुआ हूअ रंधिणे मां निकिती त डिठाई घोटसि कुर्सीअ ते अखियूं बूटे वेठो आहे। न अख़बार थो पढे ऐं न को किताब थो पढे। हूंअं आरतवार डींहुं को न को किताब पढ़ंदो आहे। पुटसि बि बैट-बाल करण न वियो आहे। हुनजे दोस्तनि जा फ़ोन अची रहिया

आहिनि। हू खेनि कूड गाल्हाए चई रहियो आहे त मूळे बुखार आहे। मां अजु बैट-बाल मां न खेडींदुसि। हकीकत में हुनजो मन ई न थी रहियो हो जो बैट-बाल खेडण वजे। नंदिडी बबली बि किताबनि जो थेल्हो खोले, बिना सबब जे किताब थेल्हे मां कढी वरी वापस रखी रही आहे। हिन खां होम-वर्क करणु बि नथो पुजे। हूंअं खेसि डाडो या डाडी होम-वर्क करण में मदद कंदा आहिनि।

मंझादि जा सवा बु अची लगा। रेशमा पर्हिंजे हंध तां उथी कमरे मां ब्राह्मि आई। हुन पर्हिंजे पतीअ वटि अची चयो, “हलो बुढा आश्रम में, अमां बाबा खे वापस वठी था अचूं, पोइ अची था मानी खाऊं”

ऊंदाहे घर में जेणु रोशन शमादान बुरी पियो।

नवां लफऱ्यां :

चडी मठी = थोरे घणे, भलो-बुरो
 कंडे वांगुरु चुभणु = बुरो लगणु
 हीला वसीला हलाइणु = उपाव करणु
 आनाकानी करणु = मना करणु
 खुंध खुंध = टोक टोक करणु
 बेअरिंग्यार = अचानक, पाण-मुरादे

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब हिक सिट में लिखो :-

- (1) मोहन कहिडे डींहुं माड पीड खे बुढा आश्रम में दाखिल कराए आयो?
- (2) नुहं छो चाहियो त ससु सहुरे खे बुढा आश्रम में छडे अचूं?
- (3) नुहं, पुट, पोटे, कम वारी माईअ जो नालो छा हो?
- (4) माई शकुंतला नुहं खे छा चयो?

સુવાલુ 2. હેઠિયનિ સુવાલાનિ જા જવાબ ડિયો :-

- (1) ‘બુઢા આશ્રમ’ કહાણીઅ મેં નુંં, સસુ સહુરે સાં કીઅં હલંડી હુઈ?
- (2) પુટ જો વહિંવારુ માડ પીડ લાઇ કહિડો હો?
- (3) પોટો પોટી ડાડે ડાડીઅ લાઇ છો રૂના?
- (4) અજુ કલ્હ ગડિયલ કુટમ્બ છો નથો વણે?
- (5) હિન કહાણીઅ મેં સમાજ જો કહિડો ચિટુ ચિટિયલુ આહે?
- (6) ‘બુઢા આશ્રમ’ કહાણી તવ્હાંખે કેતિરે કદુરુ વણી? ખોલે લિખો।

સુવાલુ 3. હવાલા : કર્હિં કર્હિં ખે, કીઅં, છો એં કડહિં ચયો :-

- (1) “અસાંખે કો એતરાજ કોન્હે. તૂં ભલે અસાંખે બુઢા આશ્રમ મેં છડે અચુ!”
- (2) “ન ન ! અસાંજો ગુઢૂ અહિડો કોન્હે!”
- (3) “છો થી રોઈ? બુખ લગી અથોઈ?”
- (4) “તૂં પહિંજો કમુ કરિ, પહિંજી ઔકાત ડિસુ । તોખે હકુ કોન્હે અસાંજે ઘર જે ગાલ્હિયુનિ મેં દખ્લ ડિયણ જો!”



सफर जो साथी

– जेठो लालवाणी

लेखक परिचय-

श्री जेठो लालवाणीअ जो जनमु सिन्ध जे नवाबशाह जिले जे कंडियारे शहर में सन् 1945 ई. में थियो। हू हिकु मज़मून निगार, कहाणी नवीसु ऐं नाटककारु आहे। हिनजे छपियल किताबनि मां ‘अदबी सुरहाणि’, ‘माजीअ जा धुंधिला अक्स’, ‘पोस्ट मार्टम’, ‘टिरंगी रेशीनी’, ‘बुनीअ जो लोक अदब’ वगैरह मशहूर आहिनि। पोयें किताब ते खेसि मर्कजी सरकार जे तइलीमी खाते तरफां इनामु हासिलु थियलु आहे।

जीअं ई ऑफिस मां घरि मोटियुसि, घरू खाते जी वजीर त्यारियुनि में रुथल हुई। सोचियुमि अजु ज़रूरु को डिणु आहे, जंहिंकरे त्यारियूं ज़ेर शोर सां थी रहियूं आहिनि। पर अचानक यादि आयो त मां ई खुदि शाम जो बस में जोइ पेके वजी रहियो आहियां, श्रीमतीअ जे लाडले खे वठण। महाशय वैकेशन जी मौज माणण लाइ नानाणे आबूअ वियो हो। स्कूल खुलिये ब्रु हफ्ता थी विया हुआ ऐं लाडिलो अजा मौज मस्तरीअ में महू हो। जाणदे अण-जाणदे पुछियुमि, “श्रीमती जी! छा करे रहिया आहियो? जुणु ऐटम बम फाटो छो अजु आबूअ वजण जो इरादे कोन्हे छा?.... ऐं ही अमां खे डियणो आहे। हीउ मम्मीअ लाइ, हीउ बाबा लाइ” किरायाने जी लम्बी लिस्ट हथ में डुंदे हिदायत कराई, “संभाले वजिजो। सामान जी चडीअ तरह संभाल कजो ऐं जलदी मोटिजो।” अर्दलीअ वांगुरु जी हुजूरीअ में कंधु झुकायुमि ऐं मुक़रर वक्त खां ब्रु कलाक अगु सफरु शुरू कयुमि।

सामान खणाए, लोकल बस स्टाप ते न बीही उन खां थोडो अगुभरो थी बीटुसि। छो जो शारीफ ऐं समझदार इंसान खे इहा सुधि हूंदी आहे त बस कडहिं बि बस स्टॉप ते न बीहंदी आहे। पूरो कलाकु टंगुनि ते बीही तपस्या करण खां पोइ, आखिर गड-गड कंदड खटारो अची अगियां बीठो। सामानु चाढे पाण खे बि सवार कयुमि ऐं अची बस अडे ते लथुसि।

बस स्टॉप ते पहुंची सजुण माणहूअ खां पुछियुमि, “आबूअ जी बस हितां ई मिलंदी?”

“हा!” जवाबु मिलियो, “ज़रूरु मिलंदी” ऐं गडोगडु हिकु आवाजु मछर वांगुरु उडामी कननि वटां लांघाऊ थियो, “साईं कतार में अचो।” सामूं बोर्ड बि टंगियलु हो, “कतार में बीहो।” मां बोर्ड

हेठां बोही रहियुसि। बस आई, धिका थाबा, थेल्हा खाईदो, फुटबाल वांगुरु अंदर बस में किरियुसि। दरीअ वारी हिक सीट वठी सामत जो साहु खंयुमि।

बस जो सफ़रु मूँखे पसंद कोन्हे, छो जो भर में वेठल महापुरुष खे घर वारीअ वांगुरु निभाइणो पवे थो। इहो ज़रूरी बि कोन्हे त भर में वेठलु शख्सु दिलपसंद हुजे। न चाहींदे बि हुनखे निभाइणो पवे थो। सोचियुमि सफ़र काटिणो आहे त पाड़ेसिरीअ सां पहिंजाइप काइमु कजे। उन वीचार खां मां कुझु अजा चवां या करियां, त डिटुमि हूं पहिंजी बैग गोदि में रखी पाण बि आराम सां डिघेरिजी वेही रहियो। संदसि बैग जूं कुडूं मूँखे पिए लगियूं। मूं चयो, “साई! सामान रखण जी सीट मथे आहे, बैग उते ठाहे रखो न?”

रुखो जवाबु डिनाई, “बैग मुहिंजी गोदि में आहे, मूं लगेज टिकेट वरिती आहे!”

मां चुप थी वियुसि। सोचियुमि, वधीक कुछंदुसि त हीउ पाड़ेसिरी ‘ऐस्प्रो’ साबित थींदो। मूं दरीअ खां ब्राह्मिन निहारणु शुरू कयो।

कुझु वक्त खां पोइ हुन खीसे मां बोहीमुड कढी खाइणु शुरू कया। खलूं उड्हामी मुहिंजे कपिड़नि ते ऐं मुंहं में पिए पेयूं। चयोमासि, “खलूं हेठि फिटी करियो, कपिड़ा था ख़राबु थियनि।” तुर्त जवाबु डिनाई, “हवा खे रोकि।” हवा लफ़्जु बुधी मूं सोचणु शुरू कयो त हवा बाहि खे बारींदी आहे ऐं चिराग खे विसाईंदी आहे। हवा जड्हिं पेट में भरिजंदी आहे बदि-हाजिमो कंदी आहे। गैस कंदी आहे ऐं जड्हिं दिमाग में भरिजी वेंदी आहे त कहरु कंदी आहे। हिनजे दिमाग सां बि कुझु अहिडी ई वेदनि हुई, मूं शांत रहणु वधीक पसंद कयो।

अचानक हुन छिकूं डियणु शुरू कयूं। मूँखे लगो जणुकि बंदूक मां नम्बरवार थे गोलियूं छुटियूं। मूं डिठो, हुन कालर सां नकु साफु कयो। हुनजे नक ते हिकु कारो तिर हो। मूँखे लगो, जणुकि केले जी खल ते मुंध्यु वेठो आहे। चाहियुमि, हिन सां कुझु गुल्हायां, नेठि पाड़ेसिरी धर्म पालणु हराहिक जो फ़र्जु आहे। हिमथ बुधी पुछियुमि, “साई, तव्हांजी मूं सां का दुश्मनी आहे छा, जो हीअं लगातार बैग हणी, मुंहं में छिकूं डेर्डी, मूँखे तकलीफ डेर्डी रहिया आहियो?”

जवाबु डिनाई, “इन लाइ जो तव्हीं मुहिंजा पाड़ेसिरी आहियो। पाड़ेसिरीअ नाते तव्हांखे सभु कुझु सहणु घुरिजो।”

मूं चयो, “पाड़ेसिरीअ जो नालो मां ज्ञाणीं सधां थो? तव्हांजी मंजिल केसताई आहे?”

हुन चयो, “छा मतिलबु?”

मूं चयो, “अजु जड्हिं सफ़र में तव्हांजो साथु मिलियो आहे त इहो ज्ञाणी वधीक खुशी थींदी त तव्हीं केसताई साथु निभाईदा?”

हुन चयो, “बिल्कुल गळत! सफर में हर इंसान हिक ब्रिए खां सिर्फ इन लाइ पुछंदो आहे जो हू ज्ञाणणु चाहींदो आहे त हू कडुहिं थो लहे ऐं पूरी सीट ते कब्जो थिए!”

मूं चयो, “अगर तव्ही ईंदड स्टॉप ते लही बि वेंदा त बि मुसाफिरनि जी आमद मां छुटिकारे मिलण वारो न आहे। इन में हर्ज ई कहिडो आहे? सफर जे साथीअ खे ज्ञाणण सुज्ञाण में....।”

चयाई, ‘साथी’ फ़ालतू लफ़्जु आहे, हिन ज़माने में को बि कंहिंजो साथी न आहे। सहूलियत, स्वार्थ ऐं वक्त काटण लाइ असीं साथी बणिजंदा आहियूं। तव्हां आबूअ छो वजी रहिया आहियो? मोट में हुन सुवाल कयो।

मूं बि टेडो जवाबु डिनो, “आबूअ में हिक जग्हि अथमि, उहा विकिणण थो वजां।”

चयाई, “उन लाइ वजण जी कहिडी ज़रूरत आहे? घर में वेही बदफ़इली कयो, खुदि ब खुदि जग्हि विकासी वेंदी।” हुन सिगरेट कढी दुखायो, लग्नातार ब्रु टे कश कढी दूळों फैलाए पुछियो, “तव्हीं सिगरेट पीअंदा?”

मूं चयो, “बस में सिगरेट पीअण जी मनाही आहे, छा तव्हाखे इनजी ज्ञाण कोन्हे, सिगरेट पीअणु तंदुरुस्तीअ लाइ खऱाबु आहे। इहो पीअण सां कैंसर थियण जो इम्कानु रहे थो। सिगरेट सिहत लाइ नुक्सानकार आहे, इहो पाकेट ते बि लिखियलु आहे, इन खां पोइ बि तव्हीं....?”

इन विच में अम्बा जी अची वेई। असां हेठि लथासीं। लहण शर्त फ़कीर वकोडे विया। हिक फ़कीर हुन खां पंज पैसा घुरिया, हुन खीसे में हथु विझी चयो, “छुटल कोन्हनि, वापसि मोटदे वठिजांइ।”

फ़कीर जवाबु डिनुसि, “इन ओधरि में त लखें रुपया बुडी विया आहिनि।”

हू अगिते वथियो। हिक दुकान तां बिस्केटनि जा पैकेट खऱीद करे, हुन फ़कीर खे सडु कयो। चयाई, “हा वठु डुह पैसा।” फ़कीर हुनजा शुक्राना मजिया।

हुन चयुसि, “इन में शुक्राना छा जा? मां कंहिंजो कर्जु पाण ते न रखंदो आहियां। व्याज सूधो मोटाए डुंदो आहियां ऐं हा इहो त मुंहिंजो फ़र्जु आहे त तुंहिंजनि लखनि रुपयनि जी ओधरि मां तोखे वसूली करण में मददगार थियां।”

मूं चांहिं जो ऑर्डर डिनो। हुनखे चांहिं जी आछ कयमि। चयाई, “मां सदिके जी ब्रुकिरी बणिजणु नथो चाहियां।”

“मूं तव्हांजो मतिलबु न समुझियो!”

बुरनि वांगुरु समुझाईंदे चयाई, “देवीअ ते ब्रली चाढण खां पहिरीं जानवर खे खूब ताकतवरु खाधो खारझाबो आहे। जीहिं खां ओधरि वठिणी हूंदी आहे, उनखे ई चांहिं पीआरे, खुशामंद रूपी पालिश सां खुशी कयो वेंदो आहे। चविणी आहे त लोह खे तड्हिं धकु हणिजे, जड्हिं हू गर्मु हुजे।”

“मुंहिंजो अहिडो को बि इरातो कोन्हे। ईश्वर मूळे जाइ जगुहि, मिल्कयत, बैंक बैलेंस वगैरह सभु कुद्दु डिनो आहे।”

“इहो त तव्हांजी सिहत ऐं फिजूल खऱ्चो डिसंदे ई मइलूम थी वियो त तव्हां केतिरा सुखिया सताबा आहियो।”

मूं खणी डंदे आढुरियूं डिनियूं। हाणे बस बि हलणु शुरू कयो।

बस अची पहाडीअ ते चढणु शुरू कयो। मां कुदरती निजारा डिसण में मशिगूल होसि ऐं हू खोंघिरा हणण में। हुनजे बे-सुर बे-ताल संगीत रुखनो पिए विधो, ऐं वरी मथां पाण मूं तरफ पिए किरियो।

मूं हिनखे लाचारु थी जागायो। हुन रडि कंदे चयो, “तो मूळे छेडियो? तोखे सुधि कोन्हे त छेडणि डोहु आहे?”

मूं चयो, “मूं तव्हांखे छेडियो न पर जागायो। कंहिंखे जागाइणु डोहु कोन्हे।”

हिन चयो, “जागाइणु डोहु आहे। भगुतसिंह देशवासियुनि खे जागायो त हुनखे फासी डिनी वर्दी। गांधीजीअ खे गोली हईं वर्दी। हेमूंअ खे सूरीअ ते लटिकायो वियो तोखे सुधि आहे?”

“हा सुधि आहे। उन्हनि शहीदनि जी शहादत आखिर रंगु लातो। असां आजादी हासिलु कई ऐं आजादीअ में कंहिंखे बि जागाइणु डोहु कोन्हे।”

“बराबर वक्तु बदिलजी वियो आहे, हाणे कंहिंखे बि जागाइणु डोहु कोन्हे, पर सुम्हारणु डोहु आहे” ऐं इएं चई हुन वरी खोंघिरा हणणु शुरू कया ऐं मूं मथां ढेर थी किरी पियो।

एतिरे में आबू रोड अची वियो। हू छिकू भेरे उथियो। बगळ में सामानु दबाए तकिडो तकिडो अखियुनि खां ओझल थी वियो। मां सिर्फ हुन तरफ निहारे रहियो होसि।

नवां लफऱ्ज़ :

महू = लीन, तल्लीन, मग्नु

लांधाऊ = लंघदड, हली वजणु

लगेज टिकेट = सामान जे भाडे जी टिकेट

ऐस्प्रो = मथे सूर जी गोली

आमद = अचणु

बदफऱ्ली = बुरो आचरणु, भुडा कम

रुखनो = रंडक

ओझलु = गळबु

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) लेखकु जड्हिं घरु मोटियो त हुन छा डिठो ऐं खेसि कहिडो हुक्मु मिलियो?
- (2) बस स्टॉप ते बीही, उन खां अगु भरो बीहण सां छा फाइदो आहे?
- (3) बस स्टॉप ते हुन कहिडी ज्ञान हासिल कई?
- (4) अम्बा जी बस स्टॉप ते पाडेसिरीअ फ़कीर खे छा चयो?
- (5) “जागाइणु डोहु आहे” इएं चई पाडेसिरीअ कहिडा दलील डिना?

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब हिक सिट में डियो :-

- (1) लेखक केडांहुं वजी रहियो हो?
- (2) बस स्टॉप ते टॅगियल बोर्ड ते छा लिखियलु हो?
- (3) पाडेसिरीअ खीसे मां छा कढी खाइणु शुरू कया?
- (4) पाडेसिरीअ खे चांहिं जी आछ करण ते हुन छा जवाबु डिनो?
- (5) हुनजे बे-सुरे, बे-ताल संगीत छा पिए विधो?

सुवालु 3. हेठियनि इस्तलाहनि जी माना बुधायो ऐं जुमिले में कमु आणियो :-

- | | |
|--|--|
| (1) एटमु बमु फाटणु | (2) सदिके जी <u>बकिरी</u> |
| (3) लोह खे तड्हिं धकु हणिजे, जड्हिं हू गर्म हुजे | |
| (4) सुखिया सताबा हुअणु | (5) <u>डंदनि</u> आडुरियूं <u>डियणु</u> |
| (6) छिर्कु भरे उथणु | (7) अखियुनि खां ओझलु थियणु |

सुवालु 4. हेठियां हवाला समुझायो :-

- (1) “साईं कतार में अचोा।”
- (2) “खलूं हेठि फिटी करियो, कपडा था ख़राबु थियनि।”
- (3) “साईं तव्हांजी मूं सां का दुश्मनी आहे?”
- (4) “मुंहिंजो अहिडो को बि इरादो कोन्हे।”
- (5) “जागाइणु डोहु कोन्हे पर सुम्हारणु डोहु आहे।”



सफ़र

— ईश्वर चन्द्र

लेखक परिचय-

(1937 ई. - 1992 ई.)

ईश्वरचंद्र नई कहाणीअ जे दौर जो हिकु निहायत पुरख्तो लेखक आहे। पॅहिंजे कहाणियुनि में हुन हेठिएं विचोले तबिके ऐं विचोले तबिके जे रोज़मरह जिंदगीअ जे मुख्तालिफु पहलुनि जो जुदा जुदा कुंडुनि खां पुरअसर बयानु कयो आहे। हुन अनेक मनछेद, वायू, कहाणियू पिणु लिखियू आहिनि। रोज़मरह जे ब्रोलीअ में सरल बयानी संदसि इवारत जी खासियत आहे। लफ़्जनि जे आत्मा खे झटण जी हुन में अनोखी कुवत आहे। हीउ साहिबु अजमेर (राजस्थान) में रेल्वे में मुलाजिमु थी रहियो। संदसि केतिरा ई कहाणियुनि जा मजमूआ छपिया अथसि।

इएं कोन हो त बुढीअ खे को इन ग्रालिह जो अहिसासु कोन हुओ। हूअ समझी त रही हुई सभु पर हयातीअ जे आज़मूरे खेसि चुपि रहण जो अहिडो नुस्खो सेखारे छडियो हुओ, जो हूअ अक्सरि सभु सूर पी वेंदी हुई।

खेसि त उटिलंदो इहो ई सुठो लगंदो हुओ, जडुहिं हूअ डिसंदी हुई त पुट या नुंहरूं जेकी कुझु करे रहियूं आहिनि, इहो सोचे त बुढी हुननि जे ग्रालिहयुनि खे किथां समुझांदी हूंदी।

पंज पुट आहिनि बुढीअ खे, सभु दालि रोटीअ वारा टे धीअरूं बि अथसि, पर हाणे न उन्हनि ते का बुढीअ जी जिमेवारी आहे ऐं न बुढी ई हाणे उन्हनि लाइ घणो सोचींदी आहे। सभु पॅहिंजे पॅहिंजे साहुरनि में सुखी आहिनि। हा बाकी बुढीअ खे इहो कडुहिं कडुहिं बुरो ज़रूर लगंदो आहे जडुहिं डिसंदी आहे त संदसि पुट हरूभरू अजाए जिद में पॅहिंजो वक्तु पिया बर्बादु कंदा आहिनि त केरु कहिडीअ भेण खे पाण वटि घुराए। भेनरूं टे आहिनि, भाऊर पंज, कडुहिं डिण वार ते भेनरुनि खे घुराइण जो मामिलो हलंदो बि आहे त ग्रालिह इन अजाए बहस में थधी पइजी वेंदी आहे त कहिडो भाऊर कहिडीअ भेण खे घुराए कडुहिं भुले भुलाए जे किथे कहिं ग्रालिह ते सुलह थींदी बि हुई त मामिलो वरी इन ग्रालिह ते अटिकी बीहंदो हो त सभिनी खां घटि बारनि वारी भेण खे कहिडो भाऊर घुराए? इन ग्रालिह ते का बि सुलह थी न सघंदी आहे ऐं इहो ई कारणु आहे जो का बि भेण कडुहिं बि कंहिं भाऊर वटि टिकण लाइ वजी न सधी आहे।

भेनरुनि बिहाणे इन ग्राल्ह खे सोचणु करीबु बंदि करे छडियो आहे। बाबो जीअरो हो तेसीं त सभु छोकिरियूं हा सांवण में पेका घुमण वेंदियूं हूयूं पर हाणे हुन जे चालाणे बइदि, इहो सिलसिलो बिजणु हिक तरह ख़तमु थी चुको आहे एं होड़ाहूं छोकिरियुनि बिबाबे जे मौत बइदि, पेकनि मां हिक तरह जणु मोहू ई कढी छडियो आहे। भाउरनि जो वर्तात हूं डिसनि पेयूं हिक वडवाती भेण त हिक डुंहूं एतिरो बिचर्ई कढियो त “बाबा छा मुओ आहे, असां लाइ त जणु घर जा सधेर्ई भाती मरी विया आहिनि।” इन ते बुढीअ खे डाळो बुरो लगो हो। इन बेहूदीअ ग्राल्ह लाइ बुढीअ पंहिंजी उन धीअ खे दबु बिचाढी हुई त, “निभागी! हरूभरू इएं छो थी चवीं अजा तुंहिंजा पंज पंज भाउर वेठा आहिनि हींअर ई छो खणी दिलि नंदी कई अथेईं।”

पर बुढीअ जी उहा धीअ पंहिंजे ई जिर ते अडोलु रही, त पीउ जी सिक भाउर लाहे सघनि त बाबे जे मरण ते केरु टीह टीह ग्रोढा बिन ग्राडे।

होड़ाहूं भाउरनि खे बिइन ग्राल्ह जी का चिंता कान्हे त भेनरुं संदनि बारे में छा थियूं सोचीनि या छा थियूं चवनि उहे सभु पंहिंजे ई हाल में मस्तु आहिनि। कोई कंहिं शहर में पंहिंजो वापारु धंधो पियो करे त कोई किथे नैकरी। पर आहिनि सभु सुखी एं बुढीअ खे बिइन ग्राल्ह जो संतोषु आहे त बुरानि जे आईदे लाइ हुन जेकी कुझु सोचियो हुओ, या जेके सुपिना डिठा हुआ, हाणे सभु करीबु करीबु साकारु थी चुका आहिनि। हूअ त इहो बिसोचे खुशी आहे त पंहिंजे ई हाल में सही, सभु सुखी त आहिनि।

हूंअं बिबुढीअ लाइ हाणे रहियो बिछा आहे? सजो डुंहूं चूचियुनि अखियुनि सां किताब पढ़ंदी रहंदी आहे एं राति जो घर जे विरांडे में हिक नंदीअ मंजीअ ते पेई पासा वराईदी आहे। ब्राह्मिं को कुतो बुतो तंग न करे, इनकरे लकुणु हूअ पंहिंजे भरिसां रखंदी आहे। इहो ई लकुणु बुढापे जे सहारे बतौर सदाई साणुसि गडु रहंदो आहे। वर वर करे पाणी पीअण लाइ अंदरि न वजिणो पवे, इनकरे पाणीअ सां भरियलु कंजे जो हिकु थुल्हो लोटो हूअ हमेशह भरि में रखंदी आहे। लोटो एडो त भारी आहे, जो उन खे डिसी पाडे जूं जालूं हमेशह बुढीअ खे चेड़ाईदियूं रहंदियूं आहिनि त अहिडो हिकु लोटो हूअ खेनि बिबुराए डिए। पर बुढी खेनि डाळे फुखुर सां बुधाईदी आहे त अजुकल्ह किथे था मिलनि अहिडा लोटा हीउ त जुवानीअ में पाण हिक दफे मुरादाबाद वियो हुओ, तडहिं उतां वठी आयो हुओ। अजुकल्ह त लोटा अहिडा था मिलनि जो मिटीअ ते किरनि तडहिं बिटु पवनि एं हेड़ाहूं हीउ मुओ अहिडो मज़बूत आहे जो कर्ई दफा फर्श ते बिकिरियो हूंदो पर मजाल आहे जो को खुबु बिथियो हुजेसि।

पंहिंजे जुवानीअ में पोढी, मास्तरियाणी हुई। तरह तरह जे बुरानि सां एं किस्में किस्में माणहुनि सां हुन जो वास्तो पवंदो ई रहियो हुओ एं वरी जुवानीअ खां बुढापे ताई जे आजमूदे खेसि एतिरो

होशियार त बणाए ई छडियो आहे, जो हूअ बियनि जे मन जी गाल्हि उन्हनि जे अखियुनि या गाल्हियुनि मां परखे वठंदी आहे।

ऐं शायदि इहो ई कारणु हो, जो नुहरुनि जे नाराजगीअ भरीअ निगाह खे हूअ तुर्तु ई परखे वठंदी आहे त उन्हनि खे बुढीअ जे किताब पढण जी आदत शायदि पसर्दि कान्हे। नंदनि बारनि जे मार्फत हूअ लाइब्ररीअ मां नॉविल वगैरह घुए धडंदी रहंदी आहे। नजर घटि अथसि, तड्हिं बि खेसि परवाह कान्हे। थुल्हनि शीशनि वारो हिकृ चश्मो लग्याए बुढीअ जो कमु हले पियो। जेतोणीकि डाक्टरनि बुढीअ खे इहो बि चिताउ डुई छडियो आहे त हिन खां पोइ जे अखियुनि ते दबाउ वधी वियो, त कड्हिं बि नूर वजण जी नौबत अची सघे थी। पर बुढीअ ते इन्हनि मिडनी गाल्हियुनि जो को असरु न थियो आहे। मास्तरी कंदे कंदे, इहा किताब पढण जी बीमारी जा खेसि लगी आहे, सा हाणे केतिरियुनि कोशिशनि जे बावजूदि बि संदसि पलांदु नथी छडे।

बुढीअ जे पारखू निगाहुनि खां इहो बि लिकलु कोन्हे त संदसि नुंहरूं पर्हिंजे ससु जे इन किताब पढण जे आदत बाबति पर्हिंजनि मुडिसनि जा कन भरीदियूं थियूं रहनि।

पर बुढीअ खे इन गाल्हि जो विश्वासु आहे त संदसि पुट खेसि कड्हिं बि का अणवणंड़ गाल्हि न चवंदा। मास्तरी कंदे कंदे हुन पर्हिंजनि बारनि में अहिडा त संस्कार भरे छडिया हुआ, जो हू कड्हिं बि वडे जे साम्हूं न पवंदा आहिनि।

ऐं बुढीअ बि पर्हिंजे हयातीअ जा बाकी डोंहं सुख शांतीअ सां कठण लाइ हिसाबु किताबु विहारे छडियो आहे। हूअ हर बिए महिने पर्हिंजनि अलग्यु पुटनि वटि हली वेंदी हुई। पती त हुन जो घणो अगु गुजारे वियो हुओ। टेई धीअरूं पर्हिंजनि साहुरनि में सुखी आहिनि। छोकिरा पर्हिंजे दालि रोटीअ में मस्तु आहिनि। बियो छा खपे बुढीअ खे?.... हाणे बसि जेकड्हिं बाकी कुझु रहियो आहे त बसि एतिरो ई, त मौत ताई हिक लंबी यात्रा आहे, जा बुढी पर्हिंजे ई ढंग सां धीरे धीरे तइ करे रही आहे।

हिक दफे हिक नुंहं गाल्हियुनि में खेसि चई बि कढियो हुओ, “अमीं ! तव्हां साल में एतिरो सफरु करियो ई था, जो हाणे तव्हां जे मन मां सफर जो डपु निकिरी वियो हूंदो।”

बुढनि बुढियुनि जी इहा आदत हूंदी आहे त हर गाल्हि में हू मौत जो किथे न किथे को हवालो या ज़िकिरु खणी ई ईंदा आहिनि। हीअ बुढी बि उन्हनि खां अलग्यु कान हुई। हुन जे नुंहं जड्हिं सफर जे डप जी गाल्हि कई त जवाब में बुढी चवण लगी, “अडी, हिन सफर जो त डपु कोन्हे, डपु अथमि त उन सफर जो, जंहिं में कुझु माणहू कुल्हो डुई वजी माग्यु पहुचाए ईंदा आहिनि। मूँखे त इहा बि ख़बर नाहे त मुहिंजी उहा यात्रा किथे, कहिडे शहर में, कहिडे पुट जे घरां शुरू थोंदी।”

हिननि डोंहेनि में बुढी पर्हिंजे टिएं नम्बर पुट वटि रहियल आहे। छोकिरो कंहिं फर्म ते मैनेजरु आहे। नुंहं अवलि त पर्हिंजे ससु जियां कंहिं स्कूल में मामूली मास्तरियाणी हुई पर पोइ कुझु इम्तिहान

वधीक पासि करे कंहिं कॉलेज में लेक्चरर् थी वेई आहे। बुर बि हाणे वडुनि क्लासनि में पिया पढ़नि। सभु कऱीबु ठीक आहिनि। दालि रोटी आराम सां पेई निकिरे।

इअं बुढी जडुहिं पर्हंजे हिन टिएं नम्बर पुट वटि आई हुई, तडुहिं बिलकुलु ठीकु हुई। कमु कारि त हुनखे को करिणो ई कोन पवंदो हुओ। नुंहुं पुट सुबूह जो ई नौकिरीअ लाइ निकिरी वेंदा हुआ। बुर बि पर्हंजे स्कूल या कॉलेज जे वक्त अनुसार, हिकु हिकु करे घर मां निकिरी वेंदा हुआ, बाकी घर में रहिजी वेंदा हुआ बु जणा- हिक घर जी नौकिरियाणी, ब्री बुढी पाण।

हूंअं जडुहिं बुढी न हूंदी आहे त नौकिरियाणी कडुहिं तेलु त कडुहिं खंडु त कडुहिं ब्रियो कुझु परि कंदी रहंदी आहे। पुट खे बि इन गाल्हि जो खुशी आहे त जडुहिं जडुहिं बि माणसि वटिस अची रहंदी आहे, तडुहिं तडुहिं नौकिरियाणीअ खे पर्हंजी मनमानी करण जो मौको ई कोन मिलंदो आहे। पढियल गुढियल पोढीअ खे हूअ एतिरो आसानीअ सां बेवकूफु बणाए सधंदी हुई।

पर गुजिरियल कुझु डुंहिं खां नौकिरियाणीअ खे वरी पर्हंजी मनमानी करण जो मौको इनकरे मिली वियो आहे, जो बुढी बीमारु रहण लगी आहे। इनकरे बुढी घर डांहुं ध्यानु रखण बजाइ हाणे बसि मंजीअ ते पेई हूंदी आहे ऐं पर्हंजे आदत मूजिबु को न को किताबु पढ़ंदी रहंदी आहे।

ऐं होडांहुं नुंहुं जे वर्ताअ में बि बुढीअ खे फळु महसूसु थियण लगो आहे। हूअ नुंहुं जे जुमिलनि जे तह में लिकल माना बि समुझी वठंदी आहे। कालह ई बुढीअ खे मन ई मन में बुरो लगो, जडुहिं नुंहुंणसि खेसि अची चयो, “अमी! हाणे तव्हां इहे किताब ब्रिताब पढणु छडु डियो.... हिकु त तव्हां जी नजर ठीक कान थी रहे.... ऐं ब्रियो वरी इन्हनि नॉविलनि ब्राविलनि में कडुहिं कडुहिं अहिडियूं गाल्हियूं ईंदियूं आहिनि, जो डिप्रेशन महसूसु थियण लगंदो आहे ऐं डॉक्टरनि जो चवणु आहे त डिप्रेशन तरह तरह जे बीमारियुनि खे जनमु डुंदो आहे।”

अजायो गाल्हि अगुते न वधे, इन ख्याल खां बुढी अहिडियुनि हालतुनि में किताब ब्रिताब पढणु बंदि करे छडुंदी आहे ऐं पोइ जडुहिं नुंहुंणसि हेडांहुं होडांहुं हूंदी आहे, या जडुहिं कालेज वेंदी आहे, तडुहिं बुढी वरी किताबनि पढण जो शौकू पूरो कंदी रहंदी आहे।

पर हाणे त गुजिरियल कुझु डुंहिं खां बुढीअ जो पढणु वगैरह बंदि थी चुको आहे। खेसि रोजु राति जो एतिरो बुखारु ईंदो आहे, जो अखियूं गाल्हियूं थी वेंदियूं अथसि ऐं सजी सजी राति बुढी मंजीअ ते पेई पेई किंजंदी रहंदी आहे। एतिरे कळुरु जो लकुणु भरि में हूंदे बि खेसि उथण विहण में कुझु तकलीफ महसूसु थींदी आहे।

सिर्फु एतिरो हुजे तडुहिं बि ठीकु, पर हाणे त डाक्टरनि बि अजबु अजबु निराशा भरियूं गाल्हियूं चवणु शुरू करे छडियूं आहिनि।

पोढीअ जे नुंहुं पुट खे बि हाणे हिकु ड़ाहिकाउ वेढे वियो आहे त किथे इं न थिए त बुढी इते ई मरी पवे ऐं सज्जो खऱ्चु बजाइ ब्रियनि भाऊरनि जे, हुननि जे सिर ते अची पवे ऐं सिफ्फ खऱ्च जी गालिह हुजे, तड़हिं बि ठीकु पर मौत खां पोइ सज्जे साल ताई को न को खिटरागु लग्गो ई पियो हूंदो आहे। अहिडनि खिटरागुनि लाइ उते फुर्सत कंहिं वटि हुई।

जोइ सां काफी सुसिपुसि करण बइदि, पुटसि ई अची बुढीअ खे चयो, “अमां!.... मां भायां थो त तोखे हिते जी आबहवा हाणे भांइ कोन थी पवे.... तुंहिंजी तबियत ठीकु कान थी रहे ऐं हेडांहुं असीं तुंहिंजे इलाज बिलाज लाइ बि ठीकु तरह ध्यान नथा डुई सघूं कुझु त इन में डोहु असां जो बि आहे। डिसु अमां! असां बुई सुबूह जो ई पंहिंजे नैकिरीअ ते हलिया वेंदा आहियूं बार बि वेचारा स्कूल हलिया था वजनि घणे कम हुअण करे, मां अक्सरि राति खां अगु घरि पहुचां कोन थो अहिडीअ हालति में असां तुंहिंजो पूरो ख्यालु नथा रखी सघूं न अमां! अ.... हींअं था करियूं जेकड़हिं तुंहिंजी मर्जी हुजे त तोखे भाऊअ वटि पूने रवानो करे छडियूं !”

पोढी समझी वेई त हाणे खेसि वरी सफ्रु करिणो पवंदो। हमेशह इं ई थींदो रहियो आहे त संदसि पुट कंहिं न कंहिं बहाने बुढीअ खे हिक बिए डांहुं मोकिलांद रहंदा आहिनि। हूअ वेचारी बणिजी, पुटनि जे मर्जीअ मुताबिकु हिते खां हुते ऐं हुते खां हिते जो सफ्रु कंदी रहंदी आहे।

हकीकृत में इन्हनि थाकाईदड यात्राउनि मां हूअ बिरु थी चुकी आहे। पर हयातीअ जा बाकी डॉहं हूअ इं ई पुटनि जे मर्जीअ मुताबिकु, जीअं तीअं कटणु थी चाहे।

अजु बि पंहिंजे हुन पुट जी गालिह खेसि सुठी न लगी पर तड़हिं बि बेदिलियो पुट सां सहमति थींदे चयाई, “इं ठीकु आहे जीअं तोखे ठीकु लगे, करि हूंअं सचु त इहो आहे, पुट! मां हाणे चडीअ तरह उथी वेही बि नथी सधां पर वरी बि जीअं तोखे ठीकु लगे !”

पुट खे बि अंदर ई अंदर में महसूसु त थियो पिए त बुढी सचुपचु सफ्रु करण लाइकु कान्हे, पर हुन त हकीकृत में ईदड हालतुनि ऐं खऱ्च खां पाणु बचाइणु थे चाहियो।

तड़हिं वरी माउ खे जणु समझाईर्दे हुन चयो, “न, अमां!.... तोखे का तकलीफ कान थींदी। पूने ताई सिधी रिजवेशन मां कराए थो छडियां। आराम सां सुम्हंदी वजिजाई उते स्टेशन ते तोखे भाऊ लाहिण त ईदो ई!”

बुढीअ बि इन गालिह ते को वधीक जिडु न कयो। खेसि खऱ्चर हुई त थियणो त उहो ई आहे जेको पुटु चाहींदो। इन करे पुट खे चयाई, “ठीकु आहे तूं मुरारीअ खे तार करे छडि त अमां अचे थी.... गाडीअ वगैरह लाइ बि तूं खेसि लिखी छडिजि त कड़हिं ऐं कहिडीअ गाडीअ में ईदी!.... !”

ब्रिनि चइनि डॉहंनि बैदि माणसि जे वजण जी तैयारी थी वेई। वडे भाऊ खे अगु में ई तार मोकिले छडी हुई हुन शाम जो जड़हिं माउ खे स्टेशन ताई वठी वजण लाइ हू टैक्सी कराए आयो

त घर जा सभु भाती ब्रह्मिरि निकिरी आया। नुहुं बुढ़ीअ खे पेरें पेर्इ त ब्रानि बि अची डाड़ीअ खां आशीर्वाद वरिती। नौकिरियाणी बि चुपचापि बीही डिसंदी रही। पुट माउ खे हथ खां पकिड़े टैक्सीअ में विहारियो। सामानु को घणो त होसि कोन। हिक नंदिड़ी बैग हुअसि, जा पुटसि खणी, ड्राईवर जे भरि वारी ख़ाली जग्ह ते रखी छड़ी। पोइ हू अंदरि माउ सां गडु टैक्सीअ में पुठियां बजी बेठो।

टैक्सी स्टार्ट थियण खां अगु हिक ब्रार अची डाड़ीअ खां पुछियो, “अमां!.... को किताबु खिताबु रस्ते लाइ आणे डियाइ....?”

जुण मुअल आवाज़ में बुढ़ीअ चयो, “अडे, न पुट!.... हाणे त बसि मनु बि पढ़ण खां जुण खजी वियो आहे !”

टैक्सी स्टार्ट थी त बुढ़ीअ सभिनी डांहुं ऐं घर जे फाटक डांहुं हसरत भरियुनि निगाहुनि सां निहारियो। हूआ निहारींदी ई रही तेसीं, जेसीं सभु कुझु संदसि निगाहुनि खां ओझलु न थियो हुओ। ब्रार बि आखिरि ताई टैक्सीअ डांहुं निहारे निहारे हथ लोडींदा रहिया।

टैक्सीअ जड़हिं रस्तो पारि कयो त पुट जुण पाण खे डोहारी महसूसु करण लगो त हिन हालति में माउ खे सफर ते मोकिले, हू को सुहिणो कमु कोन करे रहियो हुओ। रखी रखी हू कड़हिं माउ जे कमज़ोर ऐं घुंजनि पियल चेहरे डांहुं निहारे रहियो हुओ त कड़हिं पाण खे डोहारी महसूसु करे कंधु हेठि पिए करे छड़ियाई। बुढ़ीअ जे आजमूद्गार अखियुनि इहो सभु परखे वरितो। इन करे पुट खां पुछी ई बेठीए “छा पियो डिसीं पुट?”

पुट छा चवे? हुन खे त कुझु सुझियो ई न पिए त माउ खे कहिड़े जवाबु डिए। पर पोइ बि को न को जवाबु डियण जे ख़तिरि हुन खे चयो, “.... हू उ मूं चयो पिए, अमां! त उते जड़हिं तबीयत ठीकु थी वजे त हिते हली अचिजाई वरी ! हां?”

फिको मुकर्दे बुढ़ीअ चयो, “हा, हली ईदसि जिंदह रहियसि त हूं अं हकीकत में पुट! सफर करे करे हाणे मां थकिजी पेर्इ आहियां....! हाणे मूँखां हर बीं टीं महिने गड़ीअ जी मुसाफिरी पुजे कान थी....!”

पुट खे लगो त माणसि जे आवाज़ में को अजीबु किस्म जो डुखु समायलु हुओ।

स्टेशन आई त माउ खे सहारो डियण लाइ पुट अवलि ई टैक्सीअ मां लही आयो। बुढ़ी जड़हिं टैक्सीअ मां लहण लगी त खेसि ध्यानु आयो त लकुण त हुअ घरि ई भुलिजी आई आहे। हुन पुट खे जड़हिं इहा गाल्ह बुधाई त पुटसि जवाबु डिनो, “परवाह नाहे हिते ई पियो हुजे जड़हिं तूं पूने खां मोटी ईदीअं, तड़हिं कमि अची वेंदो तेसीं उते भाऊअ खे चइजि हू तोखे नओं लकुणु आणे डोंदो!”

बुढ़ीअ को बि जवाबु कोन डिनो, सिफ़ थोरो मुरिकी डिनाई।

हिक हथ में बैग खणी, बिए हथ सां माउ खे सहारो डींदो, हू खेसि स्टेशन जे अंदरि वठी वियो। माउ जे लाइ हिक बर्थ जी रिजर्वेशन हुन अगुवाट ई कराए छडी हुई, इनकरे विहण या सुम्हण लाइ जगुहि हथि करण जी तकड़ि त खेनि हुई कान।

गाडीअ में पहुची, माउ खे हुन संदसि बर्थ ते लेटाए छड़ियो। बैग हुन संदसि बर्थ जे हेठां ई रखी छडी ऐं पोइ टिकेट माउ खे डींदे पुट चयो, “हां, अमां! हीअ टिकेट पाण वटि संभाले रखु!”

हथ में टिकेट वठंदे बुढीअ थोरो मुर्कियो ऐं पोइ जणु दबियल आवाज़ में चयाई, “तूं वजणु चाहीं त भली वजु पुट ! अजा तोखे काफ़ी परे वजिणो आहे।”

“हलियो वेंदुसि अमां ! तूं फिक्रु छो थी करीं को बारु त आहियां कोन, जो केर खणी वेंदो।” पुट जवाबु डिनो।

बुढीअ को बि वधीक जिदु न कयो।

गाडी छुटण में अजा टाईमु पियो हुओ। इन करे हुन माउ खे चयो, “अमां, गाडी छुटण में अजा देरि आहे, चांहि बाहिं पीअंदीअं?”

बुढीअ इंकारु कोन कयो। चयाई, “वठी अचु भली !”

हू चांहिं वठी मोटियो त डिठाई, माणसि जूं अखियूं बंदि हुयूं। खेसि लग्ने शायदि माणसि खे झूटो बूटो अची वियो आहे। इन करे माउ खे जागाइण जे ख्याल खां हुन खेसि सडु कयो। पर माणसि शायदि संदसि सडु कोन बुधो, इन करे माउ खे थोरो धूंधाडे हुन खेसि जागाइण चाहियो।

माउ खे धूंधाडींदे ई हू छिरिकी वियो। बुढीअ जो हथु बर्थ खां लटिकी आयो।

हिक हलिकी चीख़ पुट जे मुंहं मां निकिरी वेई। चांहिं जो कोपु संदसि हथनि मां किरी पियो।

इहा शायदि बुढीअ जे आखिरीनि सफ़र जी तयारी हुई।

नवां लफ़्ज़ :

हयाती = जिंदगी, जीवन

बेघी मचणु = ज़ोरु वधणु

सुरु पी वजणु = दुख जो इजिहारु न करणु

नूर = नज़र, रोशनी

मुलह = समझोतो, क़रारु

कन भरणु = चुगिली हणणु, भड़िकाइणु

चालाणो = देहांतु, मौतु

डोहारी = गुनहगारु

वर्ताउ = वहिंवारु

खिटरागु = झंझटु

वडवातियो = घण-गाल्हाओ

जोड़ = पत्नी

दब चाढणु = छिड़िबुणु, दड़िकका डियणु

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हवाला डुई समुझायो :-

- (1) अड़ी, हिन सफर जो त को डपु कान्हे, डपु अथामि उन सफर जो, जाहिं में कुन्जु माणहू
कुल्हो डुई वजी मागि पहुचाए ईदा आहिना।
- (2) हूंअं सचु त इहो आहे पुट ! मां त हाणे चडी तरह उथी वेही नथी सघां।

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो :-

- (1) बुढीअ जे धीअरुनि जो पौहिंजे भाउरनि सां कहिडो संबंधु रहियो हो?
- (2) बुढीअ खे पौहिंजे पुटनि वटि वारे सां छो रहिणो पवंदो हो?
- (3) बुढीअ खे कहिडो शैंकु हो?
- (4) संदसि पुट बीमारु बुढीअ खे पूने रवानो करण जो बंदोबस्तु छो कयो?

सुवालु 3. हेठियनि लफऱ्जनि जा जिद (विरोधार्थी लफऱ्ज) लिखो :-

बर्बादु, घटि, पेका, संतोषु, निभागो ।

सुवालु 4. माना डुई जुमिलनि में कमु आणियो :-

सूर पी वजण, दब चाढणु, बेघी मचण, कन भरण ।

करण जोग्या कम :-

- (1) जदीदु शहरी जिंदगीअ बाबति इंसानी नातनि में आयल बदलाव बाबति बियूं के
कहाणियूं पढो।
- (2) पौहिंजे पसर्दि जे कहाणियुनि खे नाटकी रूपु डुई पेशि करियो।
- (3) सिंधीअ जे सुठियुनि कहाणियुनि जो बियुनि ब्रोलियुनि में तर्जुमो करियो।



सिंधी रीतियूं रस्मूं

— सम्पादक मंडल

रीतियूं रस्मूं, साठ सौण, डिण वार, विश्वास मान्यताऊं हरकंहिं समाज में पहिंजूं पहिंजूं थियनि थियूं। सिंधियुनि में पहिंजी सम्यता ऐं संस्कृति, जिनि जूं खास खूबियूं आहिनि, जिनि जी अलहदी सुजाणप काइम आहे, जुमण खां मरण ताई सभु रीतियूं रस्मूं रिवाज हलंदा अचनि था।

छठीअ जी रस्म

बार जुमण ते छठी थियणु माना नालो रखणु। रोही पूजणु माना जंड जी पूजा। दरियाहु पूजणु मतिलबु खूह, तलाव, हैंडपम्प या नल, मतिलबु जल जी पूजा।

मुनण जी रस्म

टिएं, सतें या तेरहें महिने बार जो मुनणु लहिराइणु।

जणिए जी रस्म

थोरे वडो थियण ते हिन्दू संस्कार मूजिबु जणियो पाइणु।

शादी ऐं उन सां वास्तो रखंदड रस्मूं

शादी हिकु सामाजिक बंधन आहे।

(1) छोकिरे छोकिरीअ लाइ लाइक जोगे घर जी तलाश।

(2) जनमु पत्रियूं (छठी, कुंडली) मिलाइणु।

(3) पक थियण ते मडिणे मिस्त्रीअ जी रस्म- कच्चा पका अखा (मूड़ा) छोकिरीअ वारा छोकिरे वारनि खे डेर्इ पक कंदा आहिनि। छोकिरो मुंडी पाए त चडा दगु डिबा आहिनि। पोइ मुहूर्त कढाए शादीअ जी पक कंदा आहिनि ऐं पोइ साठ सोण, डेव, हैड जो साठ, जंड बुकी, घडी खणणु, तेल जा साठ, डिख जा साठ, बोछिणी, ओरंगी, मुटुक बुधणु, लाडा वगैरह ग्राइणु। सतनि

सुहागिण्युनि जो घणो कमु हूंदो आहे। छोकिरे सां गडु एहनरु रहंदो आहे। छोकिरी मेहंदी लगाईदी आहे। घोटेतनि जी आजियां कुंवारेता शान सां कंदा आहिनि। चांउठि ते घोट खे बीहारे छोकिरी मुटुक जो दर्शन कंदी आहे। ससु दर डांवंग जो साठ कंदी आहे। जंहिं में थाल्ह में घोट ऐं कुंवारि जो साजो पेर रखाए, उनखे कुंवारि माउ खोर पाणीअ सां धोअंदी आहे। पोइ घोट ऐं कुंवारि जो हथियालो बुधो वेंदो आहे। पलउ पली बुधी मंडप में वेडीअ लाइ विहारे, घोट जो मुटुक लाहे, पण पाइबी आहे ऐं महराज वेडी पढी साथ निभाइण जी सिख्या डींदो आहे। पोइ सेणनि जी गडिजाणी थींदी आहे। कुंवारेता घोटेतनि खे डाजो डेवणु डई विदा कंदा आहिनि। कुंवारि खे जडहिं घोट वठी घर ईंदो आहे, घोट माउ खोरु छटींदी आहे। पोइ मथे ते डीओ ऐं ढकणु रखी, कुंवारि खे अंदरि डेवनि वटि विहारे, डितिर महण जी रस्म थींदी आहे। पहिरीं कुंवारि घोट सां, पोइ ससु सहुरे ऐं बियनि माइटनि सां लूण या कणिक जा बुक टे दफा हिक बिए खे डींदा वठंदा आहिनि। के कुंवारि खां दिले भरियल पाणीअ मां रुपया कढाईदा आहिनि। सालियूं गडिजी घोट जी जुती चोराईदियूं आहिनि ऐं भेणवीये जी खऱ्ची मिलण ते जुती वापस डींदियूं आहिनि।

बिए डींहुं कुंवारेता छोकिरे छोकिरीअ खे पाण वटि घुराईदा आहिनि, उनखे ‘सतावडो’ चइबो आहे।

मौत सां तालुक रखंदड संस्कार

कंहिं प्राणीअ जे गुजारे वजण ते मौत वारे घर में मातम छांयल हूंदो आहे। प्राणीअ जे भरिसां कानो ऐं डीओ बारे रखिबो आहे। तंहिं बइदि प्राणीअ खे स्नान कराए, चार कांधी काईअ ते खणी मसाण में जलाए ईंदा आहिनि। तंहिं खे ‘सर’ चइबो आहे। सुहागिण औरत गुजारे वजण ते संदसि संंध चिटी वेंदी आहे। टिएं डींहुं मसाण मां हालियूं चूंडे, शाम जो पगिडियूं थींदियूं आहिनि। डुहें डींहुं डहाके जूं लोटियूं पर्डित भराईदो आहे। यारहें डींहुं पुष्कर, हरिद्वार या कंहिं बि तीर्थ ते वजी क्रियाकर्म कराईदा आहिनि ऐं बारहे डींहुं पिंड दान करे, बारहे जी रस्म अदा कई वेंदी आहे। तंहिं बइदि पहिरीं ‘मासिक’ याने महीने महीने महराज (पर्डित) खे खाराइबो हो, पोइ ‘बारहमासी’ कबी हुई पर हाणे सभु कुछ बारहे ते ई रस्मूं करे उजर लाहे छडिबो आहे। उजर माना गम खऱ्तमु कयो वेंदो आहे। गम याने गऱ्मीअ जो माहोल समाप्त थी वेंदो आहे।

सिंधी पोशाक

सिंध में असांजा अबा डाडा पर्हिंजी खास पोशाक धोती, जामो, अछी पण ऐं कुलहे ते बोलणु रखंदा हुआ। पैसे वारा शाहूकार कोटु या सदरी बि पाईंदा हुआ। कोटु बि शेरवानीअ वांगुरु डिघो पाईंदा

हुआ। ज़ाइफ़ाऊं चोलो पेशगीर (पड़ो) चादर, जेका घर खां ब्राह्मिरि वजण ते पाईदियूं हुयूं ऐं आखिड़ी कढी पाण खे ढके हलंदियूं हुयूं। घर में ज़ाइफ़ाऊं रओ, चोलो, सुथण (पायजामो) पाईदियूं हुयूं। वडियूं नक में 'नथ', जंहिं में हिकु गाड़हो याकूतु ऐं ब्र अछा मोती हूंदा हुआ, पाईदियूं हुयूं। बांहं में चूड़ियूं ऐं ठूंठ ठकाउ पाईदियूं हुयूं। गिचीअ में लुकिड़ी पाईदियूं हुयूं। कननि में दुर, आडुरियुनि में छलिड़ा मुंडियूं ऐं पेरनि में छेर (कड़ी) बि पाईदियूं हुयूं। वारनि में सोना बकल बि पाईदियूं हुयूं। मर्द पिण सोना ब्रीड़ा (बटण) विझी ख़मीस पाईदा हुआ। गिचीअ में बि सोनो डुरो (चैन) ऐं हथनि में मुंडी पाईदा हुआ।

डिणनि सां जुडियल रीतियूं रस्मूं

सिंधी समाज में वडा वडा डिण मल्हाइण जो रवाज आहे। चेट में चेटीचंड उड्डेरेलाल जो जनमु डींहुं वडे धूमधाम सां मल्हाईदा आहिनि। केतिरा वापारी उन डींहुं नओं साल हुअण करे बहियूं खाता रखंदा आहिनि। वेसाख में अखण टीज धार्मिक त्यौहार ते नियाणियुनि खे दिला मटका, विजिणियूं ऐं फल फ्रूट डिनो वेंदो आहे। जेठ में जेठी चंड या उमास मल्हाई वेंदी आहे। सयूं पुलाउ चणा वगैरह ताम ठाहे, दरियाह ते बजी पूजे, पुटनि, भाउरनि, पतीअ, पेकनि, साहुरनि लाइ दुआऊं घुरंदियूं आहिनि। आखाड़ में अक्सर शादियूं मुरादियूं थियनि थियूं। सांवण में गोगिड़ो, नंडिड़ी थधि ड़ी (सतइं), राखी, टीजिड़ी, वडी थधिड़ी (सतइं), जन्माष्टमी वगैरह डिण मल्हाया वेंदा आहिनि। बडे महिने में श्राद्ध थियनि ऐं सहाईअ अष्टमीअ ते महालक्ष्मीअ जो सगिड़ो ब्रधंदा ऐं छोड़ींदा आहियूं। असूअ में दशहरो ऐं डियारी धूमधाम सां मल्हाई वेंदी आहे। कतीअ में करकत, गुरुनानक शाह जो जनम उत्सव मल्हायो वेंदो आहे। नाहिरीअ में पवे सीउ। चविणी आहे- 'नाहिरी डे बुहारी, झटि डींहुं पूरो।' पोह में 'तिरमूरी' उत्तराण ईंदो आहे। तंहिं में तिरनि जा भोरींडा, सुको मेवो वगैरह खाइबो आहे। दान कबो आहे मांघ में, अचे 'शिवरात्रि'। तंहिं खां पोइ फगुण में होली ईंदी आहे।

सिन्धी शिकिलि शोप, बीहक, रधे पके, पाइण खाइण, बीहक रहिणीअ कहिणीअ में सभ खां निराला, भली कहिड़ी बि भाषा ग्राल्हाईनि, त बि संदनि मां सिंधियत जी सुरहाणि पेर्ई बखे। सिंधियुनि जो वर्सो विसारणु डुखियो आहे। वजूद ख़तम करण लाइ अजु ताई कर्हिंखे ताकत कोन्हे। सदाई जुडिया हुजनि।

नवां लफ़्ज़ :

घडी खणणु = मथे ते मटिकी रखी पाणी भरण वजणु
बोछिणी = अछे रए ते गुल फुल भरे डिख वक्त पाइणु
अहिनरु = घोट जो भेणवीयो
लाडा = शादीअ जा गीत
डाजो = दहेज
वेडी = शादीअ जा मंत्र, हथियालो
बीडा = बटण
भोरींडा = तिरनि जा लडू, मुठिया
गोगिडो = नांग पंचमी

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो :-

- (1) सिंधी समाज जे रस्मुनि बाबति तळांखे कहिडी ज्ञाण आहे?
- (2) शादीअ जे रस्मुनि बाबति खोले लिखो।
- (3) सिंधियुनि जी खासि पोशाक कहिडी आहे?
- (4) बारहनि महिननि जे डिणनि जा नाला लिखो।
- (5) सिंधी डिण-वार ते मज़मून लिखो।



सिंधी शूरवीरनि जो इतिहासु

– ईसरसिंह बेदी

लेखक परिचय-

ईसरसिंह बेदीअ जो जनमु सिंधु जे नवाबशाह ज़िले ग्रोठ शहदापुर में थियो। हिननि जा छपियल किताब हेमूं कालाणी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, कौमी तराना, ब़ुरनि जो महावार रिसालो आहे। हीउ स्वतंत्रता सैनानी आहे। हिंदुस्तान में रेल्वे जी नौकरीअ मां रिटायर्ड आहिनि।

हिन लेख में हुननि भारत जे सिंधी सपूतनि जे डिनल कुर्बानियुनि ते रोशनी विधी आहे।

भारत जे विरहाडे बइदि असां सिंधियुनि पर्हिंजे पेरनि ते बीहण ऐं वसण लाइ जेके जफ़ाकशियूं कर्यूं ऐं परेशानियूं डिठियूं तकलीफूं सठियूं, उन लाइ भारत जा रहवासी बि दाद डॉंदा आहिनि। जीहिं हिमत ऐं हौसिले सां असां सभिनी सां मिली जुली हलिया आहियूं। सदाई कंहिं भेदभाव जे बिना सभिनी सां शांतीअ ऐं प्रेम जो वहिवारु कयो आहे। कुर्बु, प्रेमु वंडियो आहे। सुख दुख में हर गुलिह में भागीदार रहिया आहियूं। देश जे विकास ऐं वाधारे में पाणु मोखियो आहे।

सिंधियुनि जी वीरता ऐं कुर्बानियुनि सां शूरवीरनि जो अमर इतिहासु भरियो पियो आहे। हक़ीक़त में भारत जी आज़ादीअ लाइ सभ खां वधीक सिंधियुनि पर्हिंजो प्यारो प्रदेश सिंधु छडे डिनो आहे। दुनिया जे इतिहास में देश जी आज़ादीअ लाइ एडी वडी कुर्बानी, एतिरो वडो त्यागु विले नज़रि ईदो।

भारत जी आज़ादीअ लाइ ‘भारत छोडो आंदोलन’ में वीहनि सालनि जे ग्रंथिरू नौजवान विद्यार्थी हेमूं कालाणी रेल्वे लाईन जा बोल्ट कढंदे पकिड़िजी पियो, खेसि काफ़ी तकलीफूं ऐं ईज़ाअ डिना विया, लेकिन हुन पर्हिंजनि साथियुनि जा नाला कोन बुधाया। मुंहं मां बिडुकु न बोलियो, खिलदे खिलदे ‘भारत माता जी जय’ चई फासीअ ते चढी वियो, शहादत जो जामु पी वियो।

वीर हासाराम पमनाणीअ, भगुत कंवरराम जे क़ातिलनि खे न पकिड़ण सबबि असम्बलीअ जे अंदरि निडर बणिजी वडे वाके खुलियल लफ़्जनि में सरकार जो विरोध ज़ाहिरु कयो। उनखे डॉंहं डिठे घर डांहं वेंदे रस्ते ते खब्रीसनि खेसि गोलीअ जो निशानो बणायो।

ਸਮਾਟ ਡਾਹਰਸੇਨ ਸਿੰਘੁ ਮਥਾਂ ਅਰਥਨੀ ਜੇ ਹਮਲੇ ਵਕਿਤ ਸ਼ੂਰਵੀਰਤਾ ਸਾਂ ਮੁਕਾਬਿਲੇ ਕਿਧੋ ਏਂ ਦੁਸ਼ਮਨਾਨਿ ਜ੍ਰੂ ਧਜਿਧ੍ਰੂਂ ਤਡਾਏ ਛਡਿਧ੍ਰੂਂ। ਆਖਿਰ ਮੌਹਨ ਸ਼ੂਰਵੀਰ ਖੇ ਧੋਖੇ ਸਾਂ ਮਾਰਿਯੋ ਕਿਧੋ। ਸਮਾਟ ਡਾਹਰਸੇਨ ਜੋ ਬਲਿਦਾਨੁ ਏਂ ਤਨ ਬਝਦਿ ਸਂਦਸਿ ਪੂਰੇ ਪਰਿਵਾਰ ਜਾਲ, ਧੀਅਰੁਨਿ ਏਂ ਭੇਣ ਸਮੇਤਿ ਸਭਿਨੀ ਬਲਿਦਾਨੁ ਛਿਨੋ।

ਕੀਰ ਤਡੇਰੇਲਾਲ, ਮਿਖ ਬਾਦਸ਼ਾਹ ਜੇ ਕਥ ਮਾਂ ਘਮਣਂ ਜੀ ਕਿਲੀ ਕਢੀ ਸਿੰਧੀ ਹਿੰਦੁਨਿ ਜੀ ਰਖਾ ਕਈ। ਇਨ ਤਰਹ ਕੀਰ ਨੇਣੂਰਾਮ ਸ਼ਾਰਮਾ, ਮਹਾਰਾਜ ਨਵੂਰਾਮ ਸ਼ਾਰਮਾ ਏਂ ਕਿਧਾ ਪੱਹਿੰਜਾ ਸੀਸ ਡੇਈ ਸ਼ਵਾਭਿਮਾਨ ਸਦਿਕੇ ਗੋਲੀਅ ਜੋ ਸ਼ਿਕਾਰੁ ਬਣਿਆ। ਸੰਤ ਕਾਂਵਰਾਮ ਜੀ ਸ਼ਹੀਦੀਅ ਪਿਣਿ ਅਮਰ ਇਤਿਹਾਸ ਖੇ ਰੋਸ਼ਨੁ ਕਿਧੋ।

ਭਾਰਤ ਜੇ ਆਜਾਦ ਥਿਧਣ ਬਝਦਿ ਪਿਣਿ ਸਿੰਧੀ ਸ਼ੂਰਵੀਰਨਿ ਦੇਸ਼ ਜੇ ਸਰਹਦੁਨਿ ਜੋ ਬਚਾਉ ਕਦੇ ਦੁਸ਼ਮਨ ਸਾਂ ਲਡਾਈਅ ਮੌਹਨੇ, ਪੱਹਿੰਜੀ ਜਾਨਿ ਜ੍ਰੂ ਕੁਰੰਨਿਧ੍ਰੂਂ ਛਿਨੀਧ੍ਰੂਂ। ਹੂ ਮੁਕੰਦੇ ਮੁਕੰਦੇ ਪੱਹਿੰਜੇ ਦੇਸ਼ ਤੇ ਕੁਰੰਨ ਥੀ ਕਿਧਾ ਏਂ ਪੱਹਿੰਜੇ ਸਿੰਧੀ ਸਮਾਜ ਜੋ ਮਾਨੁ ਮਥੇ ਕਰੇ ਕਿਧਾ।

1965 ਮੌਹਨ ਭਾਰਤ ਪਾਕਿਸ਼ਾਨ ਜੇ ਲਡਾਈਅ ਵਕਿਤ ਸਿੰਧੀ ਸ਼ੂਰਵੀਰ ਪ੍ਰੇਮ ਰਾਮਚੰਦਾਣੀਅ ਪੱਹਿੰਜੋ ਪੂਰੇ ਜਲਵੇ ਡੇਖਾਰਿਧੋ। ਦੁਸ਼ਮਨ ਜਾ ਹੋਸ਼ ਗੁਸੁ ਕਰੇ ਛਡਿਧੋ, ਤੁੰਦ ਖਟਾ ਕਰੇ ਛਡਿਧੋ। ਹਿਨ ਸ਼ੂਰਵੀਰ ਜੇ ਜੋਸ਼ ਏਂ ਜਜ਼ਬੇ ਜੀ ਸਂਦਸਿ ਆਫੀਸਰਨਿ ਬਿ ਸਾਰਾਹ ਕਈ। ਪਾਕਿਸ਼ਾਨ ਜੇ ਬਦੀਨ ਹਵਾਈ ਅਡੇ ਏਂ ਬਾਰਡਰ ਖੇ ਨੇਸ਼ਨਾਵ੍ਹੁਦ ਕਦੇ ਪੱਹਿੰਜੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਸਾਂ ਲਾਸਨੀ ਕੁਰੰਨੀ ਛਿਨੀ ਏਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਲਾਇ ਅਮਰ ਥੀ ਕਿਧਾ।

1971 ਮੌਹਨ ਭਾਰਤ ਪਾਕਿਸ਼ਾਨ ਜੀ ਬੀ ਲਡਾਈਅ ਮੌਹਨ ਪਿਣਿ ਰਾਜਸਥਾਨ ਮਾਂ ਅਜਮੇਰ ਸ਼ਾਹਰ ਜੇ ਹੋਨਹਾਰ ਨੌਜਵਾਨ ਮੇਜਰ ਜੇ ਤਹਿਦੇ ਤੇ ਮਿਲੇਟ੍ਰੀ ਆਫੀਸਰ ਰਮੇਸ਼ ਬਦਿਲਾਣੀਅ ਜਮ੍ਮੂ ਕਸ਼ਮੀਰ ਸਰਹਦ ਤੇ ਦੁਸ਼ਮਨ ਹਮਲਾਵਰਨਿ ਜ੍ਰੂ ਧਜਿਧ੍ਰੂਂ ਤਡਾਈਈ ਪੱਹਿੰਜੀਅ ਜਾਨਿ ਜੀ ਕਾ ਬਿ ਪਰਵਾਹ ਨ ਕਈ ਏਂ ਅਗਿਤੇ ਵਧਦੀ ਰਹਿਯੋ। ਅਚਾਨਕ ਦੁਸ਼ਮਨ ਜੇ ਸਿਪਾਹਿਧ੍ਰੂਨਿ ਹਿਨਖੇ ਬੇਰੇ ਵਰਿਤੋ ਏਂ ਓਚਿਤੋ ਹਮਲੇ ਥਿਧਣ ਸਬਕੁ ਸ਼ਹੀਦੁ ਥੀ ਕਿਧਾ। ਪੰਜਨਿ ਸਤਨਿ ਡੁੰਹੰਨਿ ਬਝਦਿ ਸਂਦਸਿ ਸ਼ਾਦੀਅ ਜੋ ਮਹੂਰਤ ਨਿਕਿਤਲੁ ਹੋ।

ਮੁੰਬਈਅ ਜੇ ਨੌਜਵਾਨ ਕਿਸ਼ਨ ਮਲਕਾਣੀਅ ਪਿਣਿ ਹਿੰਦ ਪਾਕ ਲਡਾਈਅ ਵਕਿਤ ਪਠਾਣਕੋਠ ਸਰਹਦ ਤੇ ਪੱਹਿੰਜੀ ਕੀਰਤਾ ਜੋ ਜਲਵੇ ਡੇਖਾਰਿਧੋ। ਲਡਾਈਅ ਮੌਹਨੇ ਲਡਾਂਦੇ ਦੇਸ਼ ਮਥਾਂ ਕੁਰੰਨੁ ਥੀ ਕਿਧਾ।

ਇਨ੍ਦੌਰ ਜੇ ਬਾਕੀਹਨਿ ਸਾਲਨਿ ਜੇ ਨੌਜਵਾਨ ਕੀਰ ਭਰਤਲਾਲ ਮਂਸਦ ਕਰੀ ਬਾਂਗਲਾਦੇਸ਼ ਜੇ ਸੁਕਤੀ ਸੰਗ੍ਰਾਮ ਮੌਹਨ ਵਿਮਾਨੀ ਛਟਿਧ੍ਰੂਨਿ ਮੌਹਨ ਦੁਸ਼ਮਨ ਜੇ ਫੌਜ ਸਾਂ ਟਕਰ ਖਾਧੋ। 8 ਦਿਸ਼ਵਰ 1971 ਤੇ ਸ਼ਹੀਦੀ ਜਾਮੇ ਪਾਏ ਕੁਰੰਨੁ ਥਿਧਾ।

ਸਿੰਧੀ ਸ਼ੂਰਵੀਰਨਿ ਜ੍ਰੂ ਹੀ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਕੁਰੰਨਿਧ੍ਰੂਂ ਏਂ ਸ਼ਹਾਦਤੁਂ ਅਸਾਂ ਸਿੰਧਿਧ੍ਰੂਨਿ ਜੇ ਦੇਸ਼ ਪ੍ਰੇਮ, ਮੁਲਕ ਸੁਹਿਤ ਜਾ ਮਿਸਾਲ ਪੇਸ਼ ਕਨਿ ਥਿ੍ਹੂਂ ਤ ਸਿੰਧੀ ਸ਼ੂਰਵੀਰ ਕੀਅਂ ਸਿਰੁ ਤਿਰੀਅ ਤੇ ਖਣੀ ਦੇਸ਼ ਖਾਤਿਰ ਮਰੀ ਮਿਟਣ ਲਾਇ ਸਦਾਈ ਅਗਿਤੇ ਥੀ ਰਹਿਯਾ ਆਹਿਨਿ, ਜੱਹਿਂ ਲਾਇ ਸਿੰਧੀ ਸਮਾਜ ਖੇ ਤਨਹਿਨਿ ਤੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਫ਼ਖੂਰ ਰਹਦੀ।

नवां लफ़्ज़ :

विरहाडे = बंटवारे

जफ़ाकशी = सख्त महिनत

दाढु = तारीफ़, प्रशंसा

कुर्बु = सिक

वडे वाके = ज़ोरदार आवाज़

खबीसनि = दुष्टनि

मुर्कदे = खिलंदे

लासानी = बेमिसालु

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) सिंधियुनि जो ब्रियनि सां कहिडो वहिंवारु आहे?
- (2) भारत जे आजादीअ में सभिनी खां वडो त्यागु सिंधियुनि खे करिणो पियो, सो कीअं?
- (3) हेमूं कालाणीअ खे छो फासी डिनी वर्ई?
- (4) वीरु हासारामु पमनाणी छाजे करे गोलियुनि जो शिकारु थियो?
- (5) शूर्वीर प्रेम रामचंदाणीअ कीअं पंहिंजी कुर्बानी डिनी?
- (6) रमेश बदिलाणीअ जी शहादत कीअं ऐं किथे थी?

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब हिक सिट में डियो :-

- (1) भारत जे विरहाडे में सिंधियुनि कहिडी कुर्बानी डिनी?
- (2) उड्डेरलाल कंहिंजे कंध मां किली कढी खेसि सिधो कयो?
- (3) रमेश बदिलाणी कहिडे शहर जो नौजवानु हो?
- (4) इन्दौर जे वीर शहीद जो नालो लिखो।
- (5) किशन मलकाणी कहिडी सरहद ते शहीदु थियो?

सुवालु 3. हेठियनि इस्तलाहनि जी माना लिखी जुमिलनि में कमु आणियो :-

- | | | |
|------------------------|------------------|----------------------|
| (1) पेरनि ते बीहणु | (2) पाणु मोखणु | (3) जलवो डुखारणु |
| (4) होशु गुमु करणु | (5) डंद खटा करणु | (6) नेस्तानाबूद करणु |
| (7) सिरु तिरीअ ते खणणु | (8) मरी मिटिजणु | |



सफेद हंस

– मनोहर निहालाणी

लेखक परिचय-

मनोहर निहालाणीअ जो जनमु सिंध जे नवाबशाह में 9 जनवरी 1940 ई. ते थियो। हिन आला अदीब सिंधी साहित्य जी लासानी शेवा कई आहे। हिन जे रचनाउनि जी ब्रोली सलीसु आहे एं पेशकश में बि पुरळगी आहे।

अदीबनि जूं जीवनियूं हथि करणु एं संदनि किताबनि जी साहित्यक कथ करण जो डुखियो कमु पाण ते हमवार कयो आहे। हिन साहित्यक मज़मून, ब्राल कहाणियूं, एकांकियूं एं साहित्यक इतिहास ते लेख लिखिया आहिनि। सिंधीअ जा आँला अदीब जेको साहित्यिक मज़मूननि जो इंतखाब आहे, लिखियो आहे। श्री मनोहर निहालाणीअ जी साहित्य जगत में क्यल खिज़मत खे ध्यान में रखांदे वक्त बि वक्त सरकारी तोडे गैर सरकारी इदारनि वटां मान सम्मान मिलंदा पिए रहिया आहिनि।

कुटियाना जे शहर में महादेव नाले हिकु कुडिमी रहंदो हो। शाहूकार त हो, पर डाढो सुस्त हो। न त हू पहिंजी खेतीअ जी संभाल करण वेंदो हो एं न वरी पहिंजे गुदाम जी का देखभाल कंदो हो, उनखे चडियूं गायंयूं एं मेंहूं हुयूं, जेके गऊशाला में रखियल हुयूं, उन्हनि जी संभाल बि ग्वालनि जे हवाले हूंदी हुई। घर डांहुं बि संदसि रुखु लापरवाहीअ वारो हो, सभु कम नौकरनि ते छडे डिना हुआई। हुनजी सुस्तीअ करे संदसि घर जी हालति बिगडी वेई, बुनीअ में नुक्सान पवण लगुसि। गांयुनि एं मेंहुनि जे खीर एं गीह मां हुन खे को खासु फाइदो कोन थे पियो। हू वियो थे डोंहों डोंहुं पोइते पवंदो।

हिकिडे डोंहुं महादेव जो संगिती नानकु हुनजे घर आयो। नानक महादेव जे घर जो हालु डिठो त डाढो डुख थियुसि, जो संदसि मित्र खे मझमूली सुस्तीअ करे हेडो नुक्सान थे सहिणो पियो। हुन महसूस कयो त सिधीअ तरह समुझाइण सां शायद सुस्तु महादेवु पहिंजो सुभाउ न बदिले, इन्हीअ करे हुन पहिंजे दोस्त जी भलाईअ लाइ खेसि चयो, “दोस्त! तुंहिंजी हालति डिसी मूंखे डाढो डुख थे थिए, तूं पुठिते पवंदो थो वजीं, उन हालति खे दूर करण जो हिकु सवलो उपाव मां ज्ञाणं थो।”

महादेव चयो, “भलाई करे उहो उपाव मूँखे बुधाइ, मां उहो ज़रूरु कंदुसि।”

नानक चयुसि, “बुधु! सुबूह जो पखियुनि जे जागण खां अगु मानसरोवर ते रहंदडु हिकु सफेदु हंसु हिते ईंदो आहे ऐं बिनि पहिरनि जो सिजु चढ़ंदे वापसि हलियो वेंदो आहे। इहा त मूँखे बि ख़बर न आहे त हू केडी महिल किथे हूंदो, पर मां एतिरो ज़रूर ज्ञाणां थो त जेको इनजो दर्शनु करे थो, तंहिंखे कंहिं ग़ालिह जी कमी नथी रहे।”

महादेव चयो, “अछा, त पोइ कुद्धु बि हुजे, मां उन हंस जो दर्शनु ज़रूरु कंदुसि।”

“डिसु कोशिश करि, मतां नसीबु ज़ोरु हुजेई।” इंएं चई नानकु हलियो वियो।

महादेवु बिए डीहुं प्रभात जो उथियो, हू घरां बाहिरि निकितो ऐं हंस जी गोल्हा में हलंदो, गुदाम डांहुं वियो, उते डिठाई त संदसि मजूरनि मां कोई उनजो अनाजु चोरीअ खणी वजी रहियो हो। महादेव खे डिसी हू शर्मसार थियो ऐं माफी वरिताई। गुदाम मां थी हू घरि मोटियो ऐं पोइ गऊशाला डांहुं वियो, उते जे ग्वाल गांइ जो खीरु डुही पहिरीं पहिंजी ज़ाल खे लोयो भरे थे डिनो। महादेव उनखे छिभियो। घरां नेरनि करे हंस जी गोल्हा में वरी निकितो, पर हंसु किथे बि नज़रि न आयो।

बिए डीहुं बि सुबूह जो सवेल उथी सफेद हंस जी गोल्हा में घुमदे घुमदे खेतनि में आयो। हुन डिठो त काफी सिजु चढ़ी अचण खां पोइ बि मजूर कम ते न आया हुआ। हू उते बीही रहियो, जडहिं मजूर आया, तडहिं उन्हनि खे देरि सां अचण जो डोरापो डिनाई। अहिडीअ तरह हू जिते जिते वियो थे, उते कंहिं नमूने हुनजो नुक्सान थियण खां बची थे वियो।

सफेद हंस जी गोल्हा में महादेवु हर रोज़ सुबूह जो सवेल उथण ऐं घुमण लगो। संदसि नौकरनि खे डपु लगो त कंहिं बि वक्ति संदसि सेठि अची सहिंडंदो। सो उन्हीअ डप खां हू लापरवाही छडे, सजो कमु संजीदगीअ सां करण लगा। चोरी थियणु बंदि थी वेई, सागिए वक्ति हुनजी सिहत पिणि सुधिरी। हू घरि वेठो रहण करे बीमार गुज़रांदो हो, घुमण फिरण सां हुनजी तंदरुस्ती ठीक थी वेई।

जाहिं खेत मां हिन खे डुह किवंटल अनाज मिलंदो हो, उन्हीअ मां हाणे पंजवीह किवंटल मिलण लगा। गऊशाला मां खीरु बि अगु खां झ़ज्जो अचण लगो।

हिकिडे डीहुं महादेव पहिंजे दोस्त नानक खे चयो, “यार! सफेदु हंसु त अजा ताई मूँखे नज़रि न आयो आहे, पर उन जी गोल्हा में जडहिं खां वियो आहियां, तडहिं खां मूँखे फ़ाइदो ई फ़ाइदो पियो आहे।”

नानकु खिलियो ऐं चयाई, “मित्र, मेहनत करणु ई उहो सफेदु हंसु आहे। मेहनत जा पंख हमेशह ऊजल हूंदा आहिनि। जेको मेहनत नथो करे, पहिंजो कमु नौकरनि ते छडे थो डिए, उनखे नुक्सानु सहिणो थो पवे। जेको पाण मेहनत थो करे, नौकरनि ते नज़रिदारी रखे थो, उहो धनु ऐं दौलतु, इज़ज़त ऐं मानु पाए थो।

नवां लफ़्ज़ :

संगिती = मित्र, दोस्तु, संजीदिगी = गंभीरता
पंख = पर ऊजल = साफ़

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब हिक सिट में डियो :-

- (1) महादेव कहिड़े शहर में रहंदो हो?
- (2) संदसि संगितीअ कहिड़े उपाव बुधायुसि?
- (3) गुदाम खां पोइ महादेवु केड़ाहुं वियो?
- (4) सुबूह जो सवेल उथी महारेव छा कयो?

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) कुड़िमी महादेव उपाव बुधण खां पोइ छा छा कम कया?
- (2) “मेहनत जो फलु” - “हिकु मिठो मेवो” मज़मून लिखो।

सुवालु 3. हेठियां हवाला लिखे :-

- (1) “भलाई करे उहो उपाव मूँखे बुधाइ, मां उहो ज़रूरु कंदुसि।”
- (2) “अछा त पोइ कुद्दु बि हुजे, मां उन हंस जो दर्शनु ज़रूरु कंदुसि।”
- (3) “डिसु कोशिश करि, मतां नसीबु ज़ोरु हुजेर्इ।”

सुवालु 4. ज़िद लिखो :-

शाहूकारु, सुस्तु, सुहिणो, सफेदु, लापरवाही।



जहिडो अनु, तहिडो मनु

— कन्हैया अगानाणी

लेखक परिचय-

कन्हैया अगानाणी जयपुर (राजस्थान) जो साहित्यकार आहे। संदसि जनमु सन् 1944 ई. में थियो आहे। सिंधी-हिंदी भाषा में संदसि केतिरा किताब छपिया आहिना। केतिरनि ई सरकारी एं गैर सरकारी इदारनि मां खेसि इनाम हासिल थिया आहिना। अख्खबार-नवीसीअ में संदसि योगदान रहियो आहे।

हथ में कुहाड़ी खणी करे जेडीमल कल्लाराम वण जे भरिसां आयो त वण हुन खे चयो- “असां तुंहिंजो छा बिगाड़ियो आहे, जो तूं असांखे मारण आयो आहीं?”

“असांजो कमु ई वणनि खे कटण जो आहे। जेकड्हिं असां तव्हांखे कोन कटींदासीं त ठेकेदार असांखे पैसा कोन डँदो। उहो पैसा न डँदो त असां रोटी किथां खाईदासीं एं पर्हिंजे बुरनि खे छा खाराईदासीं?” कल्लाराम चयो।

“तूं असांजी हचा (हत्या) करे पर्हिंजे बुरनि खे रोटी खाराए रहियो आहीं। छा तुंहिंजी आत्मा इहो चवे थी? छा तो इहो कोन बुधो आहे त ‘जहिडो अनु, तहिडो मनु’ याने त पर्हिंजे बुरनि खे जहिडी कमाई तूं खाराईदें, उहे बि अहिडा ई थी पवंदा।” जेडीमल वण चयुसि। त कल्लाराम चयो, “मूं अजु ताई इएं सोचियो ई कोन्हे वणदास।”

“न सोचियो अथेई त सोचि भाउ। असां तव्हांजा दुश्मन कोन आहियूं, असां त तव्हांजा दास आहियूं। तव्हां लाइ असां फल-फ्रूट एं गुल-फुल था डियूं, जीहं सां तव्हांखे सुठो खाधो पीतो थो मिलो। जडियूं-बूटियूं था डियूं, जेके तव्हांजे बीमारियुनि खे ठीकु थियूं कनि। थकल-टुटल मुसाफिरनि खे आराम था डियूं। परियुनि लाइ असीं हुननि जी मातृभूमि आहियूं। उहे असांजे बदन जे अलगि अलगि हिस्सनि ते पर्हिंजा आखेरा ठाहे करे आराम था कनि। उन्हनि घरनि में उन्हनि खे बुर था पैदा थियनि एं उहे असांजे शरीर जे अंगनि जे हिक हिस्से खां बिए हिस्से ताई उडी करे उडणु था सिखनि भाउ कल्लाराम।”

“इन्हीअ सां पैसा त कोन था मिलनि न वणदास। असांखे पैसा त ठेकेदार वटि काठियूं पहुचाइण सां ई मिलंदा आहिनि। जेके असीं तव्हांखे कटे करे ई हासिल था करे सघां” काठियर (लकड़हारे) कल्लाराम, वणदास खे चयो।

“चडो भाउ भला इहो त बुधाइ, मुहिंजे शरीर जे हिक हिक अंग खे कटे करे ठेकेदार खे डियण सां हू तोखे भला घणा पैसा डुंदो?”

“इहे ई के पंज सौ खनु रुपया।” कल्लाराम चयो।

“ऐं तूं पंज सौ रुपयनि जे खातिरि मुहिंजो कल्लु करे रहियो आहीं। मुहिंजी टारी-टारी कटे करे तूं उन्हनि मुसाफिरनि खे केतिरो न नुक्सान पहुचाए रहियो आहीं, जेके वेचारा मुहिंजे हेठां थधी छाव में वेही करे आराम था कनि। उन्हनि मरीज़नि खे केतिरो नुक्सान डुई रहियो आहीं, जिनि जो मुहिंजे पत्रनि ऐं गुलनि-फुलनि सां ठहियल दवाउनि सां इलाजु थो कयो वजे। उन्हनि ढाणि-ढोरनि ऐं ग्रीब माण्हुनि खे केतिरो दुखु थींदो, जेके मुहिंजे पत्रनि, गुलनि ऐं फलनि फ्रूटनि सां पहिंजो पेटु था भरीनि। हुननि पखियुनि जे आखेरनि खे डिसु, जिनि जे नंदनि-नंदनि ब्रारनि ऐं उन्हनि जे रहण जे लाइ मां जग्हि आहियां कल्लाराम।”

“मां इहो कुझु कोन ज्ञाणा” चई करे जीअं ई कल्लाराम काठियर उन्हीअ वण खे कुल्हाडी सां टे चार वार कया त वणदास खे सूर थियण सां हुन काठियर खे वाको करे चयो- “रुगो पंज सौ रुपयनि जे करे तूं मुहिंजी हत्या करे रहियो आहीं। तूं पापी आहीं, निर्दयी आहीं, झूलेलाल सभु डिसेर्ड पियो कल्लाराम। हीउ तूं मूळे कोन कटे रहियो आहीं, पर पहिंजी अचण वारी पीढीअ ते कुहाडी हलाए रहियो आहीं कल्लाराम। तूं मुहिंजे अघ खे नथो समझाणी।” चई करे वणदास रुअण लगो।

“छाहे तुंहिंजो अघु? मूळे चरियो ठाहे रहियो आहीं।” चई करे कल्लाराम वरी जीअं ई कुहाडीअ सां ज़ोर सां वण ते वारु कयो त उन्हीअ वण जे टार ते लग्नुल गहरे धक मां रत टपकण लगो ऐं डाढो सूर थियण करे हू ज़ोर ज़ोर सां रुअण-रंभण लगो, “अला डे, मां मरी वियुसि को त बचाए मूळे मरी वियुसि डे।” वण जो रुअण-रंभण बुधी करे आसे-पासे में रहण वारा सभेई पखी उते अची करे ज़ोर ज़ोर सां वाका करण लगा। पर उन्हनि कावनि, सिरणियुनि, बाज़नि, तोतनि ऐं किस्मनि किस्मनि जे झिरिकियुनि जो आवाजु, कुल्हाडीअ जी खट-खट वारे वडे आवाज़ हेठां इए दबिजी वियो, जीअं दुहिलनि जे धम-धम में तूतारीअ जो तूं-तूं आवाज़ दबिजी वेंदो आहे।

एतिरे में हिकु कांउ कां-कां कंदे जीअं ई कल्लाराम जे मथे ते ठूंगो हंयो त कल्लाराम उन्हीअ डे निहारे करे मथे डिठो त डिठाई, केतिरा ई पखी हेडाहुं होडाहुं उडामी करे, पहिंजी पहिंजी ज़बान में रोई करे, कल्लाराम खे मिन्थू करे पिया चवनि- “असांखे न उजाडि कल्लाराम असांजा आखेरा न डाह असां पहिंजा नंदिडा-नंदिडा बचिडा वठी केडाहुं वेंदासीं कल्लाराम वणदास न कटि।

महिरबानी करि। असांजो अर्जु बुधु कल्लाराम साईं अर्जु बुधो” पर परियुनि जे भाषा जी ज्ञाण न हुअण करे हू उन्हनि जी ग्राल्हि समुझी न सघियो ऐं पर्हिंजी पूरी ताकत सां हुन वण ते वरी वार करे हुनजे हिक वडे टार खे हुनजे बदन खां अलगि करे छडियो।

जीअं ई वण जो टार पट ते किरियो त कल्लाराम चयो- “इहा ई अथेई तुंहिंजी कीमत वणदास। मां डिसां पियो त पंजाहु सालनि खां इते ई पियो थो सड़ीं ऐं मूँखे थो पर्हिंजो अघु बुध ई। हाणे चउ चउ पर्हिंजो अघु” कल्लाराम ज़ेर सां चयो त घायल वणदास कीकाडे करे चयो, “अडे कल्लाराम, हीउ ठेकेदार तोखे लुटे रहियो आहे, बिनि-चइनि सौ रुपयनि में तोखां असांजो खून पियो कराए कल्लाराम। मुंहिंजी कीमत थो ज्ञाणणु चाहीं त बुधु- मां तोखे तुंहिंजे रुपयनि जी भाषा में ई पर्हिंजो अघु थो बुधायां हाणे कन खोले करे बुधु-

मां पर्हिंजे जीवन जूं पंजाहु ऋतु डिसी चुको आहियां ऐं अजु हिन उमिर में मुंहिंजे पारां डियण वारियुनि सेवाउनि में खास करे- ऑक्सीजन पैदा करणु अढाई लख रुपयनि जी आहे। जैव-प्रोटीन पैदा करणु ऐं वधाइणु वीह हज़ार रुपयनि जी आहे। मिट्टीअ जी उर्वरता ऐं अजाए पाणीअ जी रोक-थाम जी कीमत अढाई लख रुपया। पाणी पुनर्चक्रण ऐं नमी नियंत्रण टे लख रुपया। परियुनि ऐं बियनि नंदनि जीवनि-जंतुनि खे आश्रय डियण जी कीमत अढाई लख रुपया ऐं वायु प्रदूषण नियंत्रण पंज लख रुपया वगैरह खे शामिल कर्दें त तुंहिंजे रुपयनि जी भाषा में मुंहिंजी कीमत पंद्रहं सोरहां लख रुपया थी वजे थी। जेका तो जहिडे मामूली माणहूअ जे सजे जीवन जी कमाईअ खां काफी वधीक आहे कल्लाराम।”

वणदास जे वात मां रुपयनि में उन्हीअ जो अघु बुधी करे कल्लाराम जूं ज्ञाणु त अखियूं ई खुली वेयूं। हुन सोचण बइदि रडि करे चयाई- “मूँखे माफ करि वणदास मूँखे माफ करि। मां हाणे कडहिं बि वणनि खे कोन कटींदुसि। मजूरी कंदुसि, पापड विकिणंदुसि, गाडो हलाईदुसि, रिक्शा काहींदुसि, नंदी वडी नौकरी कंदुसि पर वणनि खे कोन कटींदुसि भाउ ऐं मां पर्हिंजी आखिरी ख़ाहिश में बि इहो लिखी करे वेंदुसि त मुंहिंजे सुर्गवास खां पोइ मूँखे काठियुनि में न साडियो वजे।”

“इहो भला छो कल्लाराम?” वणदास पुछियुसि। त कल्लाराम हुनखे चयो- “छाकाणि त काठियुनि में सडण वारो हरिको मुर्दो वेंदे वेंदे बि हिक पंजाहु साल जे वण खे खाई थो वजे। भला इहा किथां जी इंसानियत आहे, जो हिकु मुर्दो माणहू पछाडीअ जो सुर्ग या नर्ग में वेंदे वेंदे बि हिक जिंदह वण खे गीही वजे। ठेकेदार असां काठियरनि खां ग़लत तौर तरीकनि सां सावा-सताबा वण कटाए करे काठियुनि खे मसाणनि में पहुचाइण लाइ चवंदो आहे वणदास। मूँखे मरण खां पोइ बिजलीअ जी मशीन में साडियो वजे। इहा ख़ाहिश मां पर्हिंजी आखिरीनि विरासत में लिखी वेंदुसि। हा हा लिखी वेंदुसि।” गोढा उघी करे कल्लाराम पर्हिंजी गुची मथे करे उन्हीअ घायल

वणदास खे जीअं ई निहारियो त उन्हीअ खे लगो त ज्ञु सज्ञी उमिरि वणनि खे कटण खां पोइ
बि वणदास उन्हीअ खे माफ़ करे छड्डियो आहे।

दुखी, परेशान कल्लाराम हर हर मुडी करे भग्ल वण ड्हे निहारिंदो, अग्निते वधंदो पियो
वजे त ओचितो हुन जे कननि ते वणदास जो आवाजु पियो- “अडे कल्लाराम, हू टार त खणी
वजु न जेको तो अजां हींअर हींअर ई ताजो ताजो कटियो आहे।”

“न न, मां कुद्दु कोन खणी वेंदुसि।” रुअंदो कल्लाराम अग्नियां वधंदो वियो एं हुन वरी
कड्हिं बि वणनि ड्हे मुडी करे कोन निहारियो।

नवां लफ्जः :

ढोर ढगा	= जानवर	अघु	= मुल्हु, कीमत
टपकण	= वहणु	कीकाडे	= चिल्लाए
ख्वाहिश	= इच्छा		

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियां हवाला समुझायो :-

- (1) “मां पहिंजे जीवन जूं पंजाहु ऋतु डिसी चुको आहियां।”
- (2) मूँखे माफ़ करि वणदास मूँखे माफ़ करि।”

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब थोरे में डियो :-

- (1) ‘जहिडो अनु, तहिडो मनु’ जी माना समुझायो।
- (2) वणदास के करु कटण वियो?
- (3) कल्लाराम खे ठेकेदार घणा रुपया डोंदो आहे?

सुवालु 3. हेठियनि सुवालनि जा जवाब विस्तार सां लिखो :-

- (1) वण इंसाननि जी कहिडी मदद कनि था?
- (2) वणदास पहिंजो अघु कीअं एं कहिडो बुधायो?
- (3) पश्चियुनि कल्लाराम खे कंहिंजे लाइ एं कहिडी वेनती कई?
- (4) कल्लाराम पहिंजी आखिरी ख्वाहिश कहिडी एं छो प्रकट कई?



शाह जो बैत

— शाहु अब्दुल लतीफ़

(1689 ई. - 1752 ई.)

शाहु अब्दुल लतीफ़ भिटाई सिंधी शाइरीअ जो सिरमोरु दुनिया जे बहितरीनु शाइरनि जे कतार में शुमारु कयो वजे थो। हू शाइर सां गडोगडु कामिलु दरवेशु ऐं रुहानी रहिबरु पिणि हो। हू तमामु सुठो रागिंदु हो। खुदाई मस्तीअ में अची जडहिं हू गाइणु शुरू कंदो हो, तडहिं संदसि मुरीद उहो शइरु कलमबादि कंदा हुआ। संदसि शाइरीअ में सूफी मत सां गडोगडु भारती फेलसूफीअ जो असरु पिणि नज़्रु अचे थो। शाह शाइरीअ जो आधारु सिंधी लोक कहाणियुनि खे बणायो। संदसि शाइरी भारती रागु रागाणियुनि ते ब्रधल आहे। हुन जे हर बैत में रुहानी राजु समायलु आहे। अदबी नज़्रिए खां इहे बैत दुनिया जी बहितरीनि शाइरीअ सां बरुमेचे सघनि था। 'शाह जो रसालो' में संदसि बैत ऐं वायूं रागु रागाणियुनि जे आधार ते पेश कयल आहिनि। शाह लतीफ़ जो सिंधी अदब ऐं जीवति ते तमामु गहिरो असरु पियो आहे। संदसि बैतनि जूं केतिरियूं सिटूं सिंधीअ जूं चवणियूं बणिजी पेयूं आहिनि।

अखरु पढु अलिफ़ जो, वर्क सभु विसारि,
अंदरु तूं उजारि, पना पढ़दे केतिरा ?

....

निहाईअ खां नींहुं सिखु मुहिंजा सुपिरीं,
सडे सारो डींहुं, ब्राहिरि ब्राफ न निकिरे ।

....

सज्जण ऐं साणेहु कंहिं अणासे विसिरे,
हैफु तर्नीं खे होइ, वतनु जिनि विसारियो ।

....

साईंमि सदाई करीं मथे सिंधु सुकारु,
दोस मिठा दिलदार, आलम सभु आबादु करीं ।

....

ड्रातारु त तूं ब्रिया सभई मडिणा,
मींहं मुंदाइता वर्सिणा, सदा वसीं तूं ।

नवां लफ़्ज़ :

वर्कु = पनो
अणासो = बेहया, बेशमु
मडिणो = बिखारी, फ़कीरु

सुपिरिं = प्रीतमु, प्रेमी
हैफु = लानत
आलमु = जगु, संसारु

नींहुं = प्रेमु, प्यारु
दोसु = दोस्तु, मित्रु
डातारु = दाता, मालिकु

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हवाला डेर्इ समझायो :-

- (1) अखरु पढु अलिफ़ जो, वर्क सभु विसारि।
- (2) हैफु तनी खे होइ, वतनु जिनि विसारियो।

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जबाब लिखो :-

- (1) निहाईअ खां कहिडो सबकु सिखणु घुरिजे?
- (2) शाह लतीफु मालिक जे दरि कहिडी वेनिती थो करे?

करण जोगा कम :-

- (1) शाह जा ब्रिया के बैत कठा करियो।
- (2) बियनि सिंधी सूफी शाइरनि जो कलामु कठो करियो।
- (3) शाह जो बैत शागिर्दनि खे सुर में ग्राइणु सेखारियो।



जो ई आहियां, सो ई आहियां

— सचलु सरमस्तु

(1739 ई. — 1829 ई.)

सचल साईंअ जो जनमु 1739 ई. में दराजनि ग्रोठ सिन्धु में थियो। हुनजो असुलु नालो अब्दुल वहाबु हो। खेसि नंदपण में सचेडिनो करे कोठींदा हुआ। सचल जो कलामु मस्तीअ सां भरियतु आहे। इनकरे खेसि सचल सरमस्त जे नाले सां पिणु सडियो वेंदो आहे। शाह साहिबु जड्हिं दराजनि में वियो, तड्हिं सचूअ खे डिसी चयाऊं, “असां जेको कुनो चाढियो आहे, तंहिंजो ढकणु हीउ छोकर लाहीदो।” शाह जी अगुकथी सची निकिती।

सचलु रागु ऐं हुस्न जो पूजारी हो। इहा ज्ञाण संदसि शाइर मां पवे थी।

हिन बैत में हुन बुधायो आहे त मां जाहिडो आहियां इंसानु आहियां, मज़हबानि खां आजो आहियां। 1829 ई. में सचल सरमस्त वफ़ात कई।

को कीअं चवे, को कीअं चवे,
आऊं जो ई आहियां, सो ई आहियां।

1- को मोमिन चवे, को क़ाफिरु चवे,
को जाहिलु नालो ज़ाहिरु चवे,
को साहरु चवे, को शाइरु चवे,
आऊं जो ई आहियां, सो ई आहियां।

2- को संतु चवे, को पंथु चवे,
को बाग् बहार बसंतु चवे,
को मीरासी, कुलवंतु चवे,
आऊं जो ई आहियां, सो ई आहियां।

3- को सूरत में इंसानु चवे,
को शर भरियो शैतानु चवे,
को बुजुर्गु को मस्तानु चवे,
आऊं जो ई आहियां, सो ई आहियां।

4- को रंगी, को बेरंगु चवे,
को मस्तु, को मस्तु मलंगु चवे,
को नंगी, को बे नंगु चवे,
आऊं जो ई आहियां, सो ई आहियां ।

5- को खासु चवे, को आमु चवे,
को पुऱ्हांडो चवे, को खामु चवे,
को सचू सचो नामु चवे,
आऊं जो ई आहियां, सो ई आहियां ।

नवां लफऱ्ह :

जोई = जहिडे

सोई = तहिडे

मोमिन = मुसलमान

काफिरु = नास्तिक

जाहिल = अण-पढियल

साहरु = दोस्त

पंथु = धर्मी मतो

मीरासी = दुहिलारी

कुलवंत = सुठे कुल वारो

शर = शरारत

मलंगु = साधू

पुऱ्हांडो = मज़बूत

खामु = पोरो

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

(1) सचल सरमस्त पाण लाइ छा चयो आहे?

(2) सचल सरमस्त खे कहिडनि कहिडनि नालनि सां सडियो वियो आहे?

सुवालु 2. हेठियुनि सिटुनि जो मतिलबु समुझायो :-

(1) को मोमिन चवे, को क़ाफिरु चवे,
को जाहिलु नालो ज़ाहिरु चवे ।

(2) को रंगी, को बेरंगु चवे,
को मस्तु, को मस्तु मलंगु चवे ।

सुवालु 3. “को शर भरियो शैतानु चवे” छो चयो अर्थसि?



मानुख देहि

– श्री चैनराइ बचोमल ‘सामी’

(1743 ई. – 1850 ई.)

सामी साहिब, जाहिंजो असुलोको नालो भाई चैनराइ बचोमल लुंड ‘सामी’ आहे, हुनजो जनमु शिकारपुर सिंध में थियो हो। भाई चैनराइ पर्हिंजा सिलोक “सामी” नाले सां रचिया आहिनि। किनि किनि हंधि हुन ‘सामी’ नाले जे बद्रिंग ‘मेंघो’, ‘ब्रांभण’ बि कमि आंदो आहे। सामीअ जे शळर में ज्ञानु, वैराग, भगुती, सत्संग ऐं शेवा जा भाव भरियल आहिनि। सामी सिंधी शाइरीअ जे सोनहिरी दौर जी टिमूरी (शाह, सचल, सामी) मां हिकु हो। भाई चैनराइ पर्हिंजा सिलोक पर्चीअ ते लिखी मटिके में विज्ञांदो वेंदो हो, जे संदसि पुट घनश्यामदास गडु करे गुरुमुखी अखरनि में लिखाए रखवंदो हो। सन् 1850 ई. में 107 वर्हियनि जी उम्र में देहांत थियुसि। संदसि सिलोक असां सिंधियुनि लाइ अमुल्ह खऱ्जानो आहिनि। सामीअ खे ‘वेदांती कवि’ सङ्कुयो वेंदो आहे।

-
- 1- कंहिं विले खे आहे, कदुरु मानुख देहि जो;
डिठो जाहिं गुरु ज्ञात सां, मुंहुं मढीअ पाए;
ममता मिटाए, सुखी थियो ‘सामी’ चए ।
 - 2- विले कंहिं कदुरु, जातो मानुख देहि जो;
अची मिलियो ओचितो, जाहिंखे गैबी गुरु;
तर्हि मिटायसि मन जी, ‘सामी’ सभु हुरि खुरि;
हरि डिसे हाजुरु, चीटीअ खऱ्वाहि कंचर में ।
 - 3- विले को जाणे, कदुरु मानुख देहि जो;
‘सामी’ जाहिं खे सत्गुरु, अन्तरमुखि आणे;
साहिबु सुजाणे, चीटीअ ऐं कंचर में ।

- 4- ਵਿਲੋਂ ਕੋ ਜਾਣੇ, ਕਦੁਰੁ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹਿ ਜੋ;
 ਜੋ ਮਿਲੀ ਸਾਧ ਸੰਗਤ ਸਾਂ, ਪਸਿਰਿਯੋ ਘਰ ਆਣੇ;
 ਡਿਸੇ ਸਭ ਸੰਸਾਰ ਖੇ, ਛਾਣੀਅ ਮੌਂ ਛਾਣੇ;
 ਸਾਮੀ ਸੁਆਣੇ, ਜਾਗ੍ਰੀ ਪੱਹਿੰਜੋ ਪਾਣ ਖੇ ।
- 5- ਨਾਹਕੁ ਵਿਚਾਈ, ਥੋ ਮੂਰਖ ਮਾਨੁਖ ਦੇਹਿ ਖੇ;
 ‘ਸਾਮੀ’ ਸੰਤਨਿ ਸਾਂ ਮਿਲੀ, ਲੇਖੇ ਨ ਲਾਈ;
 ਜਾਣੀ ਸਤਿ ਸੰਸਾਰ ਖੇ, ਰੋਈ ਏਂ ਖਾਈ;
 ਬੁਕ ਭਰੇ ਲਾਈ, ਥੋ ਮਿਟੀ ਪੱਹਿੰਜੇ ਮੁਹਂ ਮੌਂ ।
- 6- ਮਾਨੁਖ ਦੇਹਿ ਤੱਤਸਮ, ਕਹਿਂ ਪਾਤੀ ਪੂਰਨੁ ਪੁਨ ਤੇ;
 ‘ਸਾਮੀ’ ਚਏ ਤਹਿੰਜੋ, ਰਖੀ ਮਨਿ ਮਰਮੁ;
 ਅਥੀ ਬੇ-ਕੀਮਤੀ ਜੋ, ਹਿਕਿਡ੍ਹੋ ਹਿਕਿਡ੍ਹੋ ਦਸੁ;
 ਛਡੇ ਕਲਪਤਿ ਕਮੁ, ਜਾਗ੍ਰੀ ਜਪਿਜਿ ਨਾਮ ਖੇ ।
- 7- ਹੀਰੋ ਜਨਮੁ ਨ ਹਾਰਿ, ਮੂਰਖ ਮਨ ਜੇ ਭਾਇ ਤੂਂ;
 ਮਿਲੀ ਸਾਧ ਸੰਗਤਿ ਸਾਂ, ਅਵਿਦਾ ਭਰਮੁ ਨਿਵਾਰਿ;
 ਪੱਹਿੰਜੋ ਪਾਣੁ ਸੰਭਾਰਿ, ਤ ਸੁਖੀ ਥਿਏ ‘ਸਾਮੀ’ ਚਏ ।

ਨਵਾਂ ਲਫ਼ਜ਼ਾਂ :

ਵਿਲੋਂ = ਘਣਨਿ ਮੌਂ ਹਿਕੁ	ਗੁਰੂ ਜਾਤ = ਗੁਰੂਅ ਜੋ ਜਾਨ
ਮੁਹੂਂ ਮਢੀਅ ਪਾਏ = ਅੰਦਰ ਮੌਂ ਝਾਤੀ ਪਾਏ ਡਿਸਣੁ	ਗੈਵੀ = ਲਿਕਲੁ, ਗੁੜ੍ਹੋ
ਹੁਰਿ ਖੁਰਿ = ਚਿੰਤਾ, ਆਂਧਮਾਂਧ	ਚੰਟੀਅ = ਕਿਤਲੀਅ
ਕੰਚਰ = ਹਾਥੀ	ਅੰਤਰਮੁਖਿ = ਅੰਦਰ ਮੌਂ
ਲੇਖੇ ਲਾਇਣੁ = ਸੁਠੇ ਕਮ ਤੇ ਲਗਾਇਣੁ	ਪੂਰਨੁ = ਪੂਰੇ
ਪੁਨ = ਪੁਜਾ	ਮਰਮ = ਹਧਾ, ਸ਼ਾਮ
ਕਲਪਤਿ = ਕੂਡਾ	ਅਵਿਦਾ = ਅਜ਼ਾਨ
ਨਿਵਾਰਿ = ਮਿਟਾਇ	ਪਾਣੁ ਸੰਭਾਰਿ = ਪੱਹਿੰਜੋ ਪਾਣ ਖੇ ਸੰਵਾਰਣੁ

❖ અભ્યાસ ❖

સુવાલુ 1. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ ડિયો :-

- (1) માનુખ દેહ જો કદુરુ કહિડે માણ્હૂઅ ખે થિએ થો?
- (2) ગુરુ મન જી કહિડી ગ્રાલિં ખે મિટાએ થો?
- (3) મૂર્ખું ઇંસાનું કહિડિયું ગ્રાલિંયું થો કરે?
- (4) માનુખ દેહ ઉત્તમ છો આહે? ખોલો સમુજ્ઞાયો।
- (5) સુખી થિયણ લાઇ છા કરણું જરૂરી આહે?

સુવાલુ 2. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ હિક સિટ મેં ડિયો :-

- (1) માણ્હૂ ઈશ્વર ખે કિથે ડિસે થો?
- (2) કહિડા માણ્હૂ સંસાર ખે સતિ થા સમુજ્ઞાનિ?
- (3) કવી ઇંસાન ખે કહિડા કમ છડુણ લાઇ થો ચવે?
- (4) અવિદ્યા ખે દૂર કરણ લાઇ કહિંજો સંગુ કજે?

સુવાલુ 3. હેઠિયુનિ સિટુનિ જો મતિલબુ સમુજ્ઞાયો :-

- (1) ડિઠો જર્હિં ગુરુ જ્ઞાત સાં, મુંહં મઢીઅ પાએ;
મમતા મિટાએ, સુખી થિયો ‘સામી’ ચાએ ।
- (2) જાણી સતિ સંસાર ખે, રોઈ એં ખાઈ;
બુક ભરે લાઈ, થો મિટી પર્હિંજે મુંહં મેં ।
- (3) હીરો જનમું ન હારિ, મૂર્ખ મન જે ભાઇ ત્રં;
મિલી સાધ સંગતિ સાં, અવિદ્યા ભરમું નિવારિ ।

સુવાલુ 4. હેઠિયનિ લફ્જનિ જી માના ડેર્ઝ જુમિલનિ મેં કમુ આણિયો :-

મઢી, ગૈબી, હરિ, ચોંટી, કંચર ।



શાઇરી

– મિર્જા કલીચુ બેગ

(1853 ઈ. – 1929 ઈ.)

શાસ્ત્ર અલલમા મિર્જા કલીચુ બેગ ફરીદન બેગ મશાહૂર મિર્જાડનિ જે કુટુંબ માં હો, જે જાર્જિયા માં ટાલપુરનિ જે ડીહિનિ મેં સિંધુ મેં આયા। હુન અવાઇલ મેં સિંધી સાહિત્ય જે વાધારે લાઇ જેકા જફાકશી કઈ, સા કંહિં વિર્લે કઈ હુંદી। હુન કેતિરાઈ આખાળિયુનિ, નાટકનિ, શિર એં મજૃમૂનનિ જા કિતાબ લિખિયા એં તર્જુમો કયા। હુન જી ઇબાદત બિલકુલ સુંદર એં વણંડ આહે। અવાઇલી સિંધી દર્સ્સી કિતાબનિ લિખણ જો બિ ખેસિ શર્ફ આહે।

1. છા હથિ કજે?

કિચિરે ગડિયલ મિટીઅ મેં જારિ હુજે ત હથિ કજે,
અશિરાફિ ધીઅ ગ્રેબ જે ઘરિ હુતે ત હથિ કજે,
આબે હયાત જાહર મેં ગરિ હુજે ત હથિ કજે,
કંહિં બેવકૂફ મેં હુનરુ હુજે ત હથિ કજે,
અદિના માં નુક્સુ પહુંચે કો આલા જે શાન ખે?
દૂંહેં માં દાગુ કીન લગે આસિમાન ખે ।

2. છા ઘુરિજે?

દૌલત વબે ત મરુ વબે, પરિવા અસાંખે નાહિ,
રાહત વબે ત ઉનજી તમત્રા અસાંખે નાહિ,
આફ્ત મેં પિણ ખુશીઅ જી કમી અસાંખે નાહિ,
ઈમાનુ દીનુ આહે, જે દુનિયા અસાંખે નાહિ,
નામર્ડ સાહુ ડિયનિ થા ભાલે હરામ તે,
આહિનિ સે મર્ડ, જે થા મરનિ નંગ નામ તે ।

3. पूरो थियो त छा थियो?

दुनिया में दिलि जो मतिलबु, पूरो थियो त छा थियो?
अगरि मिलियो न जे रबु, बियो सभु मिलियो त छा थियो?

1. मरु हिति हुजेई शाही, लशकर ऐं सिपाही,
थींदें आदम डांहुं राही, जगु फ़तह कयो त छा थियो?
2. थिएं इल्म में जे आलिमु, करि पिणि अमल खे शामिलु,
आलिमु जे थियो न आमिलु, दफ़तरु लिखियो त छा थियो?
3. हिति फ़िक्र जो फ़सानो, हिति ज़रि जो थी ज़मानो,
हथि करि तूं हू ख़ज़ानो, ही मालु वियो त छा थियो?
4. सूरिह दुख डेखारे, वेरी सचो विसारे,
पहंजो न नफ़्सु मारे, दुश्मनु दसियो त छा थियो?
5. आहे ‘कलीच’ अर्मानु, कयो शर्क तोखे शेतानु,
मन में न थियो मुसलमानु, कलिमो पढ़ियो त छा थियो?

नवां लफ़ज़ :

जरि = ज़ेवर	नफ़्सु = अहंकार
परिवा = परवाह, फ़िक्र	कलिमो = नमाज, धार्मिक ग्रंथ
आलिमु = अकाबर, पूर्ण, अकलमंडु	नंग = कर्तव्य
अमल = इस्तेमाल	सूरिह = साराह, प्रशंसा
दफ़तर = वड़ा वड़ा किताब	दसियो = मारण

❖ અભ્યાસ ❖

સુવાલુ 1. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ ડિયો :-

- (1) અસાંખે પહિંજી જિંદગીઅ મેં છા હથિ કરણુ ઘુરિજે?
- (2) દુનિયા મેં કંહિંજી અસાંખે પરવાહ નાહે?
- (3) અસાંખે કંહિંજી પરવાહ કરણુ ઘુરિજે?
- (4) ઇલમ ખે અમલ મેં કીઅં શામિલ કજે?
- (5) પહિંજો નફ્સુ ન મારિયો ત છા થીંદો?
- (6) મિર્જા સાહિબુ દુનિયા મેં છા હથિ કરણ લાઇ રાઇ ડિએ થો?
- (7) ‘પૂરો થિયો ત છા થિયો’ કવિતા જે માર્ફત કવીઅ કહિંડી સિખ્યા ડિની આહે?
- (8) સંસાર મેં કિનિ શયુનિ જી જુરૂરત આહે, કિનિ જી ન? કવીઅ જી કવિતા ‘છા ઘુરિજે’ જે આધાર તે બુધાયો।

સુવાલુ 2. હેઠિયુનિ સિટુનિ જો મતિલબુ સમુજ્ઞાયો :-

“થિએં ઇલમ મેં જે આલિમુ, કરિ પિણિ અમલ ખે શામિલુ,
આલિમુ જે થિયો ન આમિલુ, દફ્તર લિખિયો ત છા થિયો?”



કુદરત વારા

– કિશનચંદુ તીર્થદાસુ ખત્રી ‘બેવસિ’

(1885 ઈ. – 1947 ઈ.)

‘બેવસિ’ નએ દૌર જો બાની શાઇરુ મજિયો વજે થો। હુન સિંધી શાઇરીઅ ખે નઅંઓ મોડુ ડિનો। સંદસિ શાઇરીઅ મેં વકત જી સહી તરજુમાની મિલે થી। હૂ સિંધીઅ જો પહિરિયોં શાઇરુ આહે, જેહિં જિંદગીઅ જે મુખ્ખલિફ મસિલનિ ખે પહિંજે શાઇરીઅ જો આધારુ બણાયો। બેવસિ જિંદગીઅ જે જુદા જુદા પહલુનિ તે આશાવાદી નજરિએ સાં લિખિયો આહે। સંદનિ ખ્યાલનિ મેં તાજગી એં નવાણિ આહે। સંદસિ બ્રોલી સવલી સુપકુ એં પુરઅસરુ આહે। ‘બેવસિ’ હિક પ્રાઇમરી સ્કૂલ મેં હૈડમાસ્ટરુ હો એં હુન બ્રારનિ લાઇ પિણ ખૂબુ લિખિયો। હૂ સિંધીઅ મેં બ્રાલ સાહિત્ય જો પાયો વિજન્દંડુ મજિયો વજે થો। બેવસિ જે શાઇર જો ગુચુ હિસ્સો કુદરતી વિપયનિ બંસબત આહે। કુદરત જા નજારા, જે રવાજી તરહ હૂંદ ઘણનિ જે ખ્યાલનિ મેં બિ ન અચનિ, સે પરોડે ઉન્હનિ જો ચીદન લફ્જનિ મેં ચિઠો નકશુ ચિઠિયો અથસિ। હિનખે હર કુદરતી નજારે પુઠિયાં કા રૂહાની શક્તિ લિકલ નજર આઈ આહે। પરમાત્મા ખે ચવે ઈ થો “કુદરત વારા”! હિન હક એં હુસન જો ઉમ્મે મેલાપ ડેખારિયો અથસિ।

સભુ કનિ તુંહિંજી સારાહ – કુદરત વારા!
નિર્મલ જોતી નૂર નજારા ।

1. કોટાં કોટ બણાઇ ધરતિયું,
સહિસેં સિજુ ચંડુ તારા કતિયું;
જિનિ જો અંતુ ન પારા – કુદરત વારા!
2. ગુલનિ અંદર સુરહાણિ ધરીં થો,
મોતિયુનિ સાં માહિરાણ ભરીં થો;
હીરા લાલ હજારા – કુદરત વારા!
3. જડહિં વણનિ તે વાઉ અચે થો,
પન પન માં પરલાઉ અચે થો;
છમ છમ જા છમકાર – કુદરત વારા!

4. चुहिंब चतुन ऐं चीहन खोली,
बुलबुल कोयल बळी बळी;
मोर नचनि नामियारा - कुदरत वारा!
5. अजब बणाया बिजलियूं बादल,
बूंदूं बरस बरस कनि थाधल;
वाजट कनि वसिकारा - कुदरत वारा!
6. मुलक मिडियोई मंदिर आहे,
आगो सभ जे अंदरि आहे,
देहनि मंझी दुआरा - कुदरत वारा!
7. साह अंदरि जो साहु खजे थो,
'बेवसि' साईं नाद वजे थो;
नोबत नींहं नजारा - कुदरत वारा!

नवां लफऱ्यां :

सहिसें = सवें	परलाउ = आवाज़
सुरहाणि = खुशबू	नामियार = नाले वारा
महिराण = समंड	वाजट = बिजली
वाउ = हवा	आगो = परमात्मा
देहनि = शरीर	नींहं = प्यार

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. सजी सृष्टी कुदरत वारे जी साराह कहिंडे नमूने थी करे?

सुवालु 2. कवीअ 'कुदरत वारा' कंहिंखे चयो आहे?

सुवालु 3. 'हुस्न ऐं परमात्मा जो उम्दो मेलाप' ते नोटु लिखो।

सुवालु 4. हेठियुनि सिटुनि जो मतिलबु समुझायो :-

- | | |
|---------------------------------|---------------------------------|
| (1) गुलनि अंदर सुरहाणि धरीं थो, | (2) साह अंदरि जो साहु खजे थो, |
| मोतियुनि सां महिराण भरीं थो; | 'बेवसि' साईं नाद वजे थो; |
| हीरा लाल हजारा - कुदरत वारा! | नोबत नींहं नजारा - कुदरत वारा ! |



अइट जो आवाज़

- हूंदराज 'दुखायल'

(1910 ई. - 2003 ई.)

कवि परिचय-

'दुखायल' जड्हिं अलडि उम्र जो हो, तड्हिं हिनजे दिल ते गांधीअ जो असरु थी चुको हो। 'बेवसि' ई हिन में कौमी जजिबो भरियो। हू गलीअ गलीअ ऐं ग्रेठ ग्रेठ में वजी ग्राइण लगो। 'दुखायल' साहिब आरीपुर जो रहंदु हो, खेसि भारत सरकार पारां पद्मश्री जो खिताबु मिलियलु हो। खेसि सिंधी कौमी कवि मजियो वियो आहे।

तुंहिंजे अइट जो आवाजु, मूं त झूपिडियुनि में बुधो,
हरिको काहींदो थे वतियो, डेरा ठाहींदो थे वतियो....

तुंहिंजे अहिंसा जो राजु, दुनिया दूर दूर बुधो,
हैरत खाईदो थे वतियो, साराहींदो थे वतियो....

तुंहिंजो हरिजन आवाजु, मूं त मंदरनि में बुधो,
तीर्थ यात्रियुनि में बुधो, हरिको ग्राईदो थे वतियो....

मूं त गांधी तुंहिंजो नात, चोट मिनारनि तां बुधो,
तारनि सितारनि खां बुधो, हरिको उचारींदो थे वतियो,
तोखे संभारीन्दे थे वतियो....

नवां लफ़्ज़ :

अइटु = चरखो

हरिजन = प्रभूअ जा प्यारा

काहींदो = हलंदो

नात = नालो

हैरत = अचरजु

संभारींदो = याद कंते

❖ અભ્યાસ ❖

સુવાલુ 1. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ ડિયો :-

- (1) અહિંસા જો મતિલબુ છા આહે?
- (2) ગાંધીઅ છા હલાઇણ જે લાઇ ચયો?

સુવાલુ 2. હેઠિયુનિ સિટુનિ જી માના લિખો :-

- (1) તુહિંજો હરીજન આવાજુ, મૂં ત મંદરનિ મેં બુધો ।
- (2) તુહિંજે અશ્ટ જો આવાજુ, મૂં ત ઝૂપિડિયુનિ મેં બુધો,
હરિકો કાહીંદો થે વતિયો, ડેરા ઠાહીંદો થે વતિયો...

સુવાલુ 3. ‘દુખાયલ’ હિન બૈત મેં કહિડો સંદેશ ડિનો આહે?

સુવાલુ 4. હિન બૈત જો સારુ લિખો।



सभ जाइ सज्जण

— पदमश्री प्रोफेसर राम पंजवाणी

(1911 ई. - 1988 ई.)

कवि परिचय-

सुठो नॅविल नवीस, नाटककारु, कहाणीकारु, मज़्मूनिंगारु एं संगीतकारु आहे प्रोफेसर राम पंजवाणी। संदसि जनमु 20 नवम्बर 1911 ई. में थियो। संदसि खास किताब “कैदी”, “ज़िंदगी या मौत”, “आहे न आहे”, “धीअरु न ज़मनि”, “सिंध जा सत नाटक”, “पूरब ज्योति” (नाटक), “सिक जी सौग़ात”, “चांदीअ जो चमको”, “अजीब आखाणियूं”, “अनोखा आज़मूदा”। खेसि 1964 ई. में साहित्य अकादमी इनाम मिलियो। प्रोफेसर राम पंजवाणीअ केतिरा ई कलाम लिखिया आहिनि। ही साहिबु प्रोफेसर हो। हिन आज़ादी आंदोलन में बहिरो वरितो हो। संदसि ख़ाल मूजिबि मन जी शार्ति पैसनि सां ख़रीद नथी करे सघिजे। संदसि चालाणो 31 मार्च 1988 में थियो।

-
- 1- घुमी काबो घुमी काशी डिठुमि, सभ जाइ सज्जण सरदार डिठुमि,
जेको मस्जिद में सो ई मंदिर में, सागियो देवल में दिलदारु डिठुमि ।
 - 2- जप जाप कयुमि, पूजा पाठ कयुमि, वजी गंगा ते इशनानु कयुमि,
सोचे समुझी वेद पुराण पढ़ियमि, साम्हूं कुदरत जो कर्तारु डिठुमि ।
 - 3- बणी मोमिनु पाक कुरान पढ़ियुमि, सभु रोजा रखियमि ऐं निमाजूं पढ़ियमि,
कुल शर्त शरियत जा पढ़ियमि, ओड़ो मुहिब संदो मनठार डिठुमि ।
 - 4- वजी देवल में दिन रात रहियुसि, वजी ईसा मसीह जे पादि पियुसि,
पहुची मालिक जे दरबार वियुसि, पहिंजे नेणनि अजीबु इसरारु डिठुमि ।
 - 5- ढूंढे ढूंढे राम शाहर ऐं बर, करे गोल्हा लधी मूं खासु ख़बर,
आहे ज़ात उहा हिक सागुी पर, उन ज़ात जा रूप हज़ार डिठुमि ।

नवां लफऱ्यां :

काबो = मक्का, मदीना

काशी = काशी तीर्थ स्थान

देवल = मंदिर

मुहिब = महबूब

जाइ = जग्ह, हर तरफऱ्या

दूळे = गोल्हे

ज़ात = ईश्वर

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) प्रोफेसर राम पंजवाणीअ ईश्वर जे सरूप जो कहिडे नमूने बयान कयो आहे? खोले लिखो।
- (2) प्रोफेसर राम पंजवाणीअ पंहिंजी कविता जे मार्फत कहिडो संदेशु डिनो आहे?

सुवालु 2. हेठियुनि सिटुनि जो मतिलबु समुझायो :-

- (1) बणी मोमिनु पाक कुरान पढियुमि, सभु रोजा रखियमि ऐं निमाजूं पढियमि, कुल शर्त शरियत जा पढियमि, ओडो मुहिब संदो मनठार डिटुमि।
- (2) दूळे दूळे राम शहर ऐं बर, करे गोल्हा लधी मूं खासु ख़बर, आहे ज़ात उहा हिक सागी पर, उन ज़ात जा रूप हज़ार डिठमि।



महिनत

— खीअलदास ‘फ़ानी’

(1914 ई. – 1995 ई.)

कवि परिचय-

खीअलदास ‘फ़ानी’ जो जन्म सन् 1914 ते शिकारपुर में थियो हो ऐं देहांत 1995 में थियो। हिन साहिब सज्जी जिंदगी हिक आदर्शी उस्ताद जे रूप में गुज़ारी। प्रिंसीपाल जे पद तां रिटायर कयाई। शझर जे फ़ून जी खेसि खासि ज्ञाण हुई। ‘सामूँडी लहरू’, ‘सिक सोजु ऐं साजू’ ऐं ‘खिज़ां जी खुशबू पीला पन’ संदसि काव्य संग्रह आहिनि।

-
1. सुबुह सवेरो उभ मां आयो,
सिज जॉहिंजो प्रकाश पसायो ।
 2. धरती रात जी चादर लाहे,
निंड मां झाटि पटि जागी आहे ।
 3. वेई हली संसार मां सुस्ती,
सभ में आई चाह ऐं चुस्ती ।
 4. नॅठिड़ा डिघिड़ा कोमल किरणा,
चिलकनि चिमकनि जगुमगु झरणा ।
 5. हेड़ांह हारी हरु थो खेड़े,
होड़ांह माल्ही गुल फुल मेड़े ।
 6. बाग में भंवरनि जी जूं जूं,
माखीअ जे मखियुनि जी भूं भूं ।

7. हर कोई हथ पेर हणे थो,
सभ कींहं खे कमु कारि वणे थो ।
8. आहे कमाल सजो कुदरत जो,
मेवो आहे मिठो महिनत जो ।
9. जो न मेहनत खां मुंहुं मोडे,
'फानी' जीवति सो ई जोडे ।

नवां लफऱ्यां :

उभु = आसमान

पसायो = फैलायो

झटिपटि = तमाम जल्दी, तुर्ति

चाह = इच्छा

डिघिडळा = लंबा

चिलक = चमकार, चमको, तजिलो

हारी = किसान

हरु = खेत

खेडणु = जोतणु, सिंचाई करणु

जूं जूं = भवरनि जो आवाज़

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो-

- (1) सिजु प्रकाश कीअं फहिलाए थो?
- (2) संसार मां सुस्ती कीअं वजे थी?
- (3) हारी छा छा कनि था?
- (4) कम कारि जी महिमा लिखो।

सुवालु 2. 'महिनत' बैत ज़रिए खीअलदास 'फानी' कहिडो संदेश डिनो आहे?

सुवालु 3. "धरती रात जी चादर लाहे,
निंड मां झटिपटि जागी आहे।"

मथियुनि सिटुनि जी अंदरीं माना खोले समुझायो।



गुलनि जी टोकिरी

— हरी ‘दिलगीरू’

(1916 ई. — 2004 ई.)

कवि परिचय-

हरी गुरुड्हिनोमलु दर्याणी (जनमु 1916 ई.) जरीदु सिंधीअ जो पुस्तो शाइरु आहे। हू ‘बेवसि’ जे शरिस्यत ऐं शाइर खां काफी मुतासिरु रहियो आहे। हुन घणे भाडे खुशीअ भरिया आशावादी गीत लिखिया आहिनि। संदसि ख्यालनि में ऊंहाई ऐं बुलंदी आहे। बोलीअ में मेठाजु ऐं रवानी अथसि। संदसि इवारत सुलझियल, सलीसु ऐं मोहर्णदडु आहे। संदसि गीतनि में संगीत जो लइ तालु आहे। संदसि शाइरीअ जा मुख्यु मजमुआ आहिनि- हरीशचंद्र जीवन (खण्ड काव्य 1941), कोडु (1941), मौजी गीत (‘बेवसि’ सां गडु 1942), माक फुडा (नारायण ‘श्याम’ सां गडु 1953), मौज कई महराण (1966) ऐं ‘पल पल जो परलाउ’ (1977), चोलो मुंहिंजो चिक में (आत्मकथा 1987), ‘पल पल जो परलाउ’ में खेसि साहित्य अकादमी अवार्डु (1979) मिली चुको आहे। हुन अमरु गीत (1981) नाले सां सिंधी कविता ऐं गीता जो तर्जुमो पिण कयो आहे। हुन घणा ब्राल गीत बि लिखिया आहिनि। हिन कविता में गुलनि जी साराह जो बयानु कयो आहे।

जिंदगी जणु त गुलनि जी का हसीन टोकिरी आ,
रात ऐं डींहं जा गुल-फुल तींहं में,
टोकिरी आहि गुलनि साणु सथियल,
पर गुलनि जे हेठां,
मौत जो नांगु सुतो पियो आहे ।

मूऱ्ये कल नाहि त ही नांगु कडुहिं फणि कठंदो,
ऐं गुलनि मां हू कढी फणि ब्राहिरि,
जिस्म मुंहिंजे खे अची डुंगांदो ।

मूऱ्ये कल आहि, अंदरि नांगु आहे,
पर त भी टोकिरी डुढी थी वणेमि,
मूऱ्ये रंगीन गुलनि डुढो मोहियो आ,
छा त सुरहणि उन्हनि में आहे !

नवां लफऱ्यां :

सथियल = भरियल

सुरहाणि = सुगंध, खुशबू

हसीन = सुंदरु, वणंदड

कल = खबर, ज्ञाण

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) कवीअ जिंदगी कंहिंजे मिसलि समझी आहे?
- (2) गुलनि जे हेठां केरु सुतो पियो आहे?
- (3) कवी गुलनि जी टोकिरीअ खे वणंदडु छो थो समुझे?
- (4) हिन कविता मार्फत कवीअ इंसान खे कहिडी समझाणी डिनी आहे?
- (5) कवीअ नांगु कंहिंखे साडियो आहे?
- (6) कवीअ रात ऐं डुंहं जी उपमा कंहिंसां कई आहे?

सुवालु 2. हेठियनि मिसराउनि जी माना खोले समुझायो :-

- (1) मूळे कल आहि, अंदरि नांगु आहे,
पर त भी टोकिरी डाढी थी वणेमि,
- (2) मूळे रंगीन गुलनि डाढो मोहियो आ,
छा त सुरहाणि उन्हनि में आहे!



सूर त साणु, इअं जीअं हाणे

– श्री नारायण ‘श्याम’

(1922 ई. – 1989 ई.)

कवि परिचय-

श्री नारायण गोकलदास नारवाणी ‘श्याम’ जो जनमु 25 जुलाई 1922 ई. में सिन्धु जे खाही कासिम गोठ जिले नवाबशाह में थियो हो। हूँ हिक ऊच कोटिअ जो शाइरु हो। हुन पर्हिंजनि शडरनि में नवां नवां ख्याल भरिया आहिनि। हिन साहिब लगभग नज्म जे हर शाख ते कलम हलाई आहे। हिनजा छपियल किताब आहिनि- ‘माक फुड़ा’, ‘पंखिडियूं’, ‘रंगी रती ऐं लहर’, ‘रोशन छांवरी’, ‘माक भिना राबेल’, ‘आछींदे लज मरा’, ‘महके वेल सुबुह जी’, ‘न सो रंगु न सा सुरहाणि’, ‘डाति ऐं हयाति’। ‘वारीअ भरियो पलांदु’ ते 1970 ई. में साहित्य अकादमीअ नई दिल्लीअ पारां खेसि इनामु अता थियल आहे।

हेठि डिनल गऱ्याल में कवीअ आशावादी वीचार ज़ाहिर कया आहिनि। कवि दिलि खे आथत डुँदे फ़रिमाए थो त दुख पुठियां सुख ऐं राति पुठियां प्रभात ज़रूर ईदी।

सूर त साणु, इअं जीअं हाणे,
सुख जी साहित भांइ सुभाणे ।

सचु त पखे में पर्हिंजे रहंदे,
कदुरु कखनि जो कोन सुजाणे ।

सागरु मोती माणिक, लेकिन,
पातारां को पेही आणे ।

कोई सुख जी खातिर भिटिके,
ऐं को भिटिकण में सुख माणे ।

रांदि अखियुनि जी खेडुनि कर्दे,
कोई रुह विरुहं बि ज्ञाणे ।

चित में सहिसें सूरज उभिरिया,
जोति जली जीअं सांझी हाणे ।

सागरु जाहिं खे छाती लाए,
सो अलबेलो मौजूं माणे ।

पहिरियाई हीअ राति त कटिजे,
सुबुह जी गुणिती ‘श्याम’ सुभाणे ।

नवां लफ़्ज़ :

सूर = डुख	साइत = पल	भाँड = भाँणु
पखो = अझो	पातारां = पाताल मां	पेही = वजी
रुह = आत्मा	विरुहं = रिहाण	सहिसें = सवें
उभिरिया = निकिता	सांझी = शाम।	

❖ अऱ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) ‘कदुर कखनि जो कोन सुजाणे’ जो कहिडो मतिलबु आहे?
- (2) समुंड मां माणिक मोती केरु हासिल करे सघंदो?
- (3) ‘सुबुह जी गुणितीअ’ लाइ नारायण ‘श्याम’ छा चयो आहे?

सुवालु 2. हेठियुनि सिटुनि जी माना लिखो :-

- (1) कोई सुख जी खातिर भिटिके,
ऐं को भिटिकण में सुख माणे ।
- (2) सागरु जाहिं खे छाती लाए,
सो अलबेलो मौजूं माणे ।

सुवालु 3. नारायण ‘श्याम’ हिन बैत ‘सूर त साणु, इअं जीअं हाणे’ में कहिडो संदेशु डिनो आहे?

सुवालु 4. हिन बैत जो सारु लिखो।



गीतनि जा मोती

— गोवर्धन ‘भारती’

(1929 ई. - 2010 ई.)

जग मेड़िया टामे जा टुकरा,
मूँ मेड़िया गीतनि जा मोती !

(1)

दुनिया दुःख खे दुःखु ई जातो,
पर मूँ दुःख जो मरमु सुआतो,
सुख जी नाजुकु नव-वरनीअ खे,
पहिरायमि पीड़ा जी पोती !

(2)

जड़हीं मुहिंजीअ प्यास पुकारियो :
“कुद्दु त पीआरियो, कुद्दु त पीआरियो !”
तड़हीं सुपननि जे सागर में,
चंड अची चांडोकी ओती !

(3)

मुहिंजो जीवनु जल जी धारा,
दुःखु ऐं सुखु जहिंजा ब्र किनारा,
सहसें सूरज, चंड, सितारा,
गोया मुहिंजी जीवन - जोती !

(15-6-1959)

नवां लफ़्ज़ :

ज्ञातो = समझियो

नव-वरिणी = नई शादी कयल छोकिरी

नाजुक = नरम

पोती = रओ

चांडौकी = चांदनी

ओती = हारी

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो-

- (1) शाइरु पर्हिंजे गीत में इंसान खे छा थो चवणु आहे?
- (2) “कुञ्जु त पीआरियो, कुञ्जु त पीआरियो” ज़रिए कवि कहिडो संदेश थो डिए?
- (3) “दुःखु ऐं सुख जर्हिं जा ब्रु किनारा” जी अंदिरीं माना समुझायो।

सुवालु 2. हेठियनि लफ़्जनि जा जिद लिखो-

दुःखु, नाजुक, चांडौकी, जीवन।



ग्रज़ल

— अर्जुन ‘शाद’

(1924 ई. — 2006 ई.)

कवि परिचय-

डाक्टर अर्जुन गोबिंदराम मीरचंदाणी ‘शाद’ हिंकु तरकी पसंद शाइरु आहे। हीड नसुरु नवीसु, नकादु ऐं तझलीमदानु पिण आहे। संदसि जनमु सखर मेंथियो हो। संदसि छपियल किताब ‘अंधो दूहों’ ते सन् 1983 ई. में मर्कजी साहित्य अकादमी पुरस्कार ऐं तीहं खां पोइ महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार मिलिया। खेसि सोवियत यूनियन जो नेहरू अवार्ड पिणु मिलियो। हुनजा बिया किताब आहिनि-‘आऊं घिटियुनि जो ग्राईदडु’, ‘डाहियूं डुख डिसनि’, ‘तपस्या जूं रोशिनियूं’, ‘बोला जे किनारे’। संदसि सुर्गवास 7 नवम्बर 2006 ई. ते मुम्बईम मेंथियो।

शाइरु फरमाए थो त इंसान पाण बहार बणिजी बियनि खे खुशियूं डिए। उजिडियल चमन में बहार आणे छडे, पर्हिंजी महिनत सां आकाश खे बि झुकाए छडे। हींअर हकीकत खे डिसे ऐं पर्हिंजी तकदीर में फेरो आणे।

नफःस में खुदि भरे बहार, तूं खिजां खे मिटाए छडि,
उजड़ चमन खे तूं गुलनि जे दीद सां सजाए छडि ।

थी प्यार जी घडी घडी डु जिंदगी नई नई,
तूं शौंक जो खणी चिराग, हसरतूं जलाए छडि ।

फळक ज़मीन ते झुके, न तूं फळक अगियां झुकीं,
नसीब जूं हुकमतूं जहान मां उड्डाए छडि ।

बुधाइ ख़वाबगाह में गुज़ारिबो अजा घणो?
तूं झूपडियुनि जो हुस्न ई हथनि सां खुदि बणाए छडि।

अथर्व दिलि ऐं दिलि में दर्द, दांहं बर्दि छो कयइ?
बुधे न को बुधे तूं ‘शाद’ शोर व गुल मचाए छडि ।

नवां लफ़्ज़ :

नफ़स = जिस्म	खिजां = पतझड़
दीद = नज़र	हसरतूं = इच्छाऊं, अरमान
फ़लक = आसमान	ख़्वाबगाह = आराम करण जी जगृह, आरामगाह
दांहं = शिकायत, पुकार	नक़ादु = समालोचक तइलीमदानु = शिक्षाविद्

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब डियो :-

- (1) शाइरु उजिडियल चमन खे कीअं थो ठाहिणु चाहे?
- (2) 'शोरु व गुल मचाए छड़ि' ज़रीए कवीअ कहिड़ो संदेशु डिए थो?
- (3) अर्जुन 'शाद' पंहिंजी ग़ज़ल में इंसान खे छा थो चवणु चाहे? समुझायो।

सुवालु 2. हेठि डिनल सिटुनि जो मतिलबु समुझायो :-

- (1) फ़लक ज़मीन ते झुके, न तूं फ़लक अगियां झुकीं।
- (2) अथई दिलि ऐं दिलि में दर्द, दांहं बांदि छो कयइ?

सुवालु 4. हेठियनि लफ़्ज़नि जा ज़िद लिखो :-

बहार, फ़लक, प्यार, शोर, बणाइणु।



माण्हू मुंहिंजे मुल्क जा

— कृष्ण ‘राही’

कवि परिचय-

(1932 ई. - 2007 ई.)

कृष्ण सुंदरदास वडाणी ‘राही’ पुढळो शाइरु ऐं सुठो कहाणीनवीसु आहे। ‘लुडिक ऐं मुर्क’ हुनजे आखाणियुनि जो मजमुओ आहे ऐं कुमाच (1969) संदसि शाइर जो मजमुओ आहे। कुमाच ते खेसि साहित्य अकादमी अवार्डु (1971) मिली चुको आहे।

गोठाणा सुभाव जा सब्बाज्ञा ऐं तन जा तंदुरुस्त थींदा आहिनि। संदनि जीवत संतोष आनंद सां पुरि हूंदी आहे। कवीअ इन जो बयानु हिति सुहिणे नमूने कयो आहे।

-
- 1- मुंहुं मलूकु मुश्कनि, खिली कनि खीकार,
संग ऐं सुलूक जा, सूंहारा सरदार,
दर्वेशी दीदार, माण्हू मुंहिंजे मुल्क जा ।
 - 2- मर्द महिनती थियनि, उदम जा अग्रिगा,
तननि तवाना तकिडा, जिस्मनि जा जबिरा,
परियां थियनि पथिरा, माण्हू मुंहिंजे मुल्क जा ।
 - 3- किल्ह कनि न कड्हिं, काण्यारा न कर्हिंजा,
हेठांहां हलीम, संगति जा सहिंजा,
परावनि खे कनि पर्हिंजा, माण्हू मुंहिंजे मुल्क जा ।
 - 4- कोसी थधी सिर ते, सब्र साणु सहनि,
औखी अहिंजु न भाईनि, डुखनि खां न डरनि,
मुश्किलि में मुर्कनि, माण्हू मुंहिंजे मुल्क जा ।
 - 5- असुर डुई उथनि, लाखीणा से लोक,
सुर सां पोइ साधिनि, सामीअ जा सिलोक,
असुल खां अशोक, माण्हू मुंहिंजे मुल्क जा ।

- 6- ਮੰਝਾਦਿ ਸਹਿਲ ਸੁਲਕ ਮੇਂ ਤਪਤਿ ਥਿਏ ਆਮ,
ਘਰਨਿ ਜਾ ਦਰ ਬੁਟਿਜਨਿ, ਝਲਵੁੰ ਹਲਨਿ ਜਾਮ,
ਅਚੀ ਕਨਿ ਆਰਾਸੁ, ਮਾਣ੍ਹ ਸੁਹਿੰਜੇ ਸੁਲਕ ਜਾ ।
- 7- ਸਿਜ ਲਥੇ ਪਟ ਠਰੇ, ਸਾਜ਼ਨਿ ਖੁਲਨਿ ਸ੍ਰੂਂਹਾਂ,
ਕਠਾ ਥੀ ਕਾਫ਼ਾਗਾਰ, ਸਾਂਝੁਨਿ ਛਿਧਨਿ ਸ੍ਰੂਂਹਾਂ,
ਵੇਹੀ ਕਨਿ ਵਿਰੂਂਹ, ਮਾਣ੍ਹ ਸੁਹਿੰਜੇ ਸੁਲਕ ਜਾ ।
- 8- ਥਥੀਅ ਰਾਤਿ ਥਕੁ ਭਯੀ, ਡੁਖਣੁ ਖੋਲੇ ਵਾਤ,
ਹੀਰ ਹਥਾਂ ਹਰ ਹੰਧਿ, ਅਚੇ ਪਾਂ ਪਰਿਲਾਉ,
ਗਾਇਨਿ ਕੇਠਾ ਸ਼ਾਹੁ, ਮਾਣ੍ਹ ਸੁਹਿੰਜੇ ਸੁਲਕ ਜਾ ।

ਨਵਾਂ ਲਫ਼ਜ਼ਾਂ :

ਮਲੂਕ = ਖੂਬਸੂਰਤ	ਖੀਕਾਰ = ਸ਼ਵਾਗਤ	ਸਲੂਕੁ = ਵਹਿਵਾਰੁ
ਸ੍ਰੂਂਹਾਰੋ = ਸੁਹਿਣੋ, ਸੁਂਦਰ	ਦੀਦਾਰੁ = ਦਰਸ਼ਨ	ਉਦਮੁ = ਮਹਿਨਤ
ਤਵਾਨੋ = ਤਾਜ਼ਗੀਅ ਭਯੋ	ਜਿਸਮੁ = ਸਰੀਰੁ	ਜਬਿਰੋ = ਮਜ਼ਬੂਤੁ
ਕਾਣਧਾਰੋ = ਬੁਰੋ ਚਾਹੀਂਦੁ	ਹੇਠਾਹੋਂ = ਨਿਮਾਣੋ	ਹਲੀਮੁ = ਸਹਨਸ਼ੀਲੁ
ਸਹਿੰਜੋ = ਸਕਲੋ, ਸਿਧੋ	ਕੋਸੀ ਥਥੀ = ਦੁਖੁ ਸੁਖੁ	ਸਭੁ = ਧੀਰਜੁ
ਔਖੀ = ਡੁਖਾਈ, ਮੁਖਿਕਲਾਤ	ਅਹਿੰਜੁ = ਡੁਖਿਧੀ	ਮੁਕੰਣੁ = ਮੁਸ਼ਕਰਾਇਣੁ
ਲਾਖੀਣੋ = ਲਖਨਿ ਮੇਂ ਹਿਕੁ, ਤਮਾਸੁ ਸੁਤੋ ਸ਼ਾਖਸੁ		
ਕਾਫ਼ਾਰੁ = ਕਾਫੀ ਰਾਗੁ ਗ੍ਰਾਈਂਦੁ	ਹੀਰ = ਸੀਤਲ ਹਵਾ	ਪਰਿਲਾਉ = ਆਵਾਜੁ

ਇਸ਼ਟਿਲਾਹਾਂ :

ਪਰਾਵਾ ਪੱਹਿੰਜਾ ਕਰਣੁ = ਪਰਾਵਨਿ ਜੀ ਦਿਲਿ ਜੀਤਣੁ
ਵਿਰੂਂਹ ਕਰਣੁ = ਮਨੁ ਵਿੰਦੁਰਾਇਣੁ
ਥਕੁ ਭਯਣੁ = ਆਰਾਸੁ ਕਰਣੁ

❖ અભ્યાસ ❖

સુવાલુ 1. હેઠિયનિ જા હવાલા ડેઈ સમુજ્ઞાયો :–

- (1) તનનિ તવાના તકિડા, જિસ્મનિ જા જબિરા,
પર્યા થિયનિ પધિરા, માણ્હ મુહિંજે મુલ્ક જા ।
- (2) ઔંખી અહિંજુ ન ભાઈનિ, ડુખનિ ખાં ન ડુરનિ,
મુશ્કલિ મેં મુર્કનિ, માણ્હ મુહિંજે મુલ્ક જા ।

સુવાલુ 2. હેઠિયનિ સુવાલનિ જા જવાબ લિખો :–

- (1) અસાંજે મુલ્ક જે માણ્હનિ જો સુભાડ કીઅં આહે?
- (2) અસુર જે વક્તિ હૂ કહેંજા સિલોક ગ્રાઇનિ થા?
- (3) મંજુંદિ જે વક્તિ હૂ છા થા કનિ?
- (4) સાંજીઅ જો વક્તુ હૂ કીઅં થા ગુજારીનિ?
- (5) રાતિ જે વક્તિ હૂ કહેંજા ગીત થા ગ્રાઇનિ?

સુવાલુ 3. જિદ લિખો :-

મહિનતી, જબિરો, હલીમુ, કોસો ।

સુવાલુ 4. હેઠિયાં ઇસ્તલાહ જુમિલનિ મેં કમુ આણિયો :–

- (1) પરાવા પહિંજા કરરણુ
- (2) વિસ્ફુંહ કરરણુ
- (3) થકુ ભજણુ

સુવાલુ 5. ‘સિંધી ગોઠાણી જીવતિ’ વિષય તે અટિકલ 15 સિટૂં લિખો।



ए दाता

— ढोलण ‘राही’

कवि परिचय-

ढोलण ‘राहीअ’ जो जनमु 6 जुलाई 1949 ई. में अजमेर शहर में थियो। ढोलण ‘राही’ पेशे सां अध्यापक थी रहिया। उन्हनि खे शाइर ऐं शाइरीअ जी बखूबी ज्ञान आहे। ढोलण ‘राहीअ’ पहिंजी शाइरीअ में लफ़्ज़नि जी अहिडी चूंड कई आहे, जर्हिं में सादगी आहे, गहराई आहे। ढोलण ‘राही’ हिकु सुठो गायक कलाकार बि आहे। रेडियो स्टेशन ते ग्राए, गीतनि खे लोकप्रिय बणायो आहे। जिनि में मधुरता बि आहे ऐं सहजता बि आहे। संदसि शाइरनि जा केतिरा मजमूआ शाया थी चुका आहिनि ऐं टी-सीरीज़ पारां सिंधी गीतनि जूं कैसेटिस बि निकिरी चुकियूं आहिनि। खेसि संदसि रचना ‘अंधेरो रोशन थिए’ ते मर्कजी साहित्य अकादमी पारां इनाम अता थी चुको अथसि।

असां खे एकता ऐं प्रेम जो डे दानु ए दाता !
बणे हर देशवासी नेकु दिल इंसान ए दाता ।

- 1- गुलनि वांगुरु असीं हिन देश जे गुलशन खे महिकायूं,
असीं शल ज्ञान ऐं विज्ञान सां भारत खे ब्रहिकायूं,
रखीं कायमु असांजो शाल कौमी शानु ए दाता ।
- 2- अहिंसा डे त वीरनि जी, सहन शक्ति सुधीरनि जी,
रगुनि में जोश ऐं जुंबश तिखनि ऐं तेज़ तीरनि जी,
वतन ते जान भी पहिंजी करियूं कुर्बान ए दाता ।
- 3- असां जे देश जो दामनु भरी महनत जे मोतियुनि सां,
जगृत में हिन्द जो नालो सदा जरकाए जोतियुनि सां,
रसाइज औज अज़मत ते, तूं हिन्दुस्तान ए दाता ।
- 4- लही वियो ड्राति जो सूरज, न उभिरियो छो अजां ताई?
खिजाऊं थियूं तकनि रस्तो बहारनि जो अजां ताई,
खियालनि जा परंदा पिया उडामनि ज़हन जे उभ में,
छाटियम लफ़्ज़नि जा दाणा, पर न आयो को अजां ताई ।

नवां लफ़्ज़ :

जुंबश = लरजिश	दामनु = झोली	जरकाए = चमकाए
अज़मत = इज़ज़त, शानु	डाति = सौग़ात	ख़िज़ाऊं = पतझड़
परंदा = पछी	ज़हन = दिमाग़	

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हवाला डेर्डे समुझायो :-

- (1) असीं शल ज्ञान ऐं विज्ञान सां भारत खे ब्रह्मिकायूं ।
- (2) जगत में हिन्द जो नालो सदा जरकाए जोतियुनि सां ।

सुवालु 2. हेठियनि सुवालनि जा जवाब लिखो :-

- (1) भारतवासी दाता खां कहिडो दान थो घुरे?
- (2) 'ए दाता !' कविता जो सारु लिखो।
- (3) पर्हिंजे देश जो दामनु छा सां भरण जी ख़वाहिश (प्रार्थना) कई वेई आहे?



पैसे ऐं रुपए जी गुफ़तगू

— शालिनी ‘सागर’

कवयित्री परिचय-

श्रीमती शालिनी ‘सागर’ जो जन्म 22 फरवरी 1953 ई. ते मुम्बईअ में थियो। हुन आकाशवाणी दिल्लीअ जे सिंधी प्रसारण विभाग मां रिटायर कयो आहे। संदसि कहाणी-संग्रह ‘तन्हाई’ ऐं कविता संग्रह ‘होसलो’ नाले सां किताब छपियल अर्थसि। सिंधी साहित्य में वक्त-बि-वक्त कविताऊं, बाल कथाऊं, कहाणीयूं लिखांदी रहंदी आहे।

नंडिडे पैसे चयो रुपए खे
अदा हीउ कहिडे ज़मानो आयो आ
महंगाईअ जे दौर में
डिसु रंग नाणे जा
अगु हो जीहं गोल पैसे में टुंगु
हुयो उन जो बि मुल्हु घणो
पर अजु इंसानु भजी भजी
उन ख़ाल खे बि वियो आ भरीदो
पर उन जो भिभु आ जो भरिजे ई नथो
पैसे चयो अदा !
हीउ कहिडे ज़मानो आयो आ
अगु में हिकु अकेलो ई काफ़ी हुयुसि
जो अगु हो टके पैसे जो बि मुल्हु
पर क़दुरु न आहे अजु रुपए जो
पैसे चयो को वक्तु हो जो
हिक रुपए में हुआ फ़क़ति आना सोरहां

बदिलिजी वियो आ रंगु रूपु रुपए जो
सोरहनि मां बदिलिजी थिया
पूरा हिकु सौ पैसा
पोइ बि आहीं एडो मुहिताजु छो?
छा त हो शानु पैसे आने जो
पाई, पैसे टके पावलीअ जो बि
भले ई आहीं तूं पूरो हिकु सौ
त बि न अथेई को मुल्हु तुंहिंजो
पुछु पहिंजी नानी डाडीअ खां
नंदे पैसे में ख़ाल हूंदे बि
हुयो केडो मुल्हु मुहिंजो
अजु इंसान भजी भजी करे
भरियो आ उन ख़ाल खे
पर उहो भरियल हूंदे ख़ाली आ
ऐं करे राहियो आहे
इंसान जे खीसे में टुंगु

नवां लफऱ्ज़ :

नाणो = पैसो

भिभु = पेट

आना = छः पैसा

पावली = 25 पैसा

खीसो = जेब

❖ अभ्यास ❖

सुवालु 1. हेठियनि सुवालनि जा जवाब ड़ियो :-

- (1) नंदिडे पैसे रुपए खे छा चयो?
- (2) पहिरीं वारे रुपए ऐं हाणे जे रुपए में कहिडो तफ़ावतु आहे?
- (3) नढे पैसे में खाल हूंदे बि उन जो केडो मुल्हु हो? खोले लिखो।
- (4) इंसान जे खीसे में टुंगु छो आहे?
- (5) पैसे ऐं रुपए जी गुफ्तगू पंहिंजनि लफऱ्ज़नि में लिखो।
- (6) हिन कविता मार्फत कवियित्री शालिनी ‘सागर’ रुपए पैसे ते कहिडा वीचार पेश कया आहिनि?

सुवालु 2. हेठियुनि सिटुनि जो मतिलबु समुझायो :-

अजु इंसान भजी भजी करे
भरियो आ उन ख़ाल खे
पर उहो भरियल हूंदे ख़ाली आ
ऐं करे रहियो आहे
इंसान जे खीसे में टुंगु

